नई दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, झारखंड, उड़ीसा, बिहार से प्रसारित

सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2)
Press/2023

परिवहन विशेष

www.newsparivahan.com

वर्ष 03, अंक 321, नई दिल्ली, मंगलवार 20 जनवरी 2026, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

जिस इंसान के पास आशा होती है, वह कभी पराजित नहीं होता है!

02 मोबाइल एडिक्शन: एक गंभीर मानसिक समस्या
06 आयुक्त दिल्ली परिवहन विभाग की शक्तियां क्या सर्वोच्च न्यायालय...
08 डॉ. अवतार सिंह ने मुफ्त जोड़ बदलने के उपराले की शुरुआत की

दिल्ली परिवहन आयुक्त की मनमानी:

क्या संविधान और सर्वोच्च न्यायालय से ऊपर हैं उनकी शक्तियां ?

आयुक्त दिल्ली परिवहन जवाबदेह हो --- संविधान सर्वोपरि

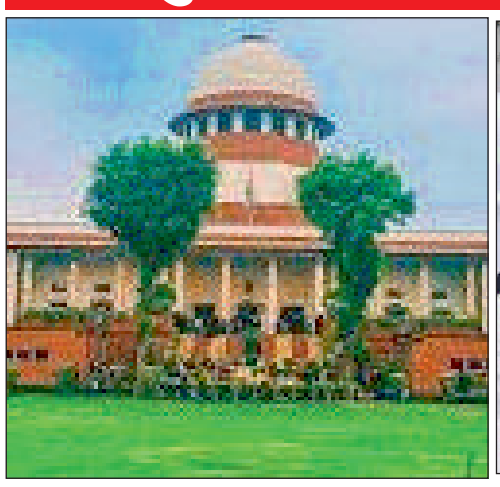

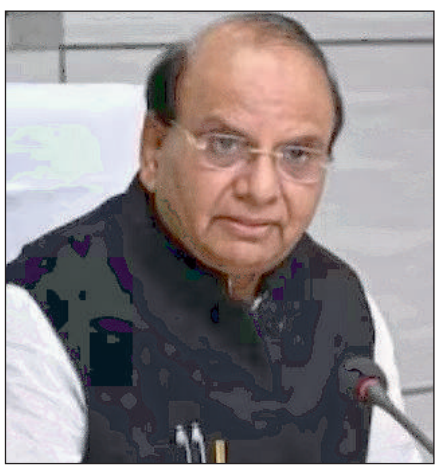

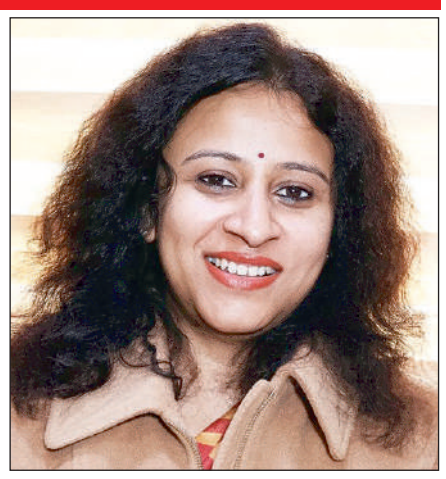

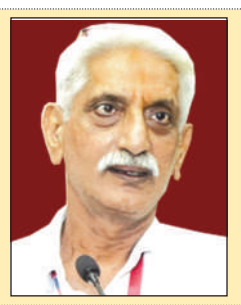

लेखक:- संजय कुमार बाठला

परिवहन नीति और सार्वजनिक हित मामलों पर विशेषज्ञ पत्रकार। पिछले एक दशक से सड़क सुरक्षा, स्वच्छ परिवहन और तकनीकी नवाचार से जुड़ी नीतियों पर गहन विश्लेषण और रिपोर्टिंग करते हैं।

दिल्ली परिवहन आयुक्त के आदेश अब सर्वोच्च न्यायालय के फैसलों, सड़क परिवहन मंत्रालय की राजपत्रित अधिसूचनाओं, उच्च न्यायालय के निर्देशों, उपराज्यपाल और दिल्ली सरकार की गाइडलाइंस को ठेंगा दिखा रहे हैं।

आयुक्त जो चाहें, वही नियम बना रहे हैं –

* चाहे वह ई-रिक्शा पंजीकरण हो,
* वाहन फिटनेस हो या
* तकनीकी पदों पर नियुक्तियां।

न कोई जांच, न कार्रवाई।

सवाल वही: क्या आयुक्त की शक्तियां भारत के संविधान से भी बड़ी हो गई?

संवैधानिक शक्ति-क्रम का उल्लंघन * भारतीय संविधान सर्वोपरि है;

* अनुच्छेद 141 के तहत सर्वोच्च न्यायालय के फैसले पूरे देश में सभी अधिकारियों पर बाध्यकारी हैं।

* अनुच्छेद 144 स्पष्ट कहता है कि सभी सरकारी प्राधिकारी न्यायालय की सहायता करेंगे।

* दिल्ली मोटर वाहन नियम 1993 और दिल्ली रोड ट्रांसपोर्ट अथॉरिटी एक्ट 1950 के तहत आयुक्त को प्रशासनिक अधिकार हैं, लेकिन ये मोटर वाहन अधिनियम, केंद्र की अधिसूचनाओं और न्यायिक आदेशों के अधीन हैं।

* आयुक्त का कोई "ऑर्डर" इन उच्च स्रोतों को ओवरराइड नहीं कर सकता — ऐसा करना न्यायालय की अवमानना और मनमाना शासन है।

उच्च संस्थाओं के निर्देशों की अनदेखी के उदाहरण

1. सर्वोच्च न्यायालय: MC मेहता मामले या प्रदूषण/ट्रैफिक कैप्स (जैसे 1 लाख TSR) पर आदेशों की अवहेलना।

2. MoRTH अधिसूचनाएं: ई-रिक्शा पंजीकरण पर S.O. 2812(E) जैसी गजट नोटिफिकेशंस नजरअंदाज।

3. उच्च न्यायालय/उपराज्यपाल: दिल्ली HC के ई-रिक्शा प्रतिबंधों या LG के परमिट निर्देशों का उल्लंघन।

ये सभी अनुच्छेद 14 (समानता), 21 (जीवन का अधिकार) का सीधा उल्लंघन हैं, क्योंकि असुरक्षित वाहन/नीतियां जनता की जान जोखिम में डाल रही हैं।

क्यों चुप है सिस्टम? जनहित में अपील गृह मंत्रालय, MoRTH, मुख्य सचिव — कोई बोलने को तैयार नहीं।

*** यह प्रशासनिक लापरवाही नहीं,** संवैधानिक संकट है।

*** अनुच्छेद 226 के तहत दिल्ली HC में रिट याचिका दायर हो:** आयुक्त के कन्ट्रेरी आदेश शून्य घोषित हों, अवमानना कार्यवाही हो, और अनुपालन सुनिश्चित करने वाले निर्देश जारी हों।

*** जनता, मीडिया और नीति-निर्माताओं से अपील:** जागें, RTI दाखिल करें, PIL लाएं—वरना आयुक्त का "पसंदीदा कानून" सड़कों पर मौत का तांडव जारी रखेगा।

#परिवहनआयुक्त_जवाबदेह_हो
#संविधान_सर्वोपरि

सड़क सुरक्षा जीवन रक्षा माह के अंतर्गत निकल जाएगी जागरूकता रैली

परिवहन विशेष न्यूज उत्तर प्रदेश सरकार और परिवहन विभाग द्वारा आयोजित सड़क सुरक्षा जीवन रक्षा माह के अंतर्गत परिवहन विभाग मथुरा व यातायात पुलिस के संयुक्त तत्वाधान में कल दिनांक 20 जनवरी 2026 को सुबह 10:30 बजे जैन इंटर कॉलेज मथुरा के छात्रों के साथ यातायात नियमों के प्रति जन जागरूकता रैली निकल जाएगी। यातायात पुलिस निरीक्षक शौर्य कुमार अतिथि के रूप में शामिल होंगे। इस रैली का शुभारंभ एआरटीओ परिवर्तन सत्येंद्र कुमार सिंह करेंगे। जैन इंटर कॉलेज के प्रधानाचार्य निखिल अग्रवाल ने सभी छात्रों से रैली में भाग लेने की अपील की है। यह जानकारी ब्रज यातायात एवं पर्यावरण जन जागरूकता समिति रजि उत्तर प्रदेश संस्थापक अध्यक्ष विनोद दीक्षित ने दी है।

परिवहन विशेष जनहित विशेष कॉलम

आठ साल की उम्र में 'पैड' संभालती बेटियां, तरक़्क़ी या अंत?

छोटी छोटी बच्चियों को पीरियड्स ! कौन जिम्मेदार

पिंकी कुंडू

माँ-बाप अपनी आठ साला बेटी को लेकर परेशान, जिस उम्र में बच्ची के एक हाथ में उसकी पसंदीदा गुड़िया हैं दूसरी तरफ़ माँ की आँखों में आँसू।

शिकायत क्या हैं? "डॉक्टर साहब, इसे माहवारी (Periods) शुरू हो गई है।" यह जानकर आपका भी दिल दहल गया ना?

* जिस उम्र में बच्चियों को रस्सी कूदनी चाहिए, उस उम्र में इन नन्हे पंछियों को सैनिटरी पैड्ज़ और पेट के दर्द संभालने पड़ रहे हैं।

बच्चियां मां से पूछती नजर आ रही है की मुझे ख़ून क्यों आ रहा है?" 8, 9 साल की बच्ची का ये सवाल सुनकर उस माँ का कलेजा फट गया और एक डॉक्टर का दिमाग़ सुन्न हो गया।

क्या यह बचपन छीन लेना नहीं तो और क्या है? हम अपने बच्चों को पाल नहीं रहे, हम उन्हें फुला रहे हैं।

* जिस तरह पोल्ट्री फ़ार्म में इंजेक्शन देकर 40 दिन में 'ब्रायलर मुर्ग़ी' तैयार की जाती है, कुछ वैसी ही हालत आज हमने अपनी औलाद की कर दी है। यह मज़ा नहीं, जिस्म की सूजन है!

इसका ज़िम्मेदार कौन है? हमारी 'मॉडर्न' लाइफ़ स्टाइल, पसंद और सोच!

देखें हम सीधे तौर पर उनकी ज़िंदगी से कैसे खेल रहे हैं:

* 500 रुपये का पीज़ा या ज़िंदगी की का अंत?

* वीक एंड पर मॉल में 500 - 800 रुपये का पीज़ा/बर्गर खाते हुए आप तस्वीर खींचकर इंस्टाग्राम पर डालते हैं, "फ़ैमिली टाइम!"

*** जानिए अरे, यह फ़ैमिली टाइम नहीं,** ये आपके बच्चों की सेहत की बर्बादी है! रबड़ जैसे मैदे और प्रोसेस्ड चीज़ का ये खाना हार्मोन खत्म करने की फ़ैक्ट्री है।

* जिस्म में जितनी ज़्यादा चर्बी, उतना ही ज़्यादा एस्ट्रोजन बनता है और यही ज्यादा हार्मोन, जो उस 8 साला बच्ची के नाज़ुक दिमाग़ को संदेश देता है: **"बच्ची, तुम्हारा बचपन ख़त्म, अब तुम औरत हो!"**

गर्म खाने के लिए प्लास्टिक का डब्बा? स्टील का डब्बा भारी लगता है और प्लास्टिक का फ़ैंसी, इसलिए वही बच्चों को दे रहे हो?

प्लास्टिक के डब्बे में जब आप भाप उड़ाती गर्म सब्ज़ी रखते हैं तो इसमें मौजूद ज़ेनो-एस्ट्रोजन्ज़ (Xenoestrogens) खाने में शामिल हो जाते हैं। यह केमिकल जिस्म में जाकर बहरूपिए की तरह काम करते हैं। **जिस्म को लगता है कि यह एस्ट्रोजन है और जिस्म समय से पहले बालिग़ होने लगता है।**

आपकी 'फ़ैंसी' आदत ने क़ुदरती घड़ी ही बिगाड़ दी है!

1. दूध-चिकन या 'हार्मोनल बम'?

"डॉक्टर, बच्ची बहुत दुबली है, नॉन-वेज दें? दूध कितना पिलाएँ?"

* खिलाएँ ज़रूर, मगर बाज़ार का वो 40 दिन में फूला हुआ ब्रायलर चिकन और थैली का 'केमियाई' दूध देते वक्त सौ बार सोचें।

*** चिकन:** मुर्ग़ी को जल्दी बड़ा करने के लिए ग्रोथ हार्मोन्ज़ के भारी डोज़ दिए जाते हैं। वही हार्मोन बच्ची के पेट में जाते हैं। इसी लिए आजकल चौथी जमाअत की बच्चियों के होंटों पर बाल आ रहे हैं। यह PCOD की पहली अलामत है!

*** दूध:** गाय-भैंस को ज़्यादा दूध के लिए दिए गए ऑक्सीटोसिन के इंजेक्शन दूध के ज़रीए आपकी बच्ची के नन्हे से रहम को "बड़ा होने" के ग़लत सिग्नल देते हैं।

* जिन चीज़ों को आप 'प्रोटीन' समझकर खिला रहे हैं, वो दरअस्ल हार्मोनल बम हैं!

सब से ख़ौफ़नाक हक़ीक़त: इस उम्र में माहवारी शुरू हो जाए तो हड्डियाँ जल्दी जुड़ जाती हैं और क़द हमेशा के लिए रुक जाता है।

इसे रोकने के लिए फिर क्या करना पड़ता है? "हार्मोन सप्रेशन थेरेपी!"

ज़रा प्रतिक्षा करें उस 8 साला नाज़ुक फूल को, अपनी माहवारी रोकने के लिए अगले 3-4 साल तक हर महीने एक तकलीफ़ देह, मोटे इंजेक्शन की सुई लगवानी पड़ेगी!

आपकी लाड़ली बेटी हर महीने उस सुई के ख़ौफ़ से काँपेगी, और आप बेबस होकर ये सब देखेंगे।

सोचिए 10 साल बाद जब वो आपसे पूछेगी: "मां, तब क्यों ध्यान नहीं दिया? **क्या वो पीज़ा-बर्गर मेरी ज़िंदगी से ज़्यादा अहम थे?"** तो आपके पास क्या जवाब होगा? अभी भी वक्त हाथ से नहीं निकला... सुधर जाओ!

1. किचन से 'सफ़ेद ज़हर' (मैदा, चीनी) बाहर फेंक दें।
2. प्लास्टिक के डब्बों को आग लगा दें: सिर्फ़ स्टील इस्तेमाल करें।
3. बच्चों को 'ब्रायलर' न बनाएँ: उन्हें मिट्टी में खेलने दें, धूप में दौड़ने दें।
4. लाड़-प्यार का मतलब ज़हर खिलाना नहीं, ये फालतू के काम अब बंद करें!

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत

https://tolwa.com/about.html | tolwaindia@gmail.com, tolwadelhi@gmail.com

आज का साइबर सुरक्षा विचार
म्यूल अकाउंट्स: प्रणालीगत उल्लंघन का नतीजा

पिंकी कुंडू

समाचार संदर्भ CBI ने ₹1,621 करोड़ साइबरक्राइम मनी लॉन्ड्रिंग केस में पंजाब एंड सिंध बैंक अधिकारियों पर दर्ज की FIRs

1. मामला

* दुरुपयोग का पैमाना: ₹1,621 करोड़ से अधिक राशि की मनीलौन्ड्रेरिंग 13 म्यूल अकाउंट्स के माध्यम से की गई, जो नकली KYC दस्तावेज़ों और फर्जी व्यावसायिक रिकॉर्ड से खोले गए थे।

* प्रणालीगत उल्लंघन: वरिष्ठ बैंक अधिकारियों की मिलीभगत से ड्यू डिलिजेंस, साइट वेरिफिकेशन और SOPs को दरकिनार किया गया।

*** प्रभाव:**

1. पंजाब एंड सिंध बैंक को गंभीर प्रतिष्ठात्मक हानि।

2. नियामक दंड और वित्तीय जोखिम का सामना।

3. साइबर अपराध पारिस्थितिकी तंत्र को मज़बूत करना।

2. साइबर सुरक्षा आयाम

*** म्यूल अकाउंट्स: साइबर अपराध का आधार:-**

* म्यूल अकाउंट्स अलग-थलग धोखाधड़ी नहीं हैं; ये महत्वपूर्ण साधन हैं जिनसे फ़िशिंग, रैनसमवेयर और ऑनलाइन घोटाले पनपते हैं।

* ये अपराधियों को गुमनामी प्रदान करते हैं और उन्हें ग़ैरकानूनी धन को स्थानांतरित और छिपाने में सक्षम बनाते हैं।

*** इनसाइडर थ्रेट्स**

* यह मामला दिखाता है कि अंदरूनी खतरे कितने गंभीर हो सकते हैं।

* भरोसेमंद कर्मचारी जब बाहरी अपराधियों से मिल जाते हैं तो पूरी प्रणाली असुरक्षित हो जाती है।

*** डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म्स का गुणक प्रभाव**

* कई बैंकिंग चैनलों और डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म्स के माध्यम से

लेन-देन यह दर्शाता है कि साइबर अपराध डिजिटल वित्त की गति और पैमाने का लाभ उठाता है।

* मज़बूत निगरानी के बिना, अवैध धन कुछ ही सेकंड में सीमाओं के पार जा सकता है।

3. संस्थानों के लिए रणनीतिक सबक • KYC और सत्यापन को मज़बूत करें

* केवल कागज़ी जाँच पर निर्भर न रहें; AI आधारित दस्तावेज़ सत्यापन और बायोमेट्रिक प्रमाणीकरण अपनाएँ।

* उच्च-मूल्य खातों के लिए स्वतंत्र तृतीय-पक्ष साइट विज़िट अनिवार्य करें।

*** निरंतर निगरानी**

* लेन-देन विसंगति पहचान प्रणाली लागू करें।

* राष्ट्रीय साइबर अपराध पोर्टल्स से वास्तविक समय में सूचना साझा करें।

*** इनसाइडर जोखिम प्रबंधन**

* संवेदनशील भूमिकाओं का नियमित रोटेशन करें।

* कर्मचारियों के व्यवहारिक पैटर्न की निगरानी करें।

*** जवाबदेही की संस्कृति**

* साइबर सुरक्षा केवल तकनीकी नहीं है—यह संस्थागत संस्कृति है।

* SOPs को दरकिनार करना शॉर्टकट नहीं बल्कि प्रणालीगत पतन का द्वार है।

4. व्यापक साइबर सुरक्षा विचार यह मामला याद दिलाता है कि साइबर अपराध कमजोर संस्थागत नियंत्रणों पर फलता-फूलता है।

* बैंकों के लिए: हर म्यूल अकाउंट साइबर अपराध की सप्लाई चेन का एक नोड है।

* नियामकों के लिए: केवल दंड नहीं, बल्कि प्रणालीगत सुधार ज़रूरी हैं।

* नागरिकों के लिए: पहचान दस्तावेज़ साझा करते समय सतर्क रहें, क्योंकि उनका दुरुपयोग कर म्यूल अकाउंट खोले जा सकते हैं।

5. अंतिम विचार साइबर सुरक्षा केवल तकनीकी नहीं है — यह विश्वास, सत्यापन और जवाबदेही पर आधारित है।

जब संस्थाएँ इन मूल्यों को बनाए रखने में विफल होती हैं, तो वे केवल धन नहीं खोतीं; वे साइबर अपराध पारिस्थितिकी तंत्र को मज़बूत करने में सहभागी बन जाती हैं।

साइबर ठगों ने जस्टिस सतीश चंद्र शर्मा को भी निशाना बनाने की कोशिश की

पिंकी कुंडू

सुप्रीम कोर्ट के जस्टिस सतीश चंद्र शर्मा ने शुक्रवार (16 जनवरी 2026) को एक सुनवाई के दौरान खुलासा किया कि साइबर ठगों ने उन्हें भी निशाना बनाने की कोशिश की।

जस्टिस शर्मा को मोबाइल पर एक ट्रैफिक चालान का मैसेज मिला था, जिसके साथ एक लिंक भी था।

लिंक पर क्लिक करते ही हूबहू सरकारी पोर्टल जैसी दिखने वाली एक फर्जी वेबसाइट खुल गई।

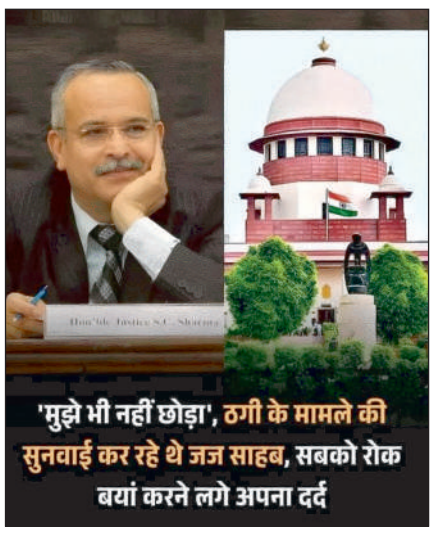

हालांकि, जस्टिस शर्मा ने समय रहते इस धोखे को पहचान लिया और किसी भी तरह की जानकारी साझा करने से बच गए।

जस्टिस शर्मा ने यह घटना तब साझा की जब वह पुलिस अधिकारियों को फंसाने की साजिश रचने वाले एक आरोपी की जमानत याचिका पर सुनवाई कर रहे थे। कोर्ट ने मामले की गंभीरता को देखते हुए आरोपी को जमानत देने से इनकार कर दिया। जस्टिस शर्मा ने चिंता जताते हुए कहा कि जब जज सुरक्षित नहीं हैं, तो आम जनता के लिए खतरा कितना बड़ा है।

उन्होंने नागरिकों को सलाह दी कि वे किसी भी अनजान लिंक पर क्लिक न करें और चालान चेक करने के लिए केवल सरकारी वेबसाइट का ही उपयोग करें।

स्वास्थ्य विशेष

स्वास्थ्य आपका कोशिश हमारी

मोबाइल एडिक्शनः एक गंभीर मानसिक समस्या

पूजा
(मानसिक स्वास्थ्य विद्यालय परामर्शदाता)

आज के लेख में हम बात करेंगे मनुष्य के जीवन को सबसे अधिक प्रभावित करने वाली मोबाइल एडिक्शन की समस्या किन कारणों से होती है इसका उपाय है और कैसे इस समस्या कंट्रोल किया जाए।

मेंटल हेल्थ और स्कूल काउंसलर पूजा अपने कुछ विचार साझा करने जा रही हैं।

आज का युग डिजिटल युग कहलाता है। मोबाइल फोन ने हमारे जीवन को बहुत आसान बना दिया है। पढ़ाई, व्यापार, मनोरंजन, संचार और जानकारी प्राप्त करने में मोबाइल की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण हो गई है। लेकिन आवश्यकता से अधिक मोबाइल का उपयोग एक गंभीर समस्या बन चुका है, जिसे मोबाइल एडिक्शन या मोबाइल की लत कहा जाता है।

मोबाइल एडिक्शन का अर्थ है मोबाइल फोन का अत्यधिक और अनियंत्रित उपयोग करना। जब व्यक्ति बिना मोबाइल के बेचैन महसूस करता है और हर समय स्क्रीन पर ही ध्यान केंद्रित रहता है, तो यह लत का संकेत होता है। आज बच्चे, युवा और यहां तक कि बुजुर्ग भी इस समस्या से प्रभावित हो रहे हैं।

मोबाइल की लत के कई कारण हैं। सोशल मीडिया, ऑनलाइन गेम्स, वीडियो, रील्स और चैटिंग ऐप्स लोगों को घंटों तक मोबाइल से जोड़े रखते हैं। इसके अलावा अकेलापन, तनाव और मनोरंजन के सीमित साधन भी मोबाइल एडिक्शन को बढ़ावा देते हैं।

मोबाइल एडिक्शन के दुष्प्रभाव बहुत गंभीर हैं। इससे आंखों की रोशनी कमजोर हो सकती है, सिरदर्द, नींद की कमी और मानसिक तनाव जैसी समस्याएं उत्पन्न होती हैं। बच्चों की पढ़ाई पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है और उनका ध्यान भटकने लगता है। पारिवारिक और सामाजिक संबंध भी कमजोर हो जाते हैं क्योंकि लोग अपनों से बात करने के बजाय मोबाइल में व्यस्त रहते हैं।

इस समस्या से बचने के लिए हमें मोबाइल का संतुलित उपयोग करना चाहिए। दिनचर्या में मोबाइल के लिए समय सीमा तय करनी चाहिए। खाली समय में खेलकूद, पढ़ाई, योग और परिवार के साथ समय बिताना चाहिए। बच्चों के मोबाइल उपयोग पर माता-पिता को विशेष ध्यान देना चाहिए और उन्हें सही मार्गदर्शन देना चाहिए।

अंत में, यह कहा जा सकता है कि मोबाइल हमारे जीवन का उपयोगी साधन है, लेकिन इसका अत्यधिक उपयोग हमारे स्वास्थ्य और भविष्य के लिए हानिकारक है। इसलिए हमें मोबाइल का उपयोग समझदारी और आवश्यकता के अनुसार करना चाहिए, ताकि हम एक स्वस्थ और संतुलित जीवन जी सकें।

आंवला–चुकंदर मुखवास (Healthy Mouth Freshener I After Meal Digestive)

पिंकी कुंडू

यह एक हेल्दी और प्राकृतिक आफ्टर मील डाइजेस्टिव है, जो दो पोषक तत्वों से भरपूर चीज़ों – आंवला और चुकंदर से बनाया जाता है।

सामग्री (Ingredients)

* आंवला – 12 नग
* चुकंदर – 1 बड़ा
* सौंफ – 2 छोटे चम्मच (भुनी हुई)
* अजवाइन – 1 छोटा चम्मच (भुनी हुई)
* अदरक का रस – 1 टेबलस्पून
* काला नमक – 1 छोटा चम्मच
* पिसी हुई चीनी – 2 टेबलस्पून

बनाने की विधि (Instructions)

1. आंवला तैयार करें आंवले धोकर कद्दूकस कर लें। बीज निकालकर फेंक दें।
2. चुकंदर तैयार करें चुकंदर को धोकर छील लें और कद्दूकस कर लें।
3. मसाला तैयार करें भुनी हुई सौंफ और अजवाइन को दरदरा पीस लें।
4. मिक्स करें एक बड़े बर्तन में कद्दूकस किया आंवला, चुकंदर, अदरक का रस, सौंफ–अजवाइन पाउडर, काला नमक और पिसी हुई चीनी डालें। अच्छी तरह मिलाएँ।
5. सुखाने की प्रक्रिया इस मिश्रण को एक प्लेट में पतला फैलाएँ।

* प्लेट को घर के अंदर ऐसी जगह रखें जहाँ हल्की धूप आती हो।
* अगर बाहर सुखा रहे हों तो प्लेट को मलमल के कपड़े से ढक दें। सीधी तेज़ धूप में न रखें

6. स्टोर करें 3–4 दिन में मिश्रण अच्छी तरह सूख जाएगा।

* पूरी तरह सूखने के बाद इसे एयरटाइट डिब्बे में भरकर रखें।

उपयोग कैसे करें

* खाना खाने के बाद 1–2 चम्मच मुखवास लें
* पाचन बेहतर करता है और मुँह को ताज़गी देता है

मोमोज, जिंदगी बर्बाद कर देगा

पिंकी कुंडू

आजकल गली मोहल्लो नुक्कड़ मार्केट पर सिल्वर के स्ट्रीमर में उबलते हुए मोमोज तीखी लाल मिर्च की चटनी के साथ खाते हुए युवा किशोर आपको भारी संख्या में दिख जाऐंगे।

शाम के समय मासूम युवा किशोर नहीं जानते वह मोमोज खा कर अपने स्वास्थ्य चरित्र को किस हद तक बर्बाद कर रहे हैं।

मोमोज मैदा के बने हुए होते हैं मैदा गेहूं का एक उत्पाद है जिसमें से प्रोटीन व फाइबर निकाल लिया जाता है मृत स्टार्च ही शेष रहता है उसे और अधिक चमकाने के लिए बेंजोयल पराक्साइड मिला दिया जाता है जो एक रासायनिक बलिचर है।

जी हां वही बलिचर जिससे चेहरे की सफाई की जाती है। यह बलिचर शरीर में जाकर किडनी को नुकसान पहुंचाता है।

मैदे के प्रोटीन रहित होने से इसकी प्रकृति एसिडिक हो जाती है और यह शरीर में जाकर हड्डियों के कैल्शियम को सोख लेता है तीखी लाल मिर्च की चटनी उत्तेजक होती है, जिससे यौन रोग धातु रोग नपुंसकता जैसी महा भयंकर बीमारियां देश के किशोर व युवा को खोखला कर रही है।

इस में ऐसे कैमीकल को मिलाया जाता है जो बच्चों के दिमाग में चले जाते हैं।

जिससे बच्चों का मन बार बार खाने को करता है।

यह कैमीकल बच्चियों में बांझपन और लड़कों को नपुंसकता पैदा करते है।

जिसकी खाने वालों को भनक भी नहीं लगती।

यह खाना आपकी आंतों में जाकर चिपक जाता है। आंतों का सत्यानाश कर देता है।

जिससे बच्चों में नया खून बनना बंद हो जाता है और शरीर का विकास रूक जाता है।

जीभ के स्वाद में आकर अपने स्वास्थ्य को युवा किशोर खराब कर रहे हैं।

मोमोज पूर्वी एशियाई देशों चीन तिब्बत का खाना है वहां की जलवायु के यह अनुकूल वहां है

भारत की गर्म जलवायु के यह अनुकूल नहीं है। आज ही शुभ संकल्प लें इस स्वास्थ्य नाशक रोग प्रधान आहार को कभी नहीं खाऐंगे और दूसरों को भी नहीं खाने की सलाह दिजिए।

आंवला पाचक - शरीर को अंदर से साफ, हल्का और मज़बूत बनाने वाला एक संतुलित प्राकृतिक पाचन सहायक

पिंकी कुंडू

यह बालों की जड़ों को मज़बूती देता है, त्वचा का निखार वापस लाता है और रोज़मर्रा की पाचन समस्याओं में राहत देता है।

सामग्री

* आंवलाः 1 किलो (बड़े साइज़ का)
* चुकंदरः 4 ताज़े (मीठे होने चाहिए)
* अदरकः 1 से 1.5 इंच का टुकड़ा

मसाला भूनने के लिएः

* सौंफः 1 छोटी चम्मच
* जीराः 1 छोटी चम्मच
* कालीमिर्चः 1 छोटी चम्मच

अन्य मसालेः

* पिसा हुआ मसालाः 2 चम्मच
* चाट मसाला पाउडरः 1 टीस्पून भर
* अमचूर पाउडरः 1/2 टीस्पून
* मिश्री/चीनी का पाउडरः 3 टेबलस्पून
* नमकः लगभग 1/2 चम्मच

विधि

* सबसे पहले आंवला और चुकंदर को धोकर बड़े वाले कद्दूकस से कसें ताकि मोटे और एक समान लच्छे बनें।
* चुकंदर मीठा होना ज़रूरी है, वरना पाचक का स्वाद खराब हो जाएगा।
* अदरक को छीलकर बारीक कद्दूकस करें ताकि इसका रस मिश्रण में अच्छे से घुल सके।
* अब एक पैन गर्म करें और उसमें सौंफ, जीरा और काली मिर्च डालें। इन्हें हल्का भूनें, बस इतना कि धुआँ हल्का दिखने लगे। ज़्यादा भूनोगे तो मसाला कड़वा हो जाएगा।
* ठंडा करके इसे ओखली या ग्राइंडर में दरदरा पीस लें।
* अब एक बड़े बर्तन में कद्दूकस किया हुआ आंवला, चुकंदर और अदरक डालें।
* ऊपर से भुना हुआ मसाला, चाट मसाला, अमचूर, मिश्री पाउडर और नमक मिलाएँ।
* तैयार मिश्रण को चौड़े बर्तनों या थालियों में पतली परत में फैलाएँ।
* इसे सिर्फ़ पंखे के नीचे या हल्की धूप में सूखने दें। कड़क धूप में रखोगे तो रंग काला पड़ेगा।
* इसे पूरी तरह सूखकर करारा होना चाहिए, क्योंकि नमी बची तो यह जल्दी खराब होगा।
* जब मिश्रण पूरी तरह सूख जाए, तब इसे एयर-टाइट डिब्बे में भरकर रखें। लीजिए आपका आंवला पाचक (Amla Pachak) तैयार है।

टिप्स

1. आंवला मोटे लच्छे में कद्दूकस करें ताकि सूखने में आसानी हो।
2. चुकंदर मीठा हो, फीका चुकंदर स्वाद बिगाड़ देगा।
3. मसाले को बस हल्का भूनें, ज़्यादा भूनने से कड़वाहट आएगी।
4. मिश्रण को हाथ से ही मिलाएँ, इससे मसाले एक समान मिल जाएंगे।
5. सुखाने में जल्दबाज़ी मत करें, अभी आंवला और चुकंदर नरम रहेगा तो बाद में खराब हो सकता है।
6. कड़क धूप से बचें, इससे पाचक का रंग और स्वाद दोनों बिगड़ते हैं।
7. एयर-टाइट डिब्बे का ढक्कन अच्छी तरह लॉक होना चाहिए।

आंवला चटनी रेसिपी

पिंकी कुंडू

सामग्रीः 1. आंवला (Amla) – 6-7 (उबले या हल्के स्टीम किए हुए, बीज निकालकर टुकड़ों में कटे)

2. धनिया पत्ता (Coriander leaves) – 1 कप
3. पुदीना पत्ता (Mint leaves) – कप
4. गुड़ (Jaggery) – 1 बड़ा चम्मच (स्वाद अनुसार)
5. अदरक (Ginger) – 1 इंच का टुकड़ा
6. हरी मिर्च (Green chili) – 1-2 (स्वाद अनुसार तीखापन)
7. जीरा (Cumin seeds) – 1 छोटा चम्मच
8. काला नमक (Black salt) – छोटा चम्मच (या स्वाद अनुसार)
9. साधारण नमक – स्वाद अनुसार (वैकल्पिक)
10. थोड़ा पानी – आवश्यकता अनुसार (पेस्ट बनाने के लिए)

विधिः

1. आंवला तैयार करेंः आंवले को उबाल लें या स्टीम में 5 मिनट तक पकाएँ, ताकि वे नरम हो जाएँ। फिर बीज निकालकर टुकड़ों में काट लें।

2. मिक्सर में सामग्री डालेंः मिक्सर जार में — आंवला, धनिया पत्ता, पुदीना पत्ता, अदरक, हरी मिर्च, जीरा, काला नमक और गुड़ डालें।
3. पानी डालेंः 2-3 बड़े चम्मच पानी डालें और सभी चीज़ों को बारीक पीस लें।
4. स्वाद अनुसार समायोजन करेंः अगर आपको मीठापन या खट्टापन ज्यादा पसंद है, तो गुड़ या आंवले की मात्रा समायोजित करें।
5. परोसने के लिए तैयारः चटनी को एक कटोरी में निकालें और पराठा, दाल-चावल, या स्नैक्स के साथ परोसें।

टिप्सः

* चटनी को 4-5 दिनों तक फ्रिज में स्टोर किया जा सकता है।
* अगर आप ज्यादा तीखी पसंद करते हैं तो हरी मिर्च की मात्रा बढ़ा सकते हैं।
* स्वाद में गहराई के लिए चाहें तो थोड़ा भुना जीरा पाउडर भी डाल सकते हैं।

यह चटनी खट्टी, मीठी और हल्की तीखी स्वाद का बेहतरीन मिश्रण है — सेहत और स्वाद दोनों के लिए फायदेमंद!

कुछ उपाय और ज्ञानवर्धक बाते जो हम अपने पूर्वजों से सुनते आ रहे हैं।

पिंकी कुंडू

मान्यताओं के आधार पर कई लोग आज भी यह उपाय करते हैं।

* अगर आप किसी जरूरी काम से निकल रहे हैं तो अपने साथ रोटी का टुकड़ा लेकर घर से निकलें और बाहर कहीं भी वह रोटी किसी कौवे को खिला दें। इससे आपका जरूरी काम सफलतापूर्वक जरूर पूरा हो जाएगा। यह एक अचूक टोटका माना जाता है। इसकी कोई काट नहीं है।
* चार लाल मिर्च लें और उसके बीज निकाल कर अलग रख लें। अब एक लोटे या जग में पूरा पानी भरें। इस पानी में लाल मिर्च के निकाले हुए सभी बीज डाल दें। नजर उतारने का पानी है। इसे अपने ऊपर से सात बार उतारा करके घर के बाहर सड़क पर फैंक दें। आपके अलावा घर का जो भी सदस्य नजर लगने के प्रभाव में है, उसके साथ भी ऐसा ही करें।
* सांसें लम्बी-लम्बी और गहरी लेनी चाहिएं चलते या बैठते और खड़े रहते समय अपनी कमर को सीधा रखें।
* दिन के समय में कम से कम 2 बार ठंडे पानी से स्नान करना चाहिए।
* दिन में कम से कम 2 बार भगवान का स्मरण तथा ध्यान करें, एक बार सूर्य उदय होने से पहले तथा एक बार रात को सोते समय।
* सभी मनुष्यों को भोजन करने के बाद मूत्र-त्याग जरूर करना चाहिए।
* प्रतिदिन दिन में कम से कम 1-2 बार 5 से 15 मिनट तक वज्रासन की मुद्रा करने से स्वास्थ्य सही रहता है।
* सोने के लिए सख्त या मध्यम स्तर के बिस्तर का उपयोग करना चाहिए तथा सिर के नीचे पतला तकिया लेकर सोना चाहिए।
* सोते समय सारी चिंताओं को भूल जाना चाहिए। गहरी नींद में और शरीर को ढीला छोड़कर सोना चाहिए।
* पीठ के बल या दाहिनी ओर करवट लेकर सोना चाहिए।
* सभी मनुष्यों को भोजन और सोने के समय में कम से कम 3 घंटे का अंतर रखना चाहिए।
* जो शोर कम व काम अधिक करता है, वह गुणवान है।
* जो ख्वाबों को नहीं बुनता, तथ्यों को तलाशता है, वह गुणवान है।
* जो हार-जीत, निंदा-तारीफ, हानि-लाभ हर पड़ाव में मुस्कुराना जानता है - वह गुणवान है।
* जिसे चापलूसी ललचाती नहीं, आलोचना उद्विग्न नहीं करती, विरोध क्रोध पैदा नहीं करवा पाता, वियोग व्यग्र-बेताब नहीं बना पाता-वह गुणवान है।
* जो सत्यशील, निर्भीक व दीर्घ द्रष्टा है- वह गुणवान है।

ऐसे लोग संख्या में चाहे अल्प ही क्यों न हों, किंतु एक चंद्रमा की भांति सैंकड़ों तारा गणों व नक्षत्रों से भी अधिक प्रकाशवान हैं।

ब्रह्मांड की मूल शक्ति दस महाविद्याओं की अलौकिक शक्ति और साधन

पिंकी कुंडू

महाविद्या शब्द संस्कृत भाषा के शब्दों ₹महा₹ तथा ₹विद्या₹ से बना है- ₹महा₹ अर्थात महान, विशाल, विराट ; तथा ₹विद्या₹ अर्थात ज्ञान ।दशमहाविद्या अर्थात महान विद्या रूपी देवी। महाविद्या, देवी दुर्गा के दस रूप हैं, जो अधिकांश तान्त्रिक साधकों द्वारा पूजे जाते हैं, परन्तु साधारण भक्तों को भी अचूक सिद्धि प्रदान करने वाली है। इन्हें दस महाविद्या के नाम से भी जाना जाता है ।महाविद्या विचार का विकास शक्तिवाद के इतिहास में एक नया अध्याय बना जिसने इस विश्वास को पोषित किया कि सर्व शक्तिमान एक नारी है ।प्रकृति की सभी शक्तियों में सारे ब्रह्मांड के मूल में ये दस महाविद्या ही हैं। ये दस महाविद्या है जो प्रकृति के कण कण में समाहित हैं और इनकी साधना से मनुष्य इहलोक ही नहीं परलोक भी सुधार सकता है ।ये दसों महाविद्याएं आदि शक्ति माता पार्वती की ही रूप मानी जाती हैं। दस का सबसे ज्यादा महत्व है। संसार में दस दिशाएं स्पष्ट हैं ही, इसी तरह 1 से 10 तक के बिना अंकों की गणना संभव नहीं है।

शाक्त दर्शन, दस महाविद्याओं को भगवान विष्णु के दस अवतारों से सम्बद्ध करता है और यह व्याख्या करता है कि महाविद्याएँ वे स्रोत हैं जिनसे भगवान विष्णु के दस अवतार उत्पन्न हुए थे। महाविद्याओं के ये दसों रूप चाहे वे भयानक हों अथवा सौम्य, जगज्जननी के रूप में पूजे जाते हैं।

भगवती के इस संसार में आने के और रूप धारण करने के कारणों की चर्चा मुख्यतः जगत कल्याण, साधक के कार्य, उपासना की सफलता तथा दानवों का नाश करने के लिए हुई।

ये सारा संसार शक्ति रूप ही है। इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए ।शक्ति की उपासना कर सिद्धि को ग्रहण करने के इच्छुक तो बहुत लोग हैं, लेकिन पूरे समर्पण और श्रद्धा के साथ तप कर सिद्धि को प्राप्त करने का साहस सभी के पास नहीं होता।

शक्ति के विभिन्न स्वरूपों की आराधना कर उन्हें प्रसन्न करने के लिए अघोरी, साधु और भौतिकवाद से दूर हो चुके लोग भी अपना संपूर्ण जीवन झोंक देते हैं।

दस महाविद्या के बारे में कुछ भी कहना सूर्य को दीपक दिखाने के समान है। सारी शक्ति एवं सारे ब्रह्मांड की मूल में हैं ये दस महाविद्या। मनुष्य जन्म से लेकर मृत्यु तक जिन जालों में उलझा रहता है और जिस सुख तथा अंततः मोक्ष की खोज करता है, उन सभी के मूल में मूल यही दस महाविद्या हैं।

दस का सबसे ज्यादा महत्व है। संसार में दस दिशाएं स्पष्ट हैं ही, इसी तरह 1 से 10 तक के बिना अंकों की गणना संभव नहीं है।

अघोरपंथ में विभिन्न प्रकार की सिद्धियों का उल्लेख किया गया है, जिन्हें ज्ञान और शक्ति प्राप्त करने के लिए हासिल किया जाता है। प्रमुख रूप से 10 सिद्धियों को जाना गया है, जिनमें से 4 को काली कुल और छः को श्रीकुल में रखा गया है।

इन सिद्धियों को कोई भी व्यक्ति प्राप्त कर सकता है। इसमें जाति, वर्ण, लिंग, उम्र आदि का कुछ भी लेना-देना नहीं है। अपनी तन्मयता और समर्पण भाव के साथ शक्ति को प्रसन्न कर सिद्धियों को प्राप्त किया जाता है, लेकिन इसके लिए जिस मार्ग पर चलना होता है वह बेहद कठिन है।

सिद्धियों को प्राप्त करने की शुरुआत करने से पूर्व व्यक्ति को अपनी देह को शुद्ध करना होता है। पवित्र मंत्रों के जाप के दौरान स्नान कर देह का शुद्धिकरण संपन्न होता है। इसके पश्चात जिस स्थान पर बैठकर पूजा करनी है उस स्थान का भी शोधन होता है। इसके बाद शक्ति के जिस स्वरूप को प्राप्त करने के लिए सिद्धि करनी है, उस स्वरूप का पूरी एकाग्रता और तन्मयता के साथ ध्यान किया जाता है।

नवरात्र में मां दुर्गा के नौ स्वरुपों की पूजा-अर्चना की जाती है. लेकिन किसी खास कार्य की सिद्धि के लिए नवरात्र में 10 महाविद्या की उपासना का विशेष महत्व है।

चाहे मां दुर्गा हों या फिर काली ये सभी देवियां शक्ति का ही स्वरुप मानी जाती हैं। इनमें बस अंतर है तो चित्रण का। किसी खास कार्य की सिद्धि या शक्ति साधना में 10 महाविद्याओं की उपासना अहम मानी जाती है।

तंत्र के क्षेत्र में सबसे प्रभावी हैं दस महाविद्या।

ब्रह्मांड की सारी शक्तियों की स्रोत यही दस महाविद्या हैं। इन्हें शक्ति भी कहा जाता है।

मान्यता है कि शक्ति के बिना देवाधिदेव शिव भी शव के समान हो जाते हैं।

भगवान विष्णु की शक्ति भी इन्हीं में निहित हैं।

सिक्के का दूसरी पहलू यह भी है कि शक्ति की पूजा शिव के बिना अधूरी मानी जाती है। इसी तरह शक्ति के विष्णु रूप में भी दस अवतार माने गए हैं।

किसी भी महाविद्या के पूजन के समय उनकी दाईं ओर शिव का पूजन ज्यादा कल्याणकारी होता है। अनुष्ठान या विशेष पूजन के समय इसे अनिवार्य मानना चाहिए।

शाक्त भक्तों के अनुसार ₹दस रूपों में समाहित एक सत्य की व्याख्या है - महाविद्या₹ जिससे जगदम्बा के दस लौकिक व्यक्तित्वों की व्याख्या होती है।

दस महाविद्या से ही विष्णु के भी दस अवतार माने गए हैं। उनके विवरण भी निम्न हैं--

महाविद्या --------विष्णु के अवतार

1. काली----------कृष्ण
2. तारा----------मत्स्य
3. षोडषी---------- परशुराम
4. भुवनेश्वरी---------- वामन
5. त्रिपुर भैरवी---------- बलराम
6. छिन्नमस्ता---------- नृसिंह
7. धूमावती---------- वाराह
8. बगला---------- कूर्म
9. मातंगी---------- राम
10. कमला---------- बुद्ध

विष्णु का 'कल्कि अवतार 'दुर्गा जी का माना गया है।

दस महाविद्या उत्पत्ति की पौराणिक कथा;-

1. देवीभागवत पुराण के अनुसार महाविद्याओं की उत्पत्ति भगवान शिव और उनकी पत्नी सती, जो कि पार्वती का पूर्वजन्म थीं, के बीच दक्ष यज्ञ में जाने के एक विवाद के कारण हुई ।शिव जी ने सती से कहा, "तुम्हारा वहां जाना उचित नहीं हैं, वहां तुम्हारा सम्मान नहीं होगा, पिता द्वारा की गई निंदा तुम सहन नहीं कर पाओगी, जिसके कारण तुम्हें प्राण त्याग करना पड़ेगा,क्या तुम अपने पिता काअनिष्ट करोगी ?"इस पर सती ने क्रोध युक्त हो, अपने पति भगवान शिव से कहा "अब आप मेरी भी सुन लीजिये, मैं अपने पिता के घर जरूर जाऊंगी, फिर आप मुझे आज्ञा दे या न दे।" जिस से भगवान शिव भी क्रुद्ध हो गए और उन्होंने सती के अपने पिता के यहाँ जाने का वास्तविक प्रयोजन पूछा, 'अगर उन्हें अपने पति की निंदा सुनने का कोई प्रयोजन नहीं हैं तो वे क्यों ऐसे पुरुष के गृह जा रही हैं? जहाँ उनकी सर्वथा निंदा होती हो।'इस पर सती ने कहा "मुझे आपकी निंदा सुनने में कोई रुचि नहीं हैं और न ही मैं आपके निंदा करने वाले के घर जाना चाहती हूँ। वास्तविकता तो यह हैं, यदि आपका अपमान कर, मेरे पिताजी इस यज्ञ को सम्पूर्ण कर लेते हैं तो भविष्य में हमारे ऊपर कोई श्रद्धा नहीं रखेगा और न ही हमारे निमित्त आहुति ही डालेगा। आप आज्ञा दे या न दे, मै वहां जा कर यथोचित सम्मान न पाने पर यज्ञ का विध्वंस कर दूंगी।"

2. भगवान शिव ने कहा "मेरे इतने समझाने पर भी आप आज्ञा से बाहर होती जा रही हैं, आप की जो इच्छा हो वही करें, आप मेरे आदेश की प्रतीक्षा क्यों कर रहीं हैं ?शिव जी के ऐसा कहने पर दक्ष-पुत्री सती देवी अत्यंत क्रुद्ध हो गई, उन्होंने सोचा, "जिन्होंने कठिन तपस्या करने के पश्चात मुझे प्राप्त किया था आज वो मेरा ही अपमान कर रहें हैं, अब मैं इन्हें अपना वास्तविक प्रभाव दिखाऊंगी ।₹भगवान शिव ने देखा कि सती के होंठ क्रोध से फड़क रहे हैं तथा नेत्र प्रलयाग्नि के समान लाल हो गए हैं, जिसे देखकर भयभीत होकर उन्होंने अपने नेत्रों को मूंद लिया। सती ने सहसा घोर अट्टहास किया, जिसके कारण उनके मुंह में लंबी-लम्बी दाढ़े दिखने लगी, जिसे सुनकर शिव जी अत्यंत हतप्रभ हो गए। कुछ समय पश्चात उन्होंने जब अपनी आंखों को खोला तो, सामने देवी का भीम आकृति युक्त भयानक रूप दिखाई दे रहा था, देवी वृद्धावस्था के समान वर्ण वाली हो गई थीं, उनके केश खुले हुए थे, जिह्वा मुख से बहार लपलपा रहीं थीं, उनकी चार भुजाएं थीं। उनके देह से प्रलयाग्नि के समान ज्वालाएँ निकल रही थीं, उनके रोम-रोम से स्वेद निकल रहा था, भयंकर डरावनी चीत्कार कर रहीं थीं तथा आभूषणों के रूप में केवल मुंड-मालाएं धारण किये हुए थीं ।उनके मस्तक पर अर्ध चन्द्र शोभित था, शरीर से करोड़ों प्रचंड आभाएँ निकल रहीं थीं, उन्होंने चमकता हुआ मुकुट धारण कर रखा था। इस प्रकार के घोर भीमाकार भयानक रूप में, अट्टहास करते हुए देवी, भगवान शिव के सम्मुख खड़ी हुई।

3. उन्हें इस प्रकार देख कर भगवान शंकर ने भयभीत हो भागने का मन बनाया, वे हतप्रभ हो इधर उधर दौड़ने लगे। सती देवी ने भयानक अट्टहास करते हुए, निरुद्देश्य भागते हुए भगवान शिव से कहा, ' आप मुझसे डरिये नहीं !' परन्तु भगवान शिव डर के मारे इधर उधर भागते रहें। इस प्रकार भागते हुए अपने पति को देखकर, दसो दिशाओं में देवी अपने ही दस अवतारों में खड़ी हो गई। शिव जी जिस भी दिशा की ओर भागते, वे अपने एक अवतार में उनके सम्मुख खड़ी हो जाती। इस तरह भागते-भागते जब भगवान शिव को कोई स्थान नहीं मिला तो वे एक स्थान पर खड़े हो गए ।इसके पश्चात उन्होंने जब अपनी आंखें खोली तो अपने सामने मनोहर मुख वाली श्यामा देवी को देखा। उनका मुख कमल के समान खिला हुआ था, दोनों पयोधर स्थूल तथा आंखें भयंकर एवं कमल के समान थीं। उनके केश खुले हुए थे, देवी करोड़ों सूर्यों के समान प्रकाशमान थीं, उनकी चार भुजाएं थीं, वे दक्षिण दिशा में सामने खड़ी थीं ।अत्यंत भयभीत हो भगवान शिव ने उन देवी से पुछा, "आप कौन हैं, मेरी प्रिय सती कहा हैं ?"सती ने शिव जी से कहा "आप मुझ सती को नहीं पहचान रहें है, ये सारे रूप जो आप देख रहे है; काली, तारा, त्रिपुरसुंदरी, भुवनेश्वरी, छिन्नमस्ता, बगलामुखी, धूमावती, मातंगी एवं कमला, ये सब मेरे ही नाना नाम हैं ।₹

4. भगवान शिव द्वारा उन नाना देवियों का परिचय पूछने पर देवी ने कहा, "ये जो आप के सम्मुख भीमाकार देवी हैं इनका नाम 'काली' हैं, ऊपर की ओर जो श्याम-वर्ना देवी खड़ी हैं वह 'तारा' हैं, आपके दक्षिण में जो मस्तक-विहीन अति भयंकर देवी खड़ी हैं वह 'छिन्नमस्ता' हैं, आपके उत्तर में जो देवी खड़ी हैं वह 'भुवनेश्वरी' हैं, आपके पश्चिम दिशा में जो देवी खड़ी हैं वह शत्रु विनाशिनी 'बगलामुखी' देवी हैं, विधवा रूप में आपके आग्नेय कोण में 'धूमावती' देवी खड़ी हैं, आपके नैऋत्य कोण में देवी 'त्रिपुरसुंदरी' खड़ी हैं, आप के वायव्य कोण में जो देवी हैं वह 'मातंगी' हैं, आपके ईशान

कोण में जो देवी खड़ी हैं वह 'कमला' हैं तथा आपके सामने भयंकर आकृति वाली जो मैं 'भैरवी' खड़ी हूँ। अतः आप इनमें किसी से भी न डरें। यह सभी देवियाँ महाविद्याओं की श्रेणी में आती हैं, इनके साधक या उपासक पुरुषों को चतुर्वर्ग (धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्षतथा मनोकामनाएँ पूर्ण करने वाली हैं। आज मैं अपने पिता का अभिमान चूर्ण करने हेतु जाना चाहती हूँ, यदि आप न जाना चाहें तो मुझे ही आज्ञा दें।"

* भगवान शिव ने सती से कहा, "मैं अब आप को पूर्ण रूप से जान पाया हूँ, अतः पूर्व में प्रमाद या अज्ञान वश मैंने आपके विषय में जो भी कुछ अनुचित कहा हो, उसे क्षमा करें। आप आद्या परा विद्या हैं, सभी प्राणियों में आप व्याप्त हैं तथा स्वतंत्र परा-शक्ति हैं, आप का नियन्ता तथा निषेधक कौन हो सकता हैं? आप को रोक सकूँ मुझमें ऐसा सामर्थ्य नहीं हैं, इस विषय में आपको जो अनुचित लगे आप वही करें।"

5. इस प्रकार भगवान शिव के कहने पर देवी उनसे बोली, "हे महेश्वर ! सभी प्रमथ गणो के साथ आप यही कैलाश में ठहरे, मैं अपने पिता के यहाँ जा रही हूँ।" शिव जी को यह कह वह ऊपर खड़ी हुई तारा अकस्मात एक रूप हो गई तथा अन्य अवतार अंतर्ध्यान हो गए, देवी ने प्रमथों को रथ लाने का आदेश दिया। वायु वेग से सहस्रों सिंहों से जुती हुई मनोरम देवी-रथ, जिसमें नाना प्रकार के अलंकार तथा रत्न जुड़े हुए थे, प्रमथ प्रधान द्वारा लाया गया। वह भयंकर रूप वाली देवी उस विशाल रथ में बैठ कर आपने पितृ गृह को चली, नंदी उस रथ के सारथी थे ।यज्ञ का विध्वंसहोने के पश्चात बकरे के मस्तक से युक्त दक्ष ने भगवान शिव से क्षमा याचना की तथा नाना प्रकार से उनकी स्तुति की, अंततः उन्होंने शिव-तत्व को ससम्मान स्वीकार किया ।शिव अब पूर्ण रूप से तपस्वियों के पूर्ण अवतार थे। कुछ वर्ष बाद वे दिगम्बरों के समाज में पहुँचे। शिव वहाँ भिक्षाटन करते, पर दिगम्बरों की पत्नियाँ उनके प्रति आसक्त हो गयीं। अपनी पत्नियों का यह हाल देखकर दिगम्बर देवताओं ने शाप दिया - इस व्यक्ति का लिंगम धरती पर गिर जाए ! शिव लिंगम धरती पर गिर गया। प्रेम तत्काल नपुंसक हो गया - पर देवताओं ने यह नहीं चाहा था। उन्होंने शिव से प्रार्थना की कि वे लिंगम को धारण करें। शिव ने कहा, 'अगर नश्वर और अनश्वर मेरे लिंगम की पूजा करना स्वीकार करें, तो मैं इसे धारण करूँगा अन्यथा नहीं !

6. दोनों प्रजातियों ने ये स्वीकार नहीं किया, यद्यपि प्रजनन का वह एक मात्र माध्यम था, इसलिए वह वहीं बर्फ में पड़ा रहा और शिव ने दुख की अन्तिम श्रृंखला पार की और उस पार चले गये ।और तब धरती पर 3,600 वर्षों के लिए शान्ति और अत्याकुल युग का अवतरण हुआ - जोकि शायद इस युग तक चलता, अगर तारक नाम का आत्मसंयमी कट्टर राक्षस पैदा न हुआ होता। क्योंकि उसका आत्मनिषेध देवताओं के लिए खतरा बन गया। जरूरत थी दुनिया को पवित्र रखने की, दूसरे शब्दों में अपने लिए सुरक्षित रखने की ।भविष्यवाणी यह थी कि तारक का वध एक सात दिवसीय शिशु द्वारा किया जा सकता है, जो शिव और देवी के सम्मिलन से होगा, जो एक वन में जन्म लेगा और कार्तिकेय नाम से जाना जाएगा। कार्तिकेय अर्थात युद्ध का देवता - वह ग्रह जो सब देशों को दिशा देता है ।अब एक नई प्रेमकथा का प्रारम्भ होना था !

दस महाविद्या के तीन समूह और दो कुल;-

1. दस महाविद्या की पूजा-अर्चना करने में चतुवर्ग अर्थात- धर्म, भोग, मोक्ष और अर्थ की प्राप्ति होती है। इन्हीं की कृपा से षटकर्णों की सिद्धि तथौ अभिष्टि की प्राप्ति होती है ।साक्षात आदि शक्ति महामाया ही शिव की अर्धांग्डिनी पार्वती एवं सती हैं और तामसी संहारक शक्ति होने के फल स्वरूप समय-समय पर भयंकर रूप धारण करती हैं। उनका भयंकर रूप, केवल दुष्टों हेतु ही भय उत्पन्न करने वाला तथा विनाशकारी हैं। देवी ! सौम्य, सौम्य-उग्र तथा उग्र तीन रूपों में अवस्थित हैं तथा स्वभाव के अनुसार दो कुल में विभाजित हैं, काली कुल तथा श्री कुल ।अपने कार्य तथा गुण के अनुसार देवी अनेकों अवतारों में प्रकट हुई, ऐसा नहीं हैं कि इनके सभी रूप भयानक हैं; सौम्य स्वरूप में देवी कोमल स्वभाव वाली हैं, सौम्य-उग्र स्वरूप में देवी कोमल और उग्र (सामान्य) स्वभाव वाली हैं तथा उग्र रूप में देवी अत्यंत भयानक हैं।

2. 1-पहला- सौम्य कोटि, त्रिपुर सुंदरी, भुवनेश्वरी, मातंगी और कमला

2. 2-दूसरा- उग्र कोटि काली, छिन्नमस्ता, धूमावती और बगलामुखी)

2. 3-तीसरा- सौम्य-उग्र कोटि तारा और त्रिपुर भैरवी

3. कहीं-कहीं 24 विद्याओं का वर्णन भी आता है। परंतु मूलतः दस महाविद्या ही प्रचलन में है। इनके दो कुल हैं। कुछ ऋषियों ने इन्हें तीन रूपों में माना है। उग्र, सौम्य और सौम्य-उग्र। उग्र में काली, छिन्नमस्ता, धूमावती और बगलामुखी है। सौम्य में त्रिपुरसुंदरी, भुवनेश्वरी, मातंगी और महालक्ष्मी (कमला) है ।शक्ति के अपरम्पार रुप है। दस महाविद्या असल मे एक ही आदि शक्ति के अवतार है। वो क्रोध मे काली, सम्हारक क्रोध मे तारा आदि रुप धारण कर लेती है। दयाभाव मे प्रेम और पोषण मे वो भुवनेश्वरी, मतंगी और महालक्ष्मी का रुप धारण कर लेती है। शक्ति साधना में कुल दस महाविद्याओं की उपासना होती है। यह सब महाविद्या ज्ञान और शक्ति प्राप्त करने की कामना रखनेवाले उपासक करते है। ध्यान रहे, सिर्फ मंत्रजाप से कुछ नही होता साधक के कर्म भी शुद्ध होने जरुरी है ।महा-देवियाँ, दस महाविद्या, योगिनियाँ, डाकिनियाँ, पिसाचनियाँ, भैरवी इत्यादि महामाया आदि शक्ति के नाना अवतार हैं। सभी केवल गुण एवं स्वभाव से भिन्न-भिन्न हैं। काली कुल की देवियाँ प्रायः घोर भयानक स्वरूप तथा उग्र स्वभाव वाली होती हैं तथा इन का सम्बन्ध काले या गहरे रंग से होता हैं; इसके विपरीत श्री कुल की देवियाँ सौम्य तथा कोमल स्वभाव की तथा लाल रंग या हलके रंग से सम्बंधित होती हैं।

4. इनकी साधना 2 कुलों के रूप में की जाती है। श्री कुल और काली कुल। इन दोनों में नौ- नौ देवियों का वर्णन है। इस प्रकार ये 18 हो जाती है। चार साधाना काली कुल की है और छः साधना श्री कुल की होती है ।काली कुल की देवियों में महाकाली, तारा, छिन्नमस्ता, भुवनेश्वरी हैं, जो स्वभाव से उग्र हैं। (परन्तु, इनका स्वभाव दुष्टों के लिये ही भयानक हैं) श्री कुल की देवियों में महा-त्रिपुरसुंदरी, त्रिपुर-भैरवी, धूमावती, बगलामुखी, मातंगी और कमला हैं, देवी धूमावती को छोड़ कर सभी सुन्दर रूप तथा यौवन से संपन्न हैं।"काल (मृत्यु) का भी भक्षण करने में समर्थ, घोर भयानक स्वरूप वाली प्रथम महा-शक्ति महा-काली, साक्षात योगमाया भगवान विष्णु के अन्तः करण की शक्ति" हैं।

* काली तारा महाविद्या षोडशी भुवनेश्वरी।
* भैरवी छिन्नमस्ता च विद्या धूमावती तथा।
* बगला सिद्धविद्या च मातंगी कमलात्मिका।
* एता दश महाविद्याः सिद्धविद्याः प्राकृर्तिता
* एषा विद्या प्रकथिता सर्वतन्त्रेषु गोपिता।।

5. क्रम से इनका विवरण :-

1. काली 2. तारा 3. त्रिपुरसुंदरी 4. भुवनेश्वरी 5. त्रिपुर भैरवी 6. धूमावती 7. छिन्नमस्ता 8. बगला 9. मातंगी 10. कमला....इस प्रकार, मिलकर दस महाविद्या समूह का निर्माण करती हैं, इनमें से प्रत्येक देवियाँ भिन्न-भिन्न प्रकार की शक्तियों तथा ज्ञान से परिपूर्ण हैं, शक्तियों की अधिष्ठात्री हैं।

दस महाविद्या की साधना उपासना;-

1. महाविद्या साधना करने के लिए किसी व्यक्ति का ब्रह्मण होना अनिवार्य नही। महाविद्या की साधना कोई भी कर सकता है। इसमे जाति, वर्ग, लिंग आदि का कोई भेद नही है और सभी प्रकार के बन्धन से मुक्त है। सभी महाविद्या मे भैरव की उपासना भी कर लेनी चाहिए। क्योकि यह महाविद्याए है तो इनकी क्रिया भी थोडी सी जटिल तो होगी ही इसलिए इनकी साधना शुरु करने से पहले आपको पंच शुद्धियों करनी ही चाहिए है।

1-1.स्थान शुद्धिः- पूजन स्थान का शोधन भी करना चाहिए है ।जहा पर साधना के लिये बैठते है उस जगह को शुद्ध कर लिजिये.पहले जमाने मे लोग गौमाता के गोबर से एवम गौमूत्र से सम्पूर्ण जगह को शुद्ध करते थे। आज मॉडर्न लाईफ स्टाईल मे कम से कम धुला हुआ आसन ले लिजिये। मंगलमय वातावरण के लिये अगरबत्ती जलाइये।

1-2.देह शुद्धिः- देह का शोधन करने हेतु आसन पर आसीन होकर प्राणायाम तथा भूत शुद्धि की क्रिया से अपने शरीर का शोधन करना चाहिए ।पहले स्वयं की देह को शोधन किया जाता है ।सात्विक भोजन का सेवन करे, ब्रम्हचर्य का पालन करे। साधना मे बैठने से पहले नहा कर, शौचादि शारीरिक क्रिया से निवृत्त हो जाये। बद्ध कोष्ठता गेसेस आदि की समस्या साधना मे भयंकर बाधा पैदा कर आपके लिये समस्या पैदा कर सकती है। शरीर जब व्याधी ग्रस्त हो, मतलब जुकाम ,बुखार इत्यादि ...तब साधना ना करे। प्राणायाम, योग इत्यादि के प्रयोग से देह शुद्धि मे मदद मिलती है।

1-3.द्रव्य शुद्धिः- द्रव्य शुद्धि के दो अर्थ है. पाप से कमाया गया धन इसमे इस्तेमाल ना करे। दूसरा, साधना के लिये जिन साधनोंका इस्तेमाल करे उनका स्वच्छ एवम पर्याप्त होना जरूरी है। पर्याप्त मतलब, टूटा प्याला, फटी चादर, टूटा फ्रेम, फटे नोट, टूटा फर्निचर ....इनका प्रयोग ना करे।

1-4.देव शुद्धिः- 1-ईष्ट देवता की शरीर मे प्रतिष्ठा कर नाना प्रकार के न्यास इत्यादि कर अपने शरीर को देव-भाव से अभिभूत कर अपने ईष्ट देवता का अन्तर्यजन करता है। शास्त्रो मे इसलिए कहा जाता है कि 'देवम् भूत्वा देवम् यजेत' अर्थात् देवता बनकर ही देवता कर ही किया जाता है। ईष्ट देवता बहिर्याग पूजन का मतलब यह है कि अन्दर तो देवता स्थापित है ही परंतु उसको बाहर लाकर बाहर भी पूजा करी जाती है। जैसे यंत्र आदि मे स्थापित देवता की पूजा करना।

2. सिर्फ साधना के ही नही, घर की दूसरी मूर्तिया और तस्वीरोंको भी साफ कर ले ।आह्वान कर मंत्र द्वारा संस्कार करना चाहिए इसके पश्चात पंचोपचार, षोडषोपचार अथवा चौसठ उपचारों के द्वारा महाविद्या यंत्र में स्थित देवताओं का पूजन कर, उसमें स्थापित देवता की ही अनुमति प्राप्त कर पूजन करना चाहिए। फिर अंतिम समय मे तर्पण करके, हवन वेदी को देवता मानकर अग्नि रूप में पूजन कर विभिन्न प्रकार के बल्कि द्रव्यों को भेंट कर उसे पूर्ण रूप से संतुष्ट करता है। इसके बाद देवता की आरती कर पुष्पांजलि प्रदान करता है।

2. 1 मंत्र शुद्धिः - 1-किसी भी महाविद्या मे न्यास और कुछ मुद्राओ का ज्ञान और चैतन्य यंत्र और माला की अवश्यकता रहती है। किसी ऋषि ने मंत्र को कहा, बीज, शक्ति, कीलकं, देवता आदि पूजन क्यो किया जा रहा है ..वो कारण भी पता होना चाहिए।

2. 2 किसी योग्य गुरु से दीक्षा ग्रहण करनी चाहिए। दीक्षा शब्द का अर्थ मात्र यही होता है कि "एक व्यक्ति ने सिखाया और दूसरे ने सही से सीख लिया" हो तो इसे दीक्षा कह जाता है। एक दिन मे ना जाने कितनी दीक्षाए हम सब के बीच मे समप्न्न होती रहती है ।दीक्षा भी ठीक ऐसे ही होती है जैसे किसी ने, अपनी मेहनत से कमाई सम्पति को किसी दूसरे व्यक्ति के नाम कर दिया। अब यह बात अलग है कि कितने प्रतिशत।

2. 3 गुरु दीक्षा के दौरान सभी क्रिया को समझाते है। यह किसी भी माध्यम से किया जा सकता है। किसी भी साधना की मुद्राएँ न्यास, यंत्र पुजन, माला पूजन , प्राण प्रतिष्ठा, पंचोपचार आदि की जानकारी गुरु करवाते है ।साथ ही वो विधि प्रदान करते है जिससे साधना होगी और आवश्यकता होने पर यंत्र, माला भी आदि प्रदान करते है।

पंचोपचार, षोडषोपचार अथवा चौसठ उपचारों के द्वारा महाविद्या यंत्र में स्थित देवताओं का पूजन करे. उसमें स्थापित देवताओं की अनुमति प्राप्त कर पूजन कीजिये। तर्पण, हवन कर वेदी को ही देवता मानकर अग्नि रूप में पूजन करे. द्रव्यों को भेंट कर उसे संपूर्ण संतुष्ट करे ।फिर देवता की आरती कर पुष्प अर्पण करे ।कवच-सहस्रनामं स्त्रोत्र का पाठ करके स्वयं को शक्ति के चरणों में समर्पित करे।

पश्चात, देवता के विसर्जन की भावना कर ;देवता को स्वयं के हृदयकमल में प्रतिष्ठित कर लेते है और शेष सामग्रीयो को नदी , तालाब, समुंदर मे समर्पित करने के लिये कहा गया है। लेकिन धरती मा और पर्यावरण का ध्यान रखते हुये सामग्री के उपर जल का छिड्काव करके प्रतिमात्मक विसर्जन की भावना रखकर देवताओं से माफी मांगते हुये कहीं भी निकास करे।

माघ मास नवरात्रि -- गुप्त नवरात्रि

पिंकी कुंडू

हिंदू धर्म में माघ महीने का विशेष महत्व है, माघ मास की नवरात्रि को गुप्त नवरात्रि के नाम से जाना जाता है। माघ मास के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से नवमी तक गुप्त नवरात्रि मनाई जाती है, पंचाग के अनुसार इस साल माघ गुप्त नवरात्रि की शुरुआत 19 जनवरी से हो रही है, वहीं इसका समापन 27 जनवरी को होगा।

गुप्त नवरात्रि की पूजा के नौ दिनों में दस महाविद्यायाओं की पूजा का विशेष महत्व है, यह दस महाविद्याये मां काली, तारा देवी, त्रिपुर सुंदरी, भुवनेश्वरी, छिन्नमस्ता, त्रिपुर भैरवी, मां धूमावती, मां बगुलामुखी, मातंगी और कमला देवी हैं।

देवी भागवत महापुराण में उल्लेख के अनुसार पूरे वर्ष में चार नवरात्रि होती हैं, जिसमें दो गुप्त नवरात्रि और दो प्रकट नवरात्रि होती हैं।

माघ और आषाढ़ माह में गुप्त नवरात्रि होती हैं और प्रकट नवरात्रि में चैत्र नवरात्रि तथा आश्विन माह की शारदीय नवरात्रि होती है।

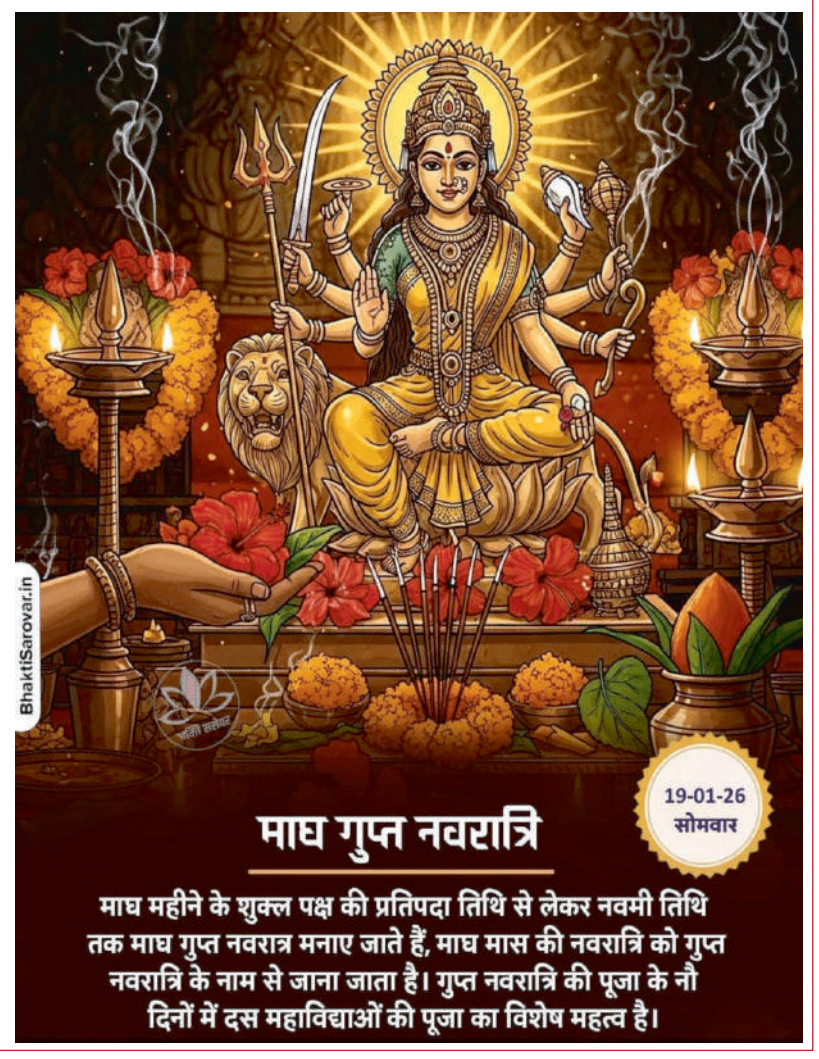

कश्मीर में मस्जिदों की प्रोफाइलिंग से नागरिक स्वतंत्रताओं पर बहस तेज

संगिनी घोष विशेष संवाददाता
परिवहन विशेष

श्रीनगर — कश्मीर में मस्जिदों और उनकी प्रबंधन समितियों से जुड़ी जानकारी एकत्र करने के लिए चलाए जा रहे सरकारी अभियान ने स्थानीय लोगों, धार्मिक नेताओं और राजनीतिक वर्गों के बीच गंभीर चिंताएं पैदा कर दी हैं। अधिकारियों के अनुसार इसे एक प्रशासनिक प्रक्रिया बताया जा रहा है, लेकिन कई निवासियों का मानना है कि यह धार्मिक स्वतंत्रता और निजी गोपनीयता पर हस्तक्षेप जैसा महसूस हो रहा है।

बीते एक सप्ताह में कश्मीर घाटी के विभिन्न इलाकों में पुलिस अधिकारियों द्वारा मस्जिद समितियों को विस्तृत प्रश्नावली सौंपी गई है। इन फार्मों में मस्जिदों की जमीन, फंडिंग के स्रोत और संगठनात्मक विवरण के साथ-साथ इमामों, मुअज्जिनों और अन्य मस्जिद कर्मियों की व्यक्तिगत जानकारी भी मांगी गई है। आलोचकों का कहना है कि मांगी जा रही जानकारी सामान्य रिकॉर्ड-रखरखाव से कहीं आगे बढ़कर मस्जिदों को निगरानी के दायरे में लाने जैसी प्रतीत होती है।

स्थानीय निवासियों का कहना है कि इस कदम से समुदायों में बेचैनी और भय का माहौल बन गया है। कई लोगों को आशंका है कि इस प्रोफाइलिंग के जरिए धार्मिक गतिविधियों और उनसे जुड़े व्यक्तियों पर अतिरिक्त नजर रखी जा सकती है। श्रीनगर के एक निवासी ने कहा, "मस्जिदें इबादत और सामाजिक सहयोग के स्थान हैं, निगरानी के नहीं। इस तरह की व्यक्तिगत जानकारी मांगना लोगों को असहज करता है।"

घाटी के धार्मिक संगठनों ने इस प्रक्रिया पर कड़ा विरोध जताया है। उनका कहना है कि मस्जिदें ऐतिहासिक रूप से अपने मामलों का प्रबंधन स्वयं करती रही हैं और उन पर अत्यधिक निगरानी नहीं होनी चाहिए। राजनीतिक नेताओं ने भी इस मुद्दे पर सवाल उठाए हैं और चेतावनी दी है कि इस तरह के कदम राज्य और नागरिकों के बीच भरोसे को कमजोर कर सकते हैं।

हालांकि प्रशासन का कहना है कि यह पहल धार्मिक संपत्तियों और संस्थानों के उचित दस्तावेजीकरण और पारदर्शिता सुनिश्चित करने के लिए की जा रही है। अधिकारियों का दावा है कि इसका धार्मिक गतिविधियों में हस्तक्षेप से कोई लेना-देना नहीं है और यह पूरी तरह प्रशासनिक प्रक्रिया है।

इन आश्वासनों के बावजूद नागरिक अधिकारों से जुड़े विशेषज्ञों का मानना है कि पहले से ही भारी सुरक्षा व्यवस्था वाले क्षेत्र में मस्जिदों की प्रोफाइलिंग लोगों के बीच अलगाव की भावना को और गहरा सकती है। जैसे-जैसे इस मुद्दे पर बहस जारी है, कश्मीर में निजता, धार्मिक स्वतंत्रता और राज्य की निगरानी की सीमाओं को लेकर एक बार फिर व्यापक चर्चा शुरू हो गई है।

सिविल डिफेंस मथुरा की पोस्ट संख्या एक ने की मासिक पोस्ट स्तरीय बैठक

परिवहन विशेष न्यूज

मथुरा: नागरिक सुरक्षा विभाग मथुरा के राजेश यादव उप नियंत्रक एवं प्रभारी अधिकारी अपर जिला अधिकारी (नमामि गंगे) नागरिक सुरक्षा मथुरा के आदेश अनुसार कार्यालय वार्डन पोस्ट संख्या एक की मासिक पोस्ट स्तरीय बैठक का आयोजन ए सी एम बी स्कूल औरंगाबाद पर रखी गई। मासिक बैठक सहायक उप नियंत्रक नीरज श्रीवास्तव के नेतृत्व में हुई बैठक की अध्यक्षता डिविजनल वार्डन भारत भूषण तिवारी एवं पोस्ट वार्डन एवं मास्टर ट्रेनर अशोक यादव के द्वारा की गई बैठक में सहायक उप नियंत्रक द्वारा 23 जनवरी 2026 को इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन मथुरा रिफायनरी में होने वाली मौके ड्रिल एवं ब्लैक आऊट को लेकर चर्चा की गई साथ ही सिविल डिफेंस के डिविजनल वार्डन द्वारा क्षमता निर्माण योजना प्रशिक्षण में ज्यादा से ज्यादा संख्या में भाग लेने के लिए कहा गया। बैठक में सहायक उप नियंत्रक के द्वारा वार्डन एवं स्वयंसेवक को सिविल डिफेंस के स्टेक्चर के बारे में विस्तार से जानकारी दी साथ ही मास्टर ट्रेनर अशोक यादव ने वार्डन पोस्ट संख्या एक के सदस्यों को फायर की बेसिक जानकारी दी। नागरिक सुरक्षा विभाग मथुरा की वार्डन पोस्ट संख्या एक की पोस्ट स्तरीय बैठक में सहायक उप नियंत्रक नीरज श्रीवास्तव,डिविजनल वार्डन भारत भूषण तिवारी, एन डी आर एफ नागपुर एवं मास्टर ट्रेनर पोस्ट संख्या एक के पोस्ट वार्डन, डिप्टी पोस्ट वार्डन विकास सोनी, सैक्टर वार्डन राम सैनी, जितेन्द्र कुमार, गुलशेर,राजेश कुमार, देवेन्द्र, नरेश अग्रवाल, जयवीर, अरुण, कौशल, विनोद, आकाश, सौरव, आदि वार्डन एवं स्वयंसेवको के साथ साथ आपदा मित्रो ने भी बैठक मे भाग लिया।

गांव के दुख सुख में गांव वालों के साथ, तेज सिंह

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली। क्षेत्र नजफगढ़, गांव ईसापुर में प्राचीन मंदिर का विस्तृत रूप से भव्य निर्माण हेतु पावन पवित्र वाले दिन मकर संक्रांति के पावन अवसर पर मंदिर की पावन पवित्र धरती प्रांगण में, हवन और नीव रखने का, धार्मिककार्यक्रम गांववालों की सहमति से गांव के, प्रधान जिले सिंह तथा पूर्व प्रधान तेज सिंह व जात-पात ऊंच-नीच के भेदभाव को दरकिनार कर समाज की सेवा करने वाले समाजसेवी दलबीर सिंह की देखरेख में हुआ। आपको बता दें गांव को खुशहाल बनने के लिए यह धार्मिक कार्यक्रम की शुरुआत हुई। इस धार्मिक कार्यक्रम में, भारतीय जनता पार्टी दिल्ली के कार्यकारिणी सदस्य व भाजपा के भीष्म पितामह, सत्यनारायणडंग को इस धार्मिक कार्यक्रम में आने पर फूल मालाओं व पगड़ी बांधकर गांव के प्रधान जिले सिंह व गांव वालों की तरफ से जोरदार स्वागत पगड़ी बांधकर तथा गुलदस्ता देकर किया गया। इस धार्मिक कार्यक्रम में समाजसेवी दलबीर सिंह का भी पगड़ी बांधकर जोरदार स्वागत किया गया। गांव के प्रधान जिले सिंह ने गांव को प्रगति की ओर ले जाने के लिए दलबीर सिंह को

बहुत सारे सुझाव भी दिए। इस धार्मिक कार्यक्रम से पूरे गांव में खुशी की लहर चल चुकी है। इस धार्मिक कार्यक्रम में हिस्सा लेने वालों में अध्यक्ष जिले सिंह कोषाध्यक्ष सतबीर सिंह, उपकोषाध्यक्ष महेंद्र सिंह के अलावा राज सिंह, सुखबीर सिंह, महावीर दिनेश डागर, राजेश डागर, रविंद्र रिंकू, चांद डागर,बिट्टू मित्र, जय भगवान कालू, धर्मवीर ,चंचल वत्स, जय भगवान, मनजीत ,सूरज ,महेंद्र , निर्मल सिंह के अलावा गांव की महिलाएं तथा आनेको सभी लोगों ने हंसी खुशी से धार्मिक कार्यक्रम में हिस्सा लिया। प्रोग्राम के आखिरी में सत्यनारायण डंग ने कहा कि मैं इस धार्मिककार्य में गांव के प्रधान जिले सिंह तथा गांव के इस धार्मिककार्य करने वाले महिलाओं बुजुर्गों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलूंगा।

स्वदेशी जागरण मंच के राष्ट्रीय सह संगठक सतीश कुमार ने कहा भारत के स्वाभिमान हेतु स्वदेशी को मजबूती से अपनाना जरूरी

परिवहन विशेष न्यूज

देवघर। बैद्यनाथ धाम रेलवे स्टेशन रोड स्थित न्यू ग्रैंड होटल के परिसर में स्वावलंबी भारत अभियान एवं देश की वर्तमान परिस्थितियों पर एक परिचर्चा का कार्यक्रम संपन्न हुआ। मुख्य वक्ता स्वदेशी जागरण मंच के राष्ट्रीय सह संगठक श्री सतीश कुमार थे। उन्होंने बोलते हुए कहा कि हमारा देश विश्व का सबसे युवा देश है। हमारे लोगों में कार्य करने की क्षमता अधिक है और हम निरंतर आर्थिक रूप से आगे मजबूत होते जा रहे हैं और अगले तीन वर्षों में विश्व की तीसरी बड़ी आर्थिक शक्ति बन जाएंगे। उन्होंने भारत के नागरिकों से अपील किया कि वे अमेरिकी सामानों सहित सभी विदेशी सामानों की जगह स्वदेशी समान स्थानीय या अपने देश में बनी हुई वस्तुओं की यथासंभव खरीदारी और उपयोग करें ताकि अमेरिका द्वारा भारत पर मनमाने ढंग से लगाए जा रहे टैरिफ का हम मुंहतोड़ जवाब दे सकें और भारत आर्थिक सांस्कृतिक एवं सामरिक रूप से मजबूत बन सके। उन्होंने कहा कि स्थानीय वस्तुओं की खरीदारी कर हम अपने देश के उद्योग धंधों को प्रगति की राह पर ले जाने के साथ ही बेरोजगारी को दूर करने में सहयोगी बन सकते हैं।

आज के इस कार्यक्रम की अध्यक्षता स्वावलंबी भारत अभियान के प्रांत समन्वयक श्री मनोज कुमार सिंह ने किया।

इस कार्यक्रम में मुख्य रूप से देवघर चेंबर ऑफ कॉमर्स के शिव सर्राफ पंकज मोदी, स्वदेशी जागरण मंच के जिला संयोजक संजय कुमार सिंह, स्वावलंबी भारत अभियान के जिला पूर्णकालीन अमर कुमार सिन्हा ,जिला सह समन्वयक जीवेश कुमार सिंह जिला सहसंयोजक राजीव झा , श्री प्रभाष गुप्ता, ऋतुपति दस, महेश दुबे,अभय कुमार सिंह, आशा झा, माया केशरी, लक्ष्मी देवी, सुप्रिया गुप्ता, खुशबू कुमारी , ऋतुपति दास, गिरीश कुमार सिंह, पंकज भदौरिया, बबलू मित्रा,एस डी मिश्रा, एस झा सहित कई अन्य लोग उपस्थित थे।

हिन्दी के सुप्रसिद्ध समीक्षक एवं साहित्यकार बाबू गुलाब राय का 138 वां जयंती समारोह 22 जनवरी को

वृन्दावन।गौशाला नगर (निकट गोरे दाऊजी मन्दिर) स्थित परमेश्वरी देवी धानुका सरस्वती विद्या मन्दिर में बाबू गुलाब राय स्मृति संस्थान, आगरा के द्वारा हिन्दी के सुप्रसिद्ध समीक्षक एवं साहित्यकार बाबू गुलाब राय का 138 वां जयंती समारोह 22 जनवरी 2026 को मध्याह्न 12 बजे से अपराह्न 02 बजे तक आयोजित किया गया है।

बाबू गुलाब राय स्मृति संस्थान की अध्यक्ष डॉ. शशि तिवारी व उपाध्यक्ष आदर्श नन्दन गुप्ता ने बताया कि साहित्य-संस्कृति मनीषी रयूपी रत्नर डॉ. गोपाल चतुर्वेदी (वृन्दावन) की अध्यक्षता में आयोजित इस समारोह के मुख्य अतिथि माननीय राज्यमंत्री, भारत सरकार प्रोफेसर एस.पी. सिंह बघेल एवं मुख्य वक्ता प्रख्यात लेखक अतुल प्रभाकर होंगे।साथ ही बाबू गुलाब राय की पौत्री डॉ. दीपशिखा इंजीनियर की गरिमामयी

उपस्थिति रहेगी।कार्यक्रम के संयोजक डॉ. प्रणत पाल शर्मा ने सभी से इस समारोह में शामिल होने का अनुरोध किया है।

ठाकुर श्री जानकी वल्लभ मन्दिर में त्रिदिवसीय वार्षिक महोत्सव 22 से 24 जनवरी तक

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। केशीघाट स्थित ठाकुर श्री जानकी वल्लभ मन्दिर में श्रीजानकी वल्लभ लाल महाराज का 51 वां एवं श्रीलक्ष्मीवेंकटेश्वरजी, श्रीहनुमानजी तथा ब्रह्मर्षि देवरहा बाबा की मूर्ति प्रतिष्ठा के उपलक्ष्य में त्रिदिवसीय वार्षिक महोत्सव 22 से 24 जनवरी 2026 पर्यन्त अत्यन्त श्रद्धा एवं धूमधाम के साथ आयोजित किया गया है।

जानकारी देते हुए 'यूपी रत्न' डॉ. गोपाल चतुर्वेदी ने बताया है कि बैकुंठवासी जगदगुरू रामानुजाचार्य श्रीस्वामी भगवानदासाचार्य महाराज की कृपा से जानकी मन्दिर के अध्यक्ष जगदगुरू स्वामी अनिरुद्धाचार्य महाराज के पावन सानिध्य में आयोजित होने वाले इस महोत्सव के अंतर्गत 22 जनवरी को प्रातः काल श्रीलक्ष्मीवेंकटेशजी का तिरूमंजन एवं सायंकाल धर्मग्रंथों का पाठ व कीर्तन आदि होंगे।23 जनवरी को प्रातः काल श्रीजानकी वल्लभजी का तिरूमंजन, अपराह्न 04 से सायं 7 बजे तक रामजी का वात्सल्य गुणर विषय पर वृहद संत-विद्वत सम्मेलन आयोजित होगा। इसके अलावा 24 जनवरी को प्रातः 10 बजे से तदीयाराधन (वृहद भंडारा) सम्पन्न होगा।

संत रघुनाथाचार्य महाराज और गोविंद ब्रह्मचारी महाराज ने सभी भक्तों-श्रद्धालुओं से इस महोत्सव में उपस्थिति होने का अनुरोध किया है।

दवा आपकी है, लेकिन कानून उनका है! विदेश यात्रा करने वाले भारतीय मरीजों के लिए आंखें खोलने वाली चेतावनी।

डॉ. मंथन सेठ,

पिछले हफ्ते, एक खबर मेरे दिमाग में गूंज रही थी। एक आम भारतीय नागरिक, जिसे कमर में बहुत दर्द था, वह भारत में अपने डॉक्टर की लिखी ट्रामाडोल दवा लेकर विदेश चला गया। उसे एयरपोर्ट पर रोका गया। पूछताछ की गई। फिर जांच की गई। और कुछ ही मिनटों में, वह एक "मरीज़" से "आरोपी" बन गया और अब वह व्यक्ति जेल में है। उसने कोई स्मगलिंग नहीं की।

कोई ड्रग सेलिंग नहीं हुई। उस व्यक्ति ने सिर्फ अपना दर्द कम करने के लिए दवा ली थी। लेकिन उस देश में ट्रामाडोल को एक नारकोटिक ड्रग माना जाता है।

इससे एक बहुत ज़रूरी सवाल उठता है, क्या हम सच में जानते हैं कि जो दवा हमारे लिए 'दवा' है, वह विदेश में 'क्राइम' बन सकती है?

देश बदलता है, कानून बदलता है। दवा नहीं। इंडिया में हम दवाइयों को बहुत आसान तरीके से देखते हैं। हम उन्हें डॉक्टर से लिखवा सकते हैं, मेडिकल स्टोर से ले सकते हैं, घर से ले जा सकते हैं, यहाँ तक कि ट्रैवल करते समय अपने बैग में भी रख सकते हैं। लेकिन दिक्कत तब होती है जब हम मान लेते हैं कि इंडिया का लीगल नज़रिया पूरी दुनिया में लागू होता है। असल में, इंडिया का ड्रग कंट्रोल एक जैसा है। UAE, जापान, सिंगापुर, सऊदी अरब, कतर, इंडोनेशिया, हर देश का कानून अलग है। जो दवा यहाँ "Schedule H" या "Prescription drug" है, वह वहाँ "Narcotic" या "Psychotropic substance" हो सकती है। कानून दवा को नहीं, बल्कि रिस्क को देखता है। ऐसी बहुत सी दवाइयाँ हैं। लेकिन, Tramadol, Tramadol इसका एक बड़ा उदाहरण है। यह दवा इंडिया में करोड़ों मरीज़ लेते हैं। लेकिन, UAE, Egypt, Indonesia, Saudi Arabia में यह एक opioid narcotic है। यहाँ तो इसे रखना भी जेल का जुर्म है। आज जो आदमी पकड़ा गया, उसके पास सिर्फ़ 10-15 टैबलेट थीं। कोई धंधा नहीं था। लेकिन उस दवा का होना ही कानून के लिए काफ़ी था। "डॉक्टर ने लिखा है और प्रिस्क्रिप्शन भी है", यह बात विदेश में काम नहीं करती। बहुत से लोग मानते हैं: "मेरे पास प्रिस्क्रिप्शन है, इसलिए कोई दिक्कत नहीं होगी।" लेकिन कई देशों में, प्रिस्क्रिप्शन होने पर भी, दवा को गैर-कानूनी माना जाता है। क्यों? क्योंकि वह देश उस दवा को गलत इस्तेमाल की दवा, गैर-कानूनी व्यापार का खतरा, तस्करी, पब्लिक सेफ्टी के लिए खतरा, एक नशीली दवा के तौर पर देखता है। कानून आपको मरीज़ नहीं, बल्कि एक कंट्रोल्ड चीज़ रखने वाले के तौर पर देखता है।

नई श्रम संहिताएं: मज़दूर वर्ग विषय पर कामरेड विचारों के धनी व वरिष्ठ साथी श्री मनोज गुप्ता (हल्द्वानी-उत्तांचल) से लंबी परिचर्चा

नईश्रमसंहिताएं: मजदूर वर्गपरहमला

उक्त विषय पर गत दिनों एक सेमिनार का आयोजन BTUF के बैनर तले रोटरी भवन, - बरेली में किया गया किया गया,जिसके प्रमुख वक्ता AIIEA के पूर्व अध्यक्ष कामरेड अमानुल्ला खान थे। प्रारंभिक वक्ताओं के बाद सेमिनार के संचालक साथी ने कामरेड अमानुल्ला खान को वक्तव्य देने के लिए आमंत्रित किया।

कामरेड अमानुल्ला खान ने अत्यंत सरल ढंग से लेबर कोड को समझाते हुए, श्रम कानून की जरूरत क्यों है, इस पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि मालिक और मजदूर का रिश्ता बराबरी का रिश्ता नहीं होता है। मजदूर हमेशा कमजोर पक्ष होता है, इसलिए उसको कानून के माध्यम से संरक्षण प्रदान किया जाता है, लेकिन आज उस संरक्षण को छीना जा रहा है। जो चार लेबर कोड सरकार ने बनाए हैं वह मजदूरों के अधिकारों को कमजोर करते हैं

सरकार कहती है की अर्थव्यवस्था को विकसित करने के लिए ये लेबर कोड जरूरी हैं। वह यह भी कहती है कि देश में बेरोजगारी इसलिए है क्योंकि मालिकों के पास मजदूरों को निकालने का अधिकार नहीं है। सरकार की यह सोच पूरी तरह से मालिकों के पक्ष में है।

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद यूरोप की अर्थव्यवस्था बर्बादी की हालत में थी उसको ठीक करने के लिए और मजदूरों के दशा सुधारने के लिए सरकार को भूमिका निभानी है, इसलिए सरकारी हस्तक्षेप और नियंत्रण को जरूरी माना गया, लेकिन 1970 के बाद तेल संकट और अरब इजरायल की जंग ने परिस्थितियों में परिवर्तन ला दिया, वाशिंगटन सहमति का निर्माण किया गया, जिसको अमेरिका में रोनाल्ड रीगन और इंग्लैंड में मारग्रेट थैचर ने निर्दयतापूर्वक लागू किया और मजदूर आंदोलन का दमन किया। थैचर का कहना था कि रोजगार पैदा करना सरकार का काम नहीं है, संपत्ति का वितरण बाजार अपने आप कर लेगा। भारत में भी 1991 से इसे लागू करने की शुरुआत हुई। दुनिया के श्रमिक वर्ग का यह दुर्भाग्य था कि इसी समय कम्युनिस्ट देश सोवियत संघ का विघटन हो गया और दुनिया एक-ध्रुवीय हो गई। जो नई विश्व व्यवस्था बनी उसके तहत दुनिया भर के मजदूरों के हकों पर कुठाराघात होना लाजिमी था

भारत में द्वितीय श्रम आयोग की स्थापना अटल बिहारी वाजपेई के प्रधानमंत्री काल में हुई। इन तथाकथित श्रम सुधारो की सिफारिश उस श्रम आयोग के द्वारा ही की गई थी। देश के मजदूर आंदोलन द्वारा किए गए पुरजोर विरोध के कारण लगभग दो दशक तक इनको लागू नहीं किया जा सका, परंतु अब सरकार उनको लागू करने में सफल हो गई है।

कामरेड अमानुल्लाह खान ने इन चार श्रम संहिताओं को समझाते हुए क्रमवार इनके दुष्परिणाम सामने रखे।

1. औद्योगिक संबंध संहिता 2020 यूनियन बनाना काफी मुश्किल होगा संस्थान में कार्यरत कुल कार्यबल का 10% यूनियन का गठन करने के लिए आवश्यक होंगे। बाहरी लोग यूनियन नहीं चला पाएंगे। यदि होंगे तो उनकी भूमिका काफी सीमित होगी। 300 से कम मजदूर होने पर छंटनी के लिए सरकार की मंजूरी की आवश्यकता नहीं होगी। इस प्रावधान से देश के 90% से अधिक कारखाने और संस्थानों में छंटनी के लिए मलिक को अनुमति की मंजूरी की आवश्यकता नहीं रहेगी। मालिकों को जब चाहे नौकरी से निकालने का पूरा हक होगा। इससे मजदूर में असुरक्षा की भावना गहरी होगी एवं उनका शोषण आसान होगा। मैनेजमेंट से वार्ता के लिए कम से कम 51% मजदूरों का समर्थन जरूरी होगा। यदि नहीं है तो मैनेजमेंट एक नेगोशिएटिंग कमेटी बनाएगा। यूनियन चाहती है कि यूनियन की मान्यता कर्मचारियों के मध्य गुप्त मतदान से हो लेकिन इस विधि का कोई जिक्र इस श्रम संहिता में नहीं है।

2. वेतन संहिता 2019 राज्य के नीति निर्देशक तत्वों के अनुसार ट्रेड यूनियन आंदोलन की मांग है कि गरिमा पूर्ण जीवन जीने के योग्य मजदूरी दी जाए और इस आधार पर मजदूरी तय की जाए। सरकार ने इनकार कर दिया। सरकार ने floor level मजदूरी 178 रुपए प्रतिदिन के हिसाब से तय की है। कई राज्य सरकारों में न्यूनतम दैनिक मजदूरी इससे अधिक है जैसे केरल में ₹700 तमिलनाडु और कर्नाटक और अन्य कई राज्यों में ₹400 से लेकर ₹600 तक न्यूनतम दैनिक मजदूरी है। अब इन राज्य सरकारों पर न्यूनतम मजदूरी की दर कम करने का या और न बढ़ाने का दबाव होगा।

3. सामाजिक सुरक्षा संहिता 2020 सामाजिक सुरक्षा संहिता लागू करते समय गिग वर्कर्स की भलाई का बहुत बखान किया गया है, लेकिन सरकार ने तथाकथित श्रम सुधारो को लागू करते समय इनको वर्कर ही नहीं माना है बल्कि डिलीवरी पार्टनर कहा है और उनके कल्याण के लिए कोई फंड भी आवंटित नहीं किया गया है।सरकार ने आंगनबाड़ी, मिड डे मील वर्कर, आशा वर्कर आदि को स्कीम वर्कर माना है लेकिन वर्कर का दर्जा नहीं दिया है। सरकार इनको मानदेय देगी ना कि मजदूरी। ऐसी दशा में वर्कर को मिलने वाले लाभ या सामाजिक सुरक्षा उनको उपलब्ध नहीं होगी।

*संस्थान में 10 वर्कर से कम होने पर ESI का लाभ नहीं मिलेगा और 20 वर्कर से कम होने पर पीएफ की सुविधा नहीं होगी।

4. व्यावसायिक सुरक्षा एवं स्वास्थ्य संहिता 2020 कारखाने में कोई दुर्घटना होने पर मालिक की कोई जिम्मेदारी नहीं होगी। हमारे सामने भोपाल गैस कांड का उदाहरण सामने है। अब तो परमाणु ऊर्जा क्षेत्र का भी निजीकरण किया जा चुका है। जरा सी चूक होने पर हजारों वर्करों और नागरिकों की जान जा सकती है और उनका जीवन पर्यंत उसके परिणाम भुगतने पड़ सकते हैं। यह संहिता काम के घंटे 8 से बढ़ाकर 12 घंटे तक करने की अनुमति देती है।

*उपरोक्त चारों श्रम संहिताओं का एकमात्र उद्देश्य मजदूरों के संघर्षों को कमजोर करना है। देश के ट्रेड यूनियन आंदोलन ने इसका प्रखर विरोध किया है, लेकिन सरकार ने कोरोना काल में अपने बहुमत का इस्तेमाल करते हुए विपक्षी सांसदों को सदन से बाहर निकाल कर बिना किसी चर्चा के इनको पारित कर लिया है और 57 करोड मजदूरों के भविष्य का फैसला दस मिनट में कर दिया गया।

*सरकार ने ट्रेड यूनियनों के साथ कोई चर्चा नहीं की। 2015 के बाद कोई श्रम सम्मेलन आयोजित नहीं किया, जबकि इससे पूर्व लगभग प्रतिवर्ष श्रम सम्मेलन आयोजित किया जाता था जिसमें श्रमिक संगठनों के साथ श्रमिकों के मुद्दों पर चर्चा की जाती थी।

*यह श्रम संहिताएं संविधान की कसौटी पर खरी नहीं उतरती हैं। संविधान का अनुच्छेद 14 सबको समानता का अधिकार देता है, अनुच्छेद 19 संगठन बनाने की आजादी देता है, अनुच्छेद 21 गरिमा पूर्ण जीवन जीने का अधिकार देता है। इस प्रकार ये संहितायें भारत के संविधान को भी नजरंदाज करती हैं। भारत में व्याप्त असमानता पर जारी की गई एक रिपोर्ट के अनुसार 50% जनता की मासिक आमदनी 8400 रूपये है। कोई नागरिक इतने कम आय में कैसे एक मानवीय जीवन जी सकता है ये श्रम संहितायें इस असमानता को संबोधित नहीं करती हैं। संविधान के नीति निर्देशक अध्याय में राज्य को असमानता कम करने का दायित्व सौंपा गया है, लेकिन यह श्रम संहितायें इस असमानता को और ज्यादा बढ़ाने वाली हैं।

कॉमरेड अमानुल्लाह खान ने बताया कि ट्रेड यूनियन आंदोलन चुप नहीं है। हमने एक आंदोलन तैयार किया है। अभी हाल में ही में विश्व के कुछ प्रमुख अर्थशास्त्रियों ने लंदन में एक बैठक की और एक वैकल्पिक दृष्टिकोण सामने रखा। उसके आधार पर हमने संविधान में संशोधन की मांग की है जिसके अनुसार स्वास्थ्य का अधिकार, शिक्षा का अधिकार, रोजगार का अधिकार, भोजन की सुरक्षा का अधिकार और एक गैर अंशदाई सार्वभौमिक पेंशन का अधिकार मौलिक अधिकार बनाए जाएं। इसके जवाब में सरकार ने कहा इसके लिए पैसा नहीं है। हमने सुझाव दिया है कि देश के 1% सबसे अधिक धनी लोगों पर दो प्रतिशत की दर से संपत्ति कर लगाया जाए तथा उत्तराधिकार कर लगाया जाए तो आवश्यक धनराशि की व्यवस्था आसानी से हो जाएगी। तमाम विकसित देशों में उत्तराधिकार कर लागू है, लेकिन भारत में ऐसा कोई कर नहीं है। देश भर के ट्रेड यूनियन कार्यकर्ताओं का यह दायित्व है कि इस मांग को जनता के बीच लेकर जाएं और एक व्यापक एकता का निर्माण करें लेकिन यह काम आसान नहीं है सरकार इसे आसानी से सफल नहीं होने देगी और धर्म के आधार पर, भाषा के आधार पर, क्षेत्र के आधार पर मजदूरों को बांटने की कोशिश करेगी इसलिए किसी भी विभाजनकारी एजेंडे को नकारते हुए, एक बड़ी एकता कायम करके ही इस लड़ाई को लड़ा जा सकता है। उन्होंने उम्मीद जाहिर की कि बरेली ट्रेड यूनियन फेडरेशन द्वारा आयोजित यह सेमिनार उस दिशा में एक मील का पत्थर साबित होगी।

सेमिनार को BTUF के अध्यक्ष, महामंत्री साथी संजीव मेहरोत्रा, उपाध्यक्ष कामरेड गीता शांत एवं अन्य अनेक विभागों के कर्मचारी प्रतिनिधियों द्वारा भी संबोधित किया गया।

सेमिनार के अंत में एक Question - Answer Session भी था जिसमें विभिन्न प्रतिभागियों ने सवाल पूछे और कामरेड अमानुल्लाह खान ने उनके जवाब दिये।

सेमिनार में लगभग 170 प्रतिभागी शामिल थे। कार्यक्रम के प्रारंभ और अंत में प्रगतिशील एकता मंच की ओर से क्रांतिकारी गीत भी प्रस्तुत किए गए। सेमिनार में NCZIEF के अध्यक्ष कामरेड संजीव शर्मा एवं महामंत्री साथी राजीव निगम कोषाध्यक्ष साथी राकेश कनौजिया जी की गरिमामयी उपस्थिति रही। इसके अतिरिक्त कानपुर मण्डल के महामंत्री साथी मनोज जी, व संयुक्त मंत्री साथी चेतन जी एवं हल्द्वानी मण्डल के पांच साथी उपस्थित थे।

बरेली ट्रेड यूनियन फेडरेशन द्वारा आयोजित यह सेमिनार अत्यंत सफल रहा। बीमा कर्मी संघ बरेली डिवीजन BTUF का संस्थापक एवं एक महत्वपूर्ण घटक है, अतः BTUF के साथ साथ BKSBD का नेतृत्व और सभी कार्यकर्ता इस सफल आयोजन के लिये बधाई के पात्र हैं!

दुल्हेड़ा में जिला प्रशासन का रात्रि ठहराव, डीसी ने किया जनसंवाद

आपसी भाईचारे के साथ सामाजिक सरोकारों के कार्य करें ग्रामीण: डीसी, जन समस्याओं का समाधान हमारी प्राथमिकता

विभागीय कैंपों से ग्रामीणों को मिली योजनाओं की जानकारी
ग्रामीण बोले – प्रशासन का रात्रि ठहराव प्रदेश सरकार का सराहनीय कदम

परिवहन विशेष न्यूज

बहादुरगढ़। हरियाणा सरकार की 'रात्रि ठहराव' पहल के तहत सोमवार को दुल्हेड़ा गांव में जिला प्रशासन का रात्रि ठहराव कार्यक्रम आयोजित हुआ। डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने गांव के राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में ग्रामीणों से सीधा संवाद कर उनकी समस्याएं सुनीं और मौके पर ही अधिकारियों को समाधान के निर्देश दिए। इस दौरान जिला प्रशासन के सभी विभागों के अधिकारी मौजूद रहे। विभागों ने शिविर लगाकर ग्रामीणों को सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं की जानकारी दी।

रात्रि ठहराव कार्यक्रम में पहुंचने पर डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल का ग्राम पंचायत द्वारा स्वागत किया गया। इसके बाद उपायुक्त ने विभिन्न विभागों द्वारा लगाए गए कैंप का निरीक्षण किया। रात्रि ठहराव कार्यक्रम में सरपंच ने ग्राम पंचायत दुल्हेड़ा की तरफ से और सरपंच छुड़ानी ने अपने गांव का मांग पत्र डीसी के समक्ष पढ़ा। उपायुक्त ने गांव के विकास व उन्नति के लिए समस्याओं को दूर करते हुए सरकारी योजनाओं का लाभ हर पात्र तक सुनिश्चित करने का आश्वासन दिया।

डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने कहा कि ग्रामीण बेझिझक होकर अपनी समस्याओं को जिला प्रशासन के समक्ष रखें। रात्रि ठहराव के दौरान ग्रामीण महिलाओं की भी सक्रिय भागीदारी रही और उन्होंने अपनी समस्याओं के बारे में जिला प्रशासन के अधिकारियों को अवगत करवाया। डीसी ने कहा कि सरकार के दिशा-निर्देशन में जिला प्रशासन जनता की सेवा के लिए तत्पर है। रात्रि ठहराव कार्यक्रम के तहत प्रशासन खुद गांवों में पहुंचकर लोगों की समस्याओं को प्राथमिकता के आधार पर हल कर रहा है। डीसी ने ग्रामीणों को आश्वस्त किया कि हर समस्या का समाधान किया जाएगा और प्रशासन आपके लिए है।

रात्रि ठहराव में ग्रामीणों की सक्रिय भागीदारी, समस्याओं का हुआ मौके पर समाधान

रात्रि ठहराव में ग्रामीणों की सक्रिय भागीदारी रही। ग्रामीणों ने अपनी व्यक्तिगत और सार्वजनिक समस्याएं डीसी के समक्ष रखीं, जिनमें बिजली, सडक़, स्वच्छता, पेयजल, शिक्षा से जुड़ी समस्याएं प्रमुख रहीं। उपायुक्त ने संबंधित विभागों को निर्देश दिए कि समस्याओं का शीघ्र समाधान किया जाए और ग्रामीणों को योजनाओं का पूरा लाभ मिले। डीसी ने कहा कि जिन समस्याओं का मौके पर समाधान संभव था उनका किया गया है व अन्य समस्याओं के लिए अधिकारियों को तय समय में समाधान करने के निर्देश दिए गए हैं।

रात्रि ठहराव प्रदेश सरकार का बेहतरीन कार्य

डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने कहा कि मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी के नेतृत्व में प्रदेश सरकार ने रात्रि ठहराव कार्यक्रम शुरु किया है जो एक काफी अच्छी पहल है जिससे ग्रामीणों को सीधे जिला प्रशासन से संवाद का बेहतरीन अवसर मिलता है। इस दौरान जो भी ग्रामीणों की समस्याएं दर्ज होती हैं उनका पूरी गंभीरता के साथ समाधान किया जाएगा। रात्रि ठहराव के दौरान शिकायतों की मॉनिटरिंग की जा रही है ताकि ग्रामीणों की संतुष्टि हो। उन्होंने रात्रि ठहराव में मौजूद सभी अधिकारियों को ग्रामीणों की शिकायतों के त्वरित व प्रभावी समाधान के निर्देश दिए।

डीसी ने कहा कि ग्रामीण आपस में मिलजुलकर आपसी भाईचारे के साथ सामाजिक सरोकारों के कार्य करें, आधी समस्याओं का समाधान अपने आप हो जाएगा और युवा पीढ़ी को अच्छे संस्कार मिलेंगे। उन्होंने सभी किसानों से अपनी फॉर्मर आईडी बनवाने का भी आह्वान किया।

युवा नशे से दूर रहें: मिश्रा

डीसीपी मंयक मिश्रा ने कहा कि युवा गांव के विकास में योगदान दें। युवा नशे से दूर रहें व अपने सर्वांगीण विकास पर फोकस करें। युवा खेलों से जुड़े। नशे के जो आदी हैं वह भी नशे को छोडक़र अच्छा नागरिक बन सकता है। उन्होंने कहा कि नशे के बारे में कोई भी ग्रामीण पुलिस को सूचना दे सकते हैं। सूचना देने वाले की पहचान पूरी तरह से गोपनीय रखी जाएगी। उन्होंने कहा कि हमने नशा मुक्त माहौल बनाना है, किसी को सजा देना नहीं। हां, जो लोग नशे का कारोबार करते हैं उनकी सूचना पुलिस को दें ऐसे समाज विरोधी लोगों के साथ पूरी सख्ती से निपटा जाएगा। ग्रामीणों को साइबर क्राइम को लेकर भी जागरूक किया।

विभागों के कैंपों का ग्रामीणों ने उठाया लाभ

दुल्हेड़ा गांव में आयोजित रात्रि ठहराव कार्यक्रम के दौरान जिला प्रशासन ने विभिन्न विभागों के सहयोग से ग्रामीणों को जनकल्याणकारी योजनाओं की जानकारी दी। इस अवसर पर स्वास्थ्य विभाग ने निःशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर लगाया, जिसमें बड़ी संख्या में ग्रामीणों ने अपनी जांच करवाई।

इसके अलावा, रोडवेज, कृषि एवं किसान कल्याण, जनस्वास्थ्य, खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति, ग्रामीण विकास, महिला एवं बाल विकास, तथा यूएचबीवीएन सहित कई विभागों ने अपने कैंप लगाए। अधिकारियों ने ग्रामीणों को योजनाओं का लाभ लेने की प्रक्रिया समझाई।

इस दौरान जिला सूचना एवं जनसंपर्क विभाग की भजन मंडली ने लोकगीतों के माध्यम से सरकार की योजनाओं का प्रचार-प्रसार किया।

रात्रि ठहराव के दौरान डीसीपी मंयक मिश्रा, एडीसी जगनिवास , एसडीएम अभिनव सिवाच आईएएस, सीईओ मनीष फोगाट, डीआरओ मनबीर सांगवान, डीडीपीओ निशा तंवर, सीएमओ डॉ मंजु, डीआईपीआरओ सतीश कुमार, बीडीपीओ सुरेंद्र खत्री, दुलेहड़ा बारह के प्रधान उमेद सिंह देशवाल, सरपंच दुल्हेड़ा अमित देशवाल, सरपंच छुड़ानी विनोद कुमार सहित विभिन्न विभागों के अधिकारी मौजूद रहे।

कुरुक्षेत्र में 6 से 8 फरवरी तक लगेगी राज्य स्तरीय पशुधन प्रदर्शनी

जिला के पशुपालकों के लिए मेला के लिए बसों की सुविधा

झज्जर। कुरुक्षेत्र स्थित कुरुक्षेत्र विकास बोर्ड मेला ग्राउंड में आगामी 06 फरवरी से 08 फरवरी तक तीन दिवसीय 41वीं राज्य स्तरीय पशुधन प्रदर्शनी का आयोजन किया जाएगा। इस राज्य स्तरीय प्रदर्शनी में प्रदेश भर से लगभग 1500 उन्नत नस्ल के पशु विभिन्न श्रेणियों में भाग लेंगे। प्रदर्शनी का मुख्य उद्देश्य उत्तम नस्ल के पशुओं का प्रदर्शन कर नस्ल सुधार के लिए पशुपालकों को प्रेरित करना, दूध उत्पादन में वृद्धि कर किसानों की आय बढ़ाना है। यह जानकारी पशुपालन एवं डेयरिंग विभाग के उपनिदेशक डॉ. मनीष डबास ने दी। उन्होंने बताया कि इस संबंध में विभाग के सभी अधिकारियों को निर्देश दिए गए हैं कि वे अपने-अपने क्षेत्रों में पशुपालकों से संपर्क कर आयोजन की तैयारियों में जुट जाएं। उन्होंने पशुपालकों से भी आग्रह किया कि वे अपने उत्तम नस्ल के पशुओं का विवरण संबंधित पशु चिकित्सक को उपलब्ध कराएं तथा पशु प्रवेश याचिका समय रहते पूर्ण करें।

उन्होंने बताया कि प्रदर्शनी में मुर्राह भैंस, देशी नस्ल की गायें (हरियाणा, साहीवाल, गिर, थारपारकर, राठी, बेलाही), क्रॉस ब्रीड गाय, घोड़े व गधे, ऊंट, भेड़ (नाली नस्ल, हिसार डेल नस्ल), बकरी एवं गौशाला पशु भाग लेंगे। प्रदर्शनी में चयनित सर्वश्रेष्ठ पशुओं को नकद पुरस्कार एवं प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया जाएगा।

पशु मालिकों को प्रदर्शनी में भाग लेने के लिए अपने साथ आधार कार्ड, पैन कार्ड, बैंक पासबुक, कैंसिल चैक तथा परिवार पहचान पत्र (पीपीपी आईडी) अनिवार्य रूप से लाने होंगे। उन्होंने बताया कि पशुपालन विभाग झज्जर द्वारा पशुपालकों को प्रदर्शनी स्थल तक ले जाने व वापस लाने के लिए प्रतिदिन 10 बसों की व्यवस्था की गई है। उन्होंने जिला के पशुपालकों से प्रदर्शनी में बढ़चढ़ कर भाग लेने का आह्वान किया।

झज्जर में बिजली उपभोक्ताओं की शिकायतों की सुनवाई के लिए बिजली अदालत आज मंगलवार (20 जनवरी) को

-झज्जर में होगी बिजली अदालत की बैठक

झज्जर, 19 जनवरी। उपभोक्ताओं की बिजली संबंधी समस्याओं के त्वरित समाधान के लिए उत्तर हरियाणा बिजली वितरण निगम (यूएचबीवीएन) द्वारा अधीक्षण अभियंता कार्यालय में आज 20 जनवरी मंगलवार को बिजली अदालत व उपभोक्ता कष्ट निवारण फोरम की बैठक का आयोजन किया जाएगा। बिजली अदालत तथा उपभोक्ता कष्ट निवारण फोरम की बैठक का आयोजन सुबह 11 बजे से दोपहर दो बजे तक किया जाएगा।

यह अदालत फोरम के चेयरमैन एवं बिजली निगम के अधीक्षण अभियंता ऑप्रेशन सर्कल झज्जर की अध्यक्षता में होगी। प्रवक्ता ने जानकारी देते हुए बताया कि बिजली उपभोक्ताओं की शिकायतों को झज्जर कार्यालय में सुना जाएगा। इस दौरान बिजली बिल, कनेक्शन और अन्य तकनीकी समस्याओं से जुड़े परिवादों की समीक्षा की जाएगी।

यदि कोई उपभोक्ता कार्यकारी अभियंता या एसडीओ की कार्यवाही से संतुष्ट नहीं है, तो वह चेयरमैन और अधीक्षण अभियंता के समक्ष अपनी बात रख सकता है।

जिला स्तरीय समाधान शिविर में डीसी ने नागरिकों से किया सीधा संवाद, सुनी समस्याएं

- डीसी के अधिकारियों को स्पष्ट निर्देश
- समस्याओं के समाधान में अनावश्यक देरी ना करें।

झज्जर, 19 जनवरी। लघु सचिवालय स्थित कॉन्फ्रेंस हॉल में सोमवार को आयोजित समाधान शिविर में डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने नागरिकों से सीधे संवाद करते हुए उनकी विभिन्न समस्याएँ सुनीं। शिविर में 8 नागरिकों ने बिजली, पानी, सडक़, राजस्व, सामाजिक सुरक्षा योजनाओं, पेंशन, पारिवारिक पहचान पत्र, भूमि संबंधी विवाद, राशन कार्ड आदि से जुड़ी शिकायतें दर्ज कराई गईं।

डीसी ने संबंधित विभागों के अधिकारियों को निर्देश दिया कि प्रत्येक शिकायत का समयबद्ध और गुणवतापूर्ण समाधान सुनिश्चित किया जाए। कई मामलों में विभागीय अधिकारियों से मौके पर ही रिपोर्ट लेकर तत्काल निस्तारण भी कराया गया। उन्होंने कहा कि समाधान शिविरों का उद्देश्य लोगों को सरकारी दफ्तरों के चक्कर से राहत दिलाना और समस्याओं का एक ही स्थान पर समाधान करना है। डीसी ने अधिकारियों को स्पष्ट निर्देश दिए कि किसी भी शिकायत के समाधान में अनावश्यक देरी न हो। समस्याओं के समाधान में पारदर्शिता व जवाबदेही सुनिश्चित हो। नागरिकों ने समाधान शिविर के आयोजन को लेकर सरकार की सराहना की।

वहीं बहादुरगढ़, बादली व बेरी में भी उपमण्डल स्तरीय समाधान शिविर आयोजित किए गए। जिनमें नागरिकों ने अपनी शिकायतें दर्ज करवाई।

इस अवसर पर जिला स्तरीय समाधान शिविर में एडीसी जगनिवास, एसडीएम झज्जर अंकित कुमार चौकसे आईएएस, सीटीएम नमिता कुमारी, सीईओ जिला परिषद मनीष फोगाट, डीआरओ मनबीर, डीडीपीओ निशा तंवर, एसीपी अखिल कुमार, कष्ट निवारण समिति के सदस्य सुनील जांगड़ा, सीएम विंडो एमीनेंट पर्सन राजेश कुमार व एक्सईन लोक निर्माण विभाग सुमित कुमार सहित विभिन्न विभागों के अधिकारी मौजूद रहे।

एग्री स्टैक फार्मर आईडी को लेकर किसानों में दिख रहा उत्साह : डीसी

गांव-गांव जागरूकता शिविर लगाकर किसानों को फार्मर आईडी के लाभों की जानकारी दे रहे अधिकारी व कर्मचारी

झज्जर, 19 जनवरी। सरकार के फ्लैगशिप कार्यक्रम डिजिटल एग्री स्टैक फार्मर आईडी अभियान को लेकर जिले के किसानों में उत्साह देखने को मिल रहा है। डीसी स्वप्निल रविन्द्र पाटिल ने बताया कि इस विशेष अभियान के अंतर्गत अब तक 42 हजार 628 किसानों की फार्मर आईडी सफलतापूर्वक बनाई जा चुकी है। यह जिले के लिए एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है और इससे किसानों को भविष्य में कृषि से जुड़ी विभिन्न सरकारी योजनाओं का सीधा लाभ मिलेगा।

डीसी ने कहा कि फार्मर आईडी किसानों की एक डिजिटल पहचान है, जिसके माध्यम से उन्हें फसल बीमा योजना, किसान सम्मान निधि, सब्सिडी, बीज व खाद वितरण, ऋण सुविधाओं सहित अन्य कृषि कल्याणकारी योजनाओं का लाभ पारदर्शी तरीके से प्राप्त होगा। उन्होंने बताया कि इस आईडी के जरिए किसानों का पूरा कृषि रिकॉर्ड एक ही प्लेटफॉर्म पर उपलब्ध रहेगा, जिससे योजनाओं के क्रियान्वयन में भी तेजी आएगी।

डीसी ने बताया कि जिले के सभी खंडों और गांवों में जागरूकता कैंपों का आयोजन किया जा रहा है। इन कैंपों के माध्यम से अधिकारी व कर्मचारी किसानों को फार्मर आईडी बनवाने की प्रक्रिया, आवश्यक दस्तावेज और इसके लाभों की विस्तार से जानकारी दे रहे हैं। साथ ही मौके पर ही किसानों की आईडी भी बनाई जा रही है, जिससे उन्हें किसी प्रकार की परेशानी का सामना न करना पड़े।

उन्होंने कहा कि जिला प्रशासन का लक्ष्य है कि जिले के सभी पात्र किसानों की फार्मर आईडी शत-प्रतिशत बनाई जाए। इसके लिए संबंधित विभागों को आपसी समन्वय के साथ कार्य करने के निर्देश दिए गए हैं। उपायुक्त ने किसानों से भी अपील की कि वे समय निकालकर नजदीकी कैंप या कॉमन सर्विस सेंटर पर पहुंचकर अपनी फार्मर आईडी अवश्य बनवाएं, ताकि वे सरकार की योजनाओं का पूरा लाभ उठा सकें। डीसी ने बताया कि किसानों के पूर्ण सहयोग और प्रशासन की सक्रिय भूमिका से जिलाभर में शत प्रतिशत एग्री स्टैक फार्मर आईडी बनाने के अभियान को बल मिलेगा।

स्वास्थ्य मंत्रालय भारत सरकार से नागरिक अस्पताल बहादुरगढ़ को गुणवत्ता प्रमाणन प्रदान

राष्ट्रांऊीय स्वास्थ्य प्रणाली संसाधन केंद्र के तीन प्रमुख गुणवत्ता कार्यक्रमों में नागरिक अस्पताल बहादुरगढ़ को राष्ट्रांऊीय स्तर पर बड़ी उपलब्धि
– स्वास्थ्य विभाग के साथ साथ जिला के लिए भी गर्व की बात : डॉ. मंजु कादियान

परिवहन विशेष न्यूज, बहादुरगढ़। नागरिक अस्पताल, बहादुरगढ़ ने सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाओं में उत्कृष्टता का नया मानदंड स्थापित किया है। अस्पताल को राष्ट्रांऊीय स्वास्थ्य प्रणाली संसाधन केंद्र, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा संचालित तीन राष्ट्रांऊीय गुणवत्ता कार्यक्रमों—राष्ट्रांऊीय गुणवत्ता आश्वासन मानक, लक्ष्य और मुस्कान—के अंतर्गत गुणवत्ता प्रमाणन प्राप्त हुआ है। नागरिक अस्पताल बहादुरगढ़ की प्रिंसिपल मेडिकल ऑफिसर डॉ. मंजु कादियान ने यह जानकारी दी। उन्होंने कहा कि स्वास्थ्य विभाग के साथ-साथ जिला के लिए भी यह बहुत ही गर्व की बात है।

उन्होंने बताया कि नगारिक अस्पताल बहादुरगढ़ का राष्ट्रांऊीय स्तर का बाह्य मूल्यांकन 17 से 19 नवम्बर 2025 तक राष्ट्रांऊीय स्वास्थ्य प्रणाली संसाधन केंद्र द्वारा नामित विशेषज्ञ टीम द्वारा किया गया। व्यापक जांच के बाद अस्पताल ने सभी निर्धारित गुणवत्ता मानकों को सफलतापूर्वक पूरा किया।

डॉ. मंजु कादियान ने बताया कि राष्ट्रांऊीय गुणवत्ता आश्वासन मानक कार्यक्रम के तहत अस्पताल के 15 विभागों का मूल्यांकन किया गया, जिसमें नागरिक अस्पताल, बहादुरगढ़ ने 89.05 प्रतिशत का समग्र स्कोर प्राप्त किया और सभी मानकों पर खरा उतरा। उन्होंने बताया कि लक्ष्य कार्यक्रम, जो मातृ एवं नवजात देखभाल में सुधार पर केंद्रित है, के अंतर्गत लेबर रूम एवं मैटरनिटी ऑपरेशन थियेटर का मूल्यांकन किया गया। जिसमें लेबर रूम ने 89.16 प्रतिशत और मैटरनिटी ऑपरेशन थिएटर ने 88.80 प्रतिशत स्कोर प्राप्त कर गुणवत्ता प्रमाणन हासिल किया।

वहीं मुस्कान कार्यक्रम, जो शिशु एवं बाल रोग सेवाओं को अधिक सुरक्षित एवं बाल-अनुकूल बनाने पर केंद्रित है, के तहत पीडियाट्रिक ओपीडी, पीडियाट्रिक वार्ड और विशेष नवजात शिशु देखभाल इकाई का मूल्यांकन किया गया। संस्थान की इन सेवाओं ने 88.99 प्रतिशत का समग्र स्कोर प्राप्त कर प्रमाणन अर्जित किया।

डॉ. मंजु कादियान ने कहा कि यह उपलब्धि सभी चिकित्सकों, नर्सिंग स्टाफ, पैरामेडिकल टीम, प्रशासनिक अधिकारियों एवं सहयोगी कर्मियों की सतत मेहनत, अनुशासन और टीम भावना का परिणाम है। साथ ही जिला एवं राज्य स्तरीय वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा दिए गए सहयोग और मार्गदर्शन के लिए आभार व्यक्त किया गया।

उन्होंने कहा कि यह प्रमाणन न केवल अब तक किए गए प्रयासों की पहचान है, बल्कि भविष्य में भी गुणवत्ता, रोगी सुरक्षा और जन-केंद्रित सेवाओं को और मजबूत करने की जिम्मेदारी को बढ़ाता है। नागरिक अस्पताल, बहादुरगढ़ ने राष्ट्रांऊीय गुणवत्ता मानकों को बनाए रखने और लगातार बेहतर प्रदर्शन के लिए प्रतिबद्धता दोहराई है। अस्पताल के प्रशासनिक अधिकारी डॉ देवेंद्र मेघा ने कहा कि मरीजों का नागरिक अस्पताल और सरकारी स्वास्थ्य सेवाओं के प्रति विश्वास और बढ़ेगा।

कानपुर : पुलिस की लापरवाही से तीसरे दिन हुआ हत्या की शिकार विवाहिता का पोस्टमार्टम

सुनील बाजपेई

कानपुर। पुलिस की लापरवाही अब उन लोगों को भी भारी पड़ रही है ,जिनके परिजन हत्या के रूप में मौत का शिकार बन चुके हैं। जिसका ज्वलंत उदाहरण है महाराजपुर में अवैध संबंधों के शक में हत्या का शिकार बनाई गई विवाहिता का मामला। उसके शव का पोस्टमार्टम घटना के तीन दिन बाद आज सोमवार को किया गया। उसकी तीन दिन पहले उसके पति ने गला दबाकर हत्या कर दी थी। कुल मिलाकर हत्या के इस मामले में मामले में पुलिस की एक बड़ी लापरवाही देखने को मिली। घटना के तीसरे दिन पुलिस ने मृतका श्वेता का पोस्टमार्टम कराया, इस दौरान बॉडी डिकंपोज होने लगी।

जानकारी देते हुए मृतका के चचेरे भाई आशीष सिंह ने बताया कि उन्होंने पुलिस से पंचायतनामा भरने की बात कही, तो पुलिस ने शहर में वीआईपी मूवमेंट में हवाला दिया और रविवार देर शाम पंचायतनामा भरकर भेजा, लेकिन देर होने के कारण पोस्टमार्टम नहीं सका ,जिससे परिजन पूरे दिन भटकते रहे।

इस दौरान गाजीपुर के मोहनपुर गांव निवासी श्वेता की मां ऊषा देवी ने कहा कि हत्यारोपी सचिन झूठ बोल रहा था कि बेटी के साथ कमरे में लड़के मौजूद थे। उन्होंने आरोप लगाया कि सचिन व उसके परिजन दहेज में 10 लाख रुपए की मांग करते थे। दहेज न देने पर सचिन ने परिजनों के साथ मिलकर बेटी को मौत के घाट उतार दिया। ऊषा ने बताया कि सचिन उनकी बेटी को खाने तक के लिए मोहताज रखता था।

मृतका की मां ने बिलखते हुए बताया कि बेटी चोरी छिपे उन्हें इंस्टाग्राम के जरिए कॉल करती थी। दामाद सचिन हम लोगों से बात करने को मना करता था, 10 जनवरी को बेटी से बात करने पर सचिन ने श्वेता की बेरहमी से पिटाई की थी।

याद रहे की 3 दिन पहले अवैध संबंधों में शक में सचिन ने पत्नी श्वेता की गला दबाकर हत्या कर दी थी। पत्नी की हत्या की इस घटना को अंजाम देने के बाद उसने महाराजपुर थाने में आत्म समर्पण भी कर दिया था, जिसके बाद पुलिस ने उसे जेल भेज दिया है। घटना वाले दिन सचिन ने पुलिस को जो बयान दिया था। उसके मुताबिक उसने अपनी पत्नी श्वेता को दो लड़कों के साथ चारपाई पर बैठे हुए देखा थाजिसको लेकर ही विवाद होने के बाद उसने इस घटना को अंजाम दिया था।

हिंदी चेतना शिखर–2026 : दिल्ली में वैश्विक हिंदी, संस्कृति और सौहार्द का भव्य उत्सव

अंतर्राष्ट्रीय विभूतियाँ हुई सम्मानित

डॉ. शंभु पंवार नई दिल्ली,19 जनवरी।राजधानी के राजेंद्र भवन ऑडिटोरियम में हिंदी चेतना शिखर - 2026 अंतरराष्ट्रीय सम्मान समारोह का भव्य, गरिमामयी एवं ऐतिहासिक आयोजन हुआ।

यह आयोजन देवनागरी उत्थान फाउंडेशन, धरा धाम इंटरनेशनल, पं. तिलक राज शर्मा स्मृति ट्रस्ट (अमेरिका) एवं एशिया बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स (श्रीलंका) के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित किया गया। समारोह में देश–विदेश से पधारे शिक्षाविदों, साहित्यकारों, सामाजिक चिंतकों, सांस्कृतिक दूतों एवं बुद्धिजीवियों की उल्लेखनीय उपस्थिति रही।

कार्यक्रम में अंतरराष्ट्रीय सांस्कृतिक दूत रसायाचार्य डॉ. आई. मेड धर्मायसा, संयुक्त राष्ट्र से संबद्ध आधिकारिक प्रतिनिधि जनरल प्रो. जसवीर सिंह (UNGO / IPF–IGO, USA), अंतरराष्ट्रीय हिंदी–देवनागरी प्रवर्तक डॉ. इंदरजीत शर्मा अंतरराष्ट्रीय साहित्यकार एवं

योग–ध्यान प्रशिक्षक (माल्टा) डॉ. चोगशुआ नोगा झांग, संस्कृत साहित्य विभाग के वरिष्ठ आचार्य प्रो. (डॉ.) देवेश कुमार मिश्र, तथा धरा धाम इंटरनेशनल के प्रमुख मानद कुलपति, जगत धर्म चक्रवर्ती एवं सौहार्द शिरोमणि संत डॉ. सौरभ पाण्डेय (धरा धाम विश्व सद्भाव पीठ) एवं अंतरराष्ट्रीय लेखक, पत्रकार विचारक एवं धरा गवर्नर डॉ. शंभु पंवार मंचासीन रहे।कार्यक्रम का कुशल, ओजस्वी एवं प्रभावी संचालन शिक्षाविद् डॉ. निशा अग्रवाल द्वारा ने किया। आयोजन को सफल बनाने में देवनागरी उत्थान फाउंडेशन के संस्थापक डॉ. सुनील दुबे, धरा धाम इंटरनेशनल के राष्ट्रीय संयोजक डॉ. प्रेम प्रकाश पाण्डेय, एशिया बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स के प्रतिनिधि डॉ. नारायण यादव, डॉ. बी. एम. उवैस, डॉ. सचिदानंद झा 'शांडिल्य', डॉ. शंभू पंवार सहित अनेक पदाधिकारियों एवं आयोजक सदस्यों की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

समारोह में हिंदी भाषा, देवनागरी लिपि, शिक्षा, साहित्य, संस्कृति, समाजसेवा एवं मानवीय मूल्यों के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान देने वाली विभूतियों को सम्मानित किया गया। इस अवसर पर 15 विभूतियों को लोक मंगल विभूषण (लाइफ टाइम अचीवमेंट सम्मान),51 विभूतियों को भारतेंदु हरिश्चंद्र अंतरराष्ट्रीय गौरव सम्मान,21 विभूतियों को धरा धाम गौरव सम्मान,4 जनों को लोक गौरव सम्मान तथा 7 विभूतियों को विद्या वाचस्पति मानद उपाधि प्रदान की गई। इनके अलावा शिक्षाविद् डॉ. निशा अग्रवाल एवं डॉ. राकेश वशिष्ठ को एशिया बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स (श्रीलंका) द्वारा वर्ल्ड रिकॉर्ड सर्टिफिकेट से सम्मानित किया गया।कार्यक्रम में नंद कुमार, सविनय पाण्डेय, डेविड, विनय विंसेंट, टाइगर जगजीत निराला, पूजा पाल, साक्षी तिवारी सहित अनेक गणमान्य अतिथि उपस्थित रहे।

व्यक्तिगत खेत से परे

● विजय गर्ग

एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन रासायनिक उर्वरकों को छोड़ने की वकालत नहीं करता है। इसके बजाय, यह जैविक और जैविक इनपुट के साथ-साथ उनके विवेकपूर्ण उपयोग को बढ़ावा देता है, जिससे मिट्टी के लिए संतुलित पोषक तत्व व्यवस्था बनती है। आईएनएम में शामिल हैं: रासायनिक उर्वरक, मिट्टी की आवश्यकताओं के आधार पर सटीक खुराक में लागू किया जाता है जैविक खाद, जैसे फार्मयार्ड खाद (एफवाईएम), कम्पोस्ट, वर्मीकम्पॉस्ट और हरी खाद जैव-उर्वरक, जिनमें राइज़ोबियम, एज़ोटोबैक्टर और माइकोराइज़ा जैसे लाभकारी सूक्ष्मजीव शामिल हैं जो नाइट्रोजन को स्थिर करते हैं

दशकों से भारतीय कृषि की कहानी गहन विकास की रही है, लेकिन इस प्रगति के लिए हमारे सबसे कीमती संसाधनः मिट्टी को एक छिपी हुई कीमत चुकानी पड़ी है। आज, जब हम बढ़ती जनसंख्या और बदलती जलवायु की दोहरी चुनौतियों का सामना कर रहे हैं, तो रासायनिक उर्वरकों के लिए ₹अधिक बेहतर है₹ दृष्टिकोण एक दीवार से टकरा रहा है। हमारी दीर्घकालिक खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए, भारत को एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन (आईएनएम) की ओर रुख करना होगा - एक समग्र रणनीति जो आधुनिक विज्ञान को पारंपरिक ज्ञान के साथ जोड़ती है ताकि हमारी भूमि की जीवन शक्ति बहाल हो सके।

हमारे पैरों के नीचे संकट

भारतीय कृषि की विशेषता छोटी और सीमांत भूमि स्वामित्व तथा नाइट्रोजनयुक्त रासायनिक उर्वरकों पर भारी निर्भरता है। वर्षों से असंतुलित उपयोग और निरंतर एकल फसल के कारण मिट्टी का गंभीर क्षरण हुआ है। अब हम बहु-पोषक तत्वों की कमी देख रहे हैं, जहां मिट्टी में सल्फर, जिंक और बोरॉन जैसे द्वितीयक और सूक्ष्म पोषक तत्वों की अत्यधिक कमी है। जब मिट्टी का स्वास्थ्य कम हो जाता है, तो उत्पादक कारक भी घटता है। इसका अर्थ यह है कि किसानों को उतनी ही उपज प्राप्त करने के लिए अधिक उर्वरक लगाना पड़ता है, जितनी वे पहले कम मात्रा में प्राप्त करते थे। इस चक्र से उत्पादन लागत बढ़ जाती है और फसलें अनियमित वर्षा और सूखे के प्रति अधिक संवेदनशील हो जाती हैं, जो भारतीय जलवायु परिस्थितियों में अधिक आम होते जा रहे हैं।

एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन क्या है?

एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन रासायनिक उर्वरकों को छोड़ने की वकालत नहीं करता है। इसके बजाय, यह जैविक और जैविक इनपुट के साथ-साथ उनके विवेकपूर्ण उपयोग को बढ़ावा देता है, जिससे मिट्टी के लिए संतुलित पोषक तत्व व्यवस्था बनती है। आईएनएम में शामिल हैं: रासायनिक उर्वरक, मिट्टी की आवश्यकताओं के आधार पर सटीक खुराक में लागू किया जाता है जैविक खाद, जैसे फार्मयार्ड खाद (एफवाईएम), कम्पोस्ट, वर्मीकम्पॉस्ट और हरी खाद जैव-उर्वरक, जिनमें राइज़ोबियम, एज़ोटोबैक्टर और माइकोराइज़ा जैसे लाभकारी सूक्ष्मजीव शामिल हैं जो नाइट्रोजन को स्थिर करते हैं जैविक पदार्थों को बढ़ाने के लिए फसल अवशेषों को वापस मिट्टी में पुनर्चक्रित किया जाता है मृदा स्वास्थ्य के स्तंभ

यह समझने के लिए कि आईएनएम क्यों काम करता है, हमें मृदा स्वास्थ्य के तीन स्तंभों की जांच करनी होगीः भौतिक, रासायनिक और जैविक।

भौतिक: आईएनएम मिट्टी की संरचना और जल धारण क्षमता में सुधार करता है। वर्षा क्षेत्र में रहने वाले किसान के लिए इसका अर्थ यह है कि मिट्टी स्पंज की तरह काम करती है, तथा शुष्क मौसम के दौरान नमी को अधिक समय तक बनाए रखती है।

रासायनिक: यह पीएच स्तर को संतुलित करता है और सुनिश्चित करता है कि मैक्रो — और सूक्ष्म पोषक तत्व मिट्टी में बंद होने या बह जाने के बजाय पौधे की जड़ों के लिए उपलब्ध हों।

जैविक: शायद सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि आईएनएम सूक्ष्मजीव विविधता और केंचुआ आबादी को उत्तेजित करता है। ये छोटे-छोटे इंजीनियर महत्वपूर्ण हैं

चावल-गेहूँ या गन्ने की बेल्ट जैसी गहन प्रणालियों में पोषक तत्वों के चक्र और उत्पादकता को बनाए रखने के लिए।

भारतीय किसानों के लिए सर्वोत्तम अभ्यास

आईएनएम को प्रयोगशाला से क्षेत्र में स्थानांतरित करने के लिए व्यावहारिक, स्थल-विशिष्ट रणनीतियों की आवश्यकता होती है। मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना जैसी राष्ट्रीय पहल पहले से ही अनुमान लगाने के बजाय वास्तविक मिट्टी परीक्षणों के आधार पर उर्वरक अनुप्रयोगों की सिफारिश करके एक रोडमैप प्रदान कर रही हैं। प्रमुख प्रबंधन प्रथाओं में महत्वपूर्ण फसल वृद्धि चरणों के अनुरूप नाइट्रोजन का विभाजित अनुप्रयोग और नीम-लेपित यूरिया जैसे धीमी गति से रिलीज होने वाले विकल्पों का उपयोग शामिल है। चावल में लीफ कलर चार्ट (एलसीसी) जैसे सरल, कम लागत वाले उपकरण किसानों को यह निर्णय लेने में मदद करते हैं कि यूरिया कब लगाया जाए, जिससे अपशिष्ट और पर्यावरणीय अपवाह कम हो जाता है। इसके अलावा, फसल प्रणालियों में फलियों को एकीकृत करने से स्वाभाविक रूप से नाइट्रोजन निर्धारण में वृद्धि हो सकती है, जिससे समग्र प्रणाली उत्पादकता में लाभ होगा।

क्षेत्र-स्तरीय प्रभाव और आर्थिक लाभ

आईएनएम की प्रासंगिकता कृषि स्तर पर सबसे अधिक दिखाई देती है। भारत भर में दीर्घकालिक क्षेत्रीय प्रयोगों से पता चलता है कि उर्वरकों और जैविक पदार्थों के एकीकृत उपयोग से केवल रासायनिक उर्वरक की तुलना में अधिक पैदावार प्राप्त होती है।

औसत किसान के लिए, लाभ मूर्त हैं

कम लागतः महंगे रसायनों के स्थान पर कृषि जैविक संसाधनों का उपयोग करने से बाहरी इनपुट पर निर्भरता कम हो जाती है। लचीलापनः बेहतर जड़ वृद्धि और मिट्टी की ढलान फसलों को अधिक जलवायु-लचीला बनाती है, जिससे उन्हें सूखे के तनाव का सामना करने में मदद मिलती है। गुणवत्ताः जिंक और आयरन जैसे सूक्ष्म पोषक तत्वों के शामिल होने से फसल की पैदावार और उपज की गुणवत्ता दोनों में स्पष्ट सुधार होता है। आगे बढ़ने का एक टिकाऊ रास्ता

व्यक्तिगत फार्म से परे, आईएनएम पर्यावरण स्थिरता के लिए भारत की राष्ट्रीय प्राथमिकताओं के साथ संरेखित है। लीचिंग और वाष्पीकरण के माध्यम से पोषक तत्वों की हानि को न्यूनतम करके, यह दृष्टिकोण पर्यावरणीय प्रदूषण और ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम करता है। जैसे-जैसे हम भारतीय कृषि के भविष्य की ओर देखते हैं, यह स्पष्ट है कि हम अपनी मिट्टी को अनिश्चित काल तक नष्ट नहीं कर सकते।

एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन एक स्केलेबल, किसान-केंद्रित मार्ग प्रदान करता है जो यह सुनिश्चित करता है कि कृषि प्रणालियां आने वाली पीढ़ियों के लिए व्यवहार्य बनी रहें। अब समय आ गया है कि मिट्टी को न केवल गंदगी के रूप में देखा जाए, बल्कि एक जीवित प्रणाली के रूप में भी देखा जाए, जिसके लिए राष्ट्र को भोजन उपलब्ध कराने के लिए संतुलित, टिकाऊ आहार की आवश्यकता होती है।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

भारत सचमुच अपने फैसले स्वयं ले रहा

किसी भी लोकतांत्रिक राष्ट्र के लिए रणनीतिक स्वायत्तता केवल विदेश नीति की तकनीकी भाषा नहीं, बल्कि अस्तित्व का प्रश्न है। जब बड़े फैसले बाहरी दबाव, प्रतिबंधों के डर या वैश्विक छवि सँवारने की चिंता से लिए जाते हैं, तो राष्ट्र धीरे-धीरे नीति-निर्माता से ज़्यादा "प्रबंधित सहयोगी" बन जाता है। सचमुच मजबूत भारत वह होगा, जो अमेरिका, रूस, चीन और यूरोप—सभी से संवाद रखे, पर अपने हितों पर अंतिम निर्णय स्वयं ले। तालियाँ, सुर्खियाँ और फोटो-ऑप्स क्षणिक हैं; लेकिन राष्ट्रीय हित के पक्ष में लिया गया स्वतंत्र स्टैंड ही किसी देश की दीर्घकालिक गरिमा तय करता है।

- डॉ. प्रियंका सौरभ

किसी भी राष्ट्र की मजबूती उसके सैन्य बजट, अंतरराष्ट्रीय मंचों पर दिए गए भाषणों या विदेशी नेताओं के साथ खिंचवाई गई तस्वीरों से नहीं मापी जाती। असली ताक़त इस बात में निहित होती है कि वह अपने राष्ट्रीय हितों के अनुरूप कितनी स्वतंत्रता से निर्णय ले पाता है। भारत आज खुद को "मजबूत राष्ट्र", "विश्वगुरु" और "उभरती वैश्विक शक्ति" के रूप में प्रस्तुत कर रहा है, पर मूल प्रश्न यही हैः क्या भारत सचमुच अपने फैसले स्वयं ले रहा है, या वैश्विक शक्तियों के संकेतों के अनुरूप अपने कदम समायोजित कर रहा है?

विदेश नीति किसी भी राष्ट्र के आत्मसम्मान और संप्रभुता का सबसे स्पष्ट दर्पण होती है; यहीं तय होता है कि वह किन देशों से मित्रता करेगा, किससे दूरी बनाए रखेगा, और किन शर्तों पर वैश्विक व्यवस्था में भागीदारी करेगा। भारत ने दशकों तक गुटनिरपेक्षता और बाद में **रणनीतिक** स्वायत्तता के नाम पर यही संदेश दिया कि वह किसी भी शक्ति-गुट का स्थायी अनुयायी नहीं, बल्कि अपने हितों के अनुसार साझेदारी करने वाला स्वतंत्र खिलाड़ी है। शीतयुद्ध के दौर में भारत ने अमेरिका और सोवियत संघ, दोनों से संबंध रखते हुए भी औपचारिक सैन्य गठबंधनों से दूरी बनाए रखी; इसी रुख ने नव-स्वतंत्र एशियाई और अफ्रीकी देशों के लिए उसे एक वैचारिक प्रेरणा बनाया। नई सदी में, खासकर पिछले कुछ वर्षों में, यह संतुलन पहले से कहीं अधिक दबाव में है—चाहे वह अमेरिका और चीन के बीच बढ़ती प्रतिद्वंद्विता हो या रूस-यूक्रेन युद्ध के बाद की ध्रुवीकृत दुनिया।

ईरान का चाबहार बंदरगाह भारत के लिए सिर्फ एक व्यापारिक ठिकाना नहीं, बल्कि पश्चिम एशिया, अफ़ग़ानिस्तान और मध्य एशिया तक सीधे पहुँच का वह द्वार था, जो पाकिस्तान को बायपास करते हुए चीन के ग्वादर और बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव के दबदबे को संतुलित कर सकता था। अमेरिकी प्रतिबंधों और फिर चाबहार पर से छूट हटने के बाद परियोजना पर भारतीय प्रतिबद्धता लगातार कमजोर पड़ती गई; हाल की रिपोर्टें यह संकेत देती हैं कि भारत पोर्ट पर अपनी दीर्घकालिक उपस्थिति को सीमित करने की दिशा में बढ़ चुका है। यहाँ असली सवाल तकनीकी नहीं, राजनीतिक हैः क्या भारत ने अपने दीर्घकालिक भू-रणनीतिक हितों को ध्यान में रखते हुए कोई स्वतंत्र स्टैंड लिया, या फिर वॉशिंगटन की नाराज़गी के डर ने उसे व्यवहारिक विकल्पों से पीछे हटने पर मजबूर कर दिया?

रूस से रियायती दर पर कच्चा तेल खरीदना भारत के लिए ऊर्जा सुरक्षा और आर्थिक विवेक का प्रश्न है, न कि केवल कूटनीतिक जिद का। पश्चिमी प्रतिबंधों के बावजूद भारत ने शुरुआती चरण में साफ संकेत दिया कि वह अपने राष्ट्रीय हितों के अनुसार ही ऊर्जा स्रोत चुनेगा, और इसी तर्क के तहत रूस से तेल आयातों में तेज उछाल भी देखा गया। समय के साथ अमेरिका और यूरोपीय देशों से आने वाले "नैतिक उपदेश" और अप्रत्यक्ष प्रतिबंधों के संकेतों ने अतिरिक्त दबाव बनाया; कुछ बड़े कॉर्पोरेट आयातकों ने रूसी तेल की खरीद घटाकर पश्चिम-समर्थक विकल्पों की ओर झुकाव दिखाया, भले ही कुल मिलाकर रूसी तेल आयात अभी भी ऊँचे बने हुए हों। मजबूत राष्ट्र वह होता है जो दूसरे देशों के "इमेज मैनेजमेंट" या नैरेटिव से नहीं, अपने नागरिकों के आर्थिक हितों और ऊर्जा सुरक्षा से संचालित हो—वरना "रणनीतिक स्वायत्तता" की जगह "रणनीतिक संकोच" ले लेता है।

सबसे खतरनाक प्रवृत्ति यह है कि अंतरराष्ट्रीय मंचों पर मिली तालियाँ और सुर्खियाँ, निर्णय-स्वायत्तता का विकल्प बनती जा रही हैं। विदेशी संसदों में दिए भाषण, वैश्विक मीडिया में छपी प्रशंसात्मक हेडलाइनें या किसी महाशक्ति की "पीठ थपथपाहट" को राष्ट्रीय सम्मान का प्रमाणपत्र बनाकर पेश किया जा रहा है, जबकि हालिया इतिहास इराक, लीबिया और अफ़ग़ानिस्तान जैसे उदाहरणों से भरा है कि बाहरी समर्थन कितनी जल्दी दिशा बदल लेता है। सैन्य और सुरक्षा संबंधी निर्णय किसी भी लोकतंत्र की संप्रभुता की अंतिम रेखा होते हैं; यदि यहाँ भी "किसी और की स्वीकृति" या "वैश्विक संदेश" की चिंता हावी हो जाए, तो यह केवल नीति नहीं, स्वतंत्रता पर प्रश्नचिन्ह है।

ऐसे समय में लोकतांत्रिक समाज की असली परीक्षा यह है कि क्या वह विदेश नीति और सुरक्षा रणनीति पर आलोचनात्मक सवाल पूछने वालों को देशद्रोही ठहराए बिना बहस की जगह दे सकता है। लोकतंत्र में असहमति कमजोरी नहीं, बल्कि **लोक-नियंत्रण** की बुनियादी शर्त है; देशभक्ति का अर्थ सत्ता से सहमति नहीं, बल्कि राष्ट्रीय हित के लिए सच बोलने का साहस है।

"आत्मनिर्भर भारत" की सच्ची कसौटी यह नहीं कि कितने मोबाइल या कारें देश में बन रही हैं, बल्कि यह है कि भारत अपनी विदेश नीति, ऊर्जा विकल्पों और रणनीतिक साझेदारियों पर कितना स्वतंत्र निर्णय ले पाता है। भारत आज एक चौराहे पर खड़ा हैः एक रास्ता उसे उस मुकाम तक ले जा सकता है जहाँ वह अमेरिका, रूस, चीन और यूरोप सभी से संबंध रखे, पर किसी के आगे झुके नहीं; दूसरा रास्ता उसे एक प्रभावशाली, पर आश्रित सहयोगी में बदल सकता है, जो हर बड़े निर्णय से पहले वॉशिंगटन या किसी और राजधानी की प्रतिक्रिया का इंतज़ार करे। मजबूत राष्ट्र वही है जो तालियाँ बटोरने की जगह अपना स्टैंड बचाकर चलता है; आने वाले वर्षों में भारत की असली परीक्षा यही होगी कि वह "प्रबंधित सहयोगी" बनना चुनता है या सचमुच एक संप्रभु, आत्मविश्वासी शक्ति के रूप में खड़ा होता है।

(डॉ. प्रियंका सौरभ, पीएचडी (राजनीति विज्ञान), कवयित्री एवं सामाजिक चिंतक हैं।)

स्वागत में बसंत के

स्वागत में बसंत के प्रकृति ने की है मनोरम तैयारी,
आ गई ऋतुराज बसंत की ₹आनंदश खुशनुमा सवारी,
फ़िज़ाओं में घुली ख़ुशबू कुसुमों के पल्लव पराग की,
और खिल गई बागों में नूतन नन्ही कलियों की क्यारी ।

चहक रही है चिड़िया और पंछी कर रहे मधुरम गान,
झूम रही है लताएं खुशी से छेड़ सप्त स्वरों की तान,
बाँह खोल खड़ी हैं दिशाएं छटा बिखरी अनुराग की,
और खिले सुनहरे रंग में जगमग सारे खेत खलिहान ।

बह रही तन मन को आनंद देने वाली सुगंधित बयार,
तितलियाँ कर रही गुणगान और भंवरें कर रहे गुंजार,
संचार हुआ नवचेतना का घड़ी आई अवसाद त्याग की,
और फैला दशों दिशाओं से धरा पर अनन्य प्रेम अपार ।

बसंत के आने से स्पंदित हुआ जीवन ढेरों खुशियाँ छाई,
सूरज ने ऊर्जा भरी प्राणियों में सुनहरी किरणें मुस्कुराई,
श्वासों में बढ़ा सुख सुंदर व चमकी चेतना भू भाग की,
और मोह कर सभी को बसंत ने की अंतस में रोशनाई ।

– मोनिका डागा "आनंद", चेन्नई, तमिलनाडु

दुनिया में ज़ालिम लोग पड़े हैं...?

इस दुनिया में ऐसे ज़ालिम लोग भी पड़े हैं,
हमसे करवा ही लेते हैं ऐसे बहुत सारे काम!
वे मेहनताना भी नहीं देते और नोचने खड़े हैं।

क्या बात करें इनकी सर पे ही आ के खड़े हैं,
हमको दिखा देते हैं बिना यात्रा के चारों धाम!
हम जा रहे घर, रास्ता है जाम वे रोकने खड़े हैं।

चित भी मेरी पट भी मेरी की तर्ज पर ये अड़े हैं,
हमको ही दिखाते आँख, ऊंची करते हैं नाक!
हमारी हस्ती मिटाने पूरी ताकत झोंकने चले हैं।

धन की माया में गठरी लेकर आकंठ डूब चले हैं,
अब पूरे देश में हो गया है इनका जबरदस्त नाम!
द्रोहियों के आगे सिर झुका तलवे चाटने चले हैं।

संजय एम. तराणेकर
(कवि, लेखक व समीक्षक)
इन्दौर-452011 (मध्यप्रदेश)

क्या आप जानते है एक उच्च स्तरीय अधिकारी "आयुक्त परिवहन दिल्ली" भी संवैधानिक शक्ति - क्रम का उल्लंघन नहीं कर सकता सदैव "भारतीय संविधान सर्वोपरि है" और अधिकारी दंड का भागी है पर आवाज आपको ही उठानी पड़ेगी क्योंकि कानून अपनी आंखों से ना तो देखता है और ना ही अपने कानो से तब तक सुनता है जब तक कोई सुनाने ना आए, और इसी बात का फायदा उठाते हैं ऐसे अधिकारी जैसे "आयुक्त परिवहन दिल्ली"

आयुक्त दिल्ली परिवहन विभाग की शक्तियां क्या सर्वोच्च न्यायालय, भारत और भारत सरकार से भी ऊपर है ?

संजय कुमार बाठला

दिल्ली परिवहन आयुक्त जो कार्य करे वहीं नियम और कानून, चाहे उसके लिए
1. सर्वोच्च न्यायालय के आदेश, दिशा निर्देश कुछ भी बोलते हो
2. चाहे सड़क परिवहन एवम् राजमार्ग मंत्रालय भारत सरकार द्वारा जारी राजपत्रित अधिसूचना कुछ भी बोल रहा हो
3. चाहे सड़क परिवहन एवम् राजमार्ग मंत्रालय भारत सरकार की गाइडलाइंस, एडवाइजरी कुछ भी बोल रहा हो
4. भारत सरकार द्वारा जारी सर्विस आर आर कुछ भी बोले
5. उच्च न्यायालय दिल्ली द्वारा जारी आदेश दिशा निर्देश कुछ भी बोले
6. उपराज्यपाल दिल्ली के आदेश दिशा निर्देश कुछ भी बोले
7. दिल्ली सरकार द्वारा जारी आदेश दिशा निर्देश कुछ भी बोले
पर आयुक्त परिवहन उन सभी आदेशों, दिशा निर्देशों को दरकिनार कर वही कार्य के आदेश जारी कर रहा है जो उसकी पसंद का है, फिर भी
ना सुप्रीम कोर्ट
ना गृह मंत्रालय भारत सरकार
ना सड़क परिवहन एवम्-राजमार्ग मंत्रालय भारत सरकार
ना उच्च न्यायालय दिल्ली
ना उपराज्यपाल
ना दिल्ली सरकार और
ना ही मुख्य सचिव दिल्ली कोई जांच करने को तैयार है और ना ही अपना मुंह खोलने को।
*जनता क्या समझे की
* आयुक्त परिवहन दिल्ली की शक्तियां भारत देश के संविधान से भी ज्यादा है?
* आयुक्त दिल्ली परिवहन विभाग की शक्तियां क्या सर्वोच्च न्यायालय, भारत और भारत सरकार से भी ऊपर है ?
आपकी जानकारी हेतु बता दें दिल्ली के परिवहन आयुक्त की कानूनी / संवैधानिक स्थिति किसी भी हाल में ना तो सर्वोच्च न्यायालय से ऊपर है, ना भारत सरकार से, ना ही संविधान से; वे सिर्फ एक "वैधानिक/प्रशासकीय अधिकारी" हैं, जो संविधान, संसद के बनाए कानून, केंद्र/राज्य सरकार की अधिसूचनाओं और अदालतों के आदेशों के अधीन बंधे हुए हैं। अगर आयुक्त इन उच्च-स्तरीय आदेशों के विरुद्ध काम करते हैं, तो वह कानूनन "अवैध, मनमाना और न्यायालय की अवमानना" की श्रेणी में आता है, लेकिन कार्रवाई न होना एक अलग समस्या (राजनीतिक-प्रशासकीय चुप्पी/लापरवाही) है, शक्ति-क्रम में उनके ऊपर हो जाने की कोई कानूनी स्थिति नहीं बनती।

संवैधानिक शक्ति-क्रम क्या है?
सबसे ऊपर भारत का संविधान है; कोई भी कानून, अधिसूचना या आदेश संविधान के विपरीत नहीं हो सकता, वरना वह आंशिक/पूर्ण रूप से शून्य हो जाता है।
संविधान के तहत सर्वोच्च न्यायालय "कोर्ट ऑफ रिकॉर्ड" और अंतिम अपील की अदालत है; उसके फैसले पूरे भारत में सभी अदालतों और सभी प्राधिकरणों/अधिकारियों पर बाध्यकारी हैं (अनुच्छेद 141)। अनुच्छेद 144 कहता है कि "सभी प्राधिकारी, नागरिक और न्यायिक, सर्वोच्च न्यायालय की सहायता में कार्य करेंगे", यानी हर सरकारी अधिकारी को सुप्रीम कोर्ट के आदेश मानने ही पड़ेंगे।
मंत्रालयों, अधिसूचनाओं और गाइडलाइंस की स्थिति संसद द्वारा बनाए केंद्रीय कानून (जैसे मोटर वाहन अधिनियम) राज्य सरकारों और उनके विभागों पर बाध्यकारी हैं; विभागीय नियम/आदेश इन्हीं के अधीन बनाए जा सकते हैं, इनके विपरीत नहीं।
सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय (MoRTH) की राजपत्रित अधिसूचनाएँ वैधानिक नियम/उप-कानून का रूप लेती हैं; इन्हें कोई विभागीय अधिकारी अपने "ऑफिस ऑर्डर" से न तो ओवरराइड कर सकता है, न नज़रअंदाज़ करने का अधिकार रखता है।
मंत्रालय की गाइडलाइंस/एडवाइजरी तकनीकी-नीतिगत दिशा देती हैं; इन्हें न मानने पर सीधे "अधिसूचना-जैसी" वैधानिक अवहेलना न सही, पर मनमानी/अवैध निर्णय और सार्वजनिक हित के खिलाफ नीति के रूप में कोर्ट में चुनौती दी जा सकती है।
दिल्ली के संदर्भ में आयुक्त की कानूनी हैसियत दिल्ली एक "विशेष दर्जा" वाला केंद्र शासित क्षेत्र है; अनुच्छेद 239AA के तहत यहाँ चुनी हुई सरकार, उपराज्यपाल और केंद्र – तीनों के बीच शक्ति-वितरण तय है; विभागीय आयुक्त इन्हीं के अधीन काम करने वाले वरिष्ठ अधिकारी हैं, कोई संवैधानिक प्राधिकरण नहीं।
दिल्ली मोटर वाहन नियम, 1993 व अन्य नियमों में परिवहन आयुक्त/अधिकारी को लाइसेंस, रजिस्ट्रेशन, परमिट, प्रवर्तन आदि के प्रशासनिक अधिकार दिए गए हैं; लेकिन ये सारे अधिकार मोटर वाहन अधिनियम, केंद्र/दिल्ली सरकार की अधिसूचनाओं और न्यायालयी आदेशों की सीमा के भीतर ही हैं।
यदि आयुक्त ऐसा आदेश निकाले जो सुप्रीम कोर्ट, हाई कोर्ट, केंद्र या उपराज्यपाल के स्पष्ट आदेश से टकराता हो, तो वह आदेश न्यायिक समीक्षा में रद्द हो सकता है और उस पर अवमानना/विभागीय कार्रवाई की भी संभावना बनती है।
फिर यह "सबके ऊपर" दिखने वाली स्थिति क्यों? व्यावहारिक रूप से कई बार होता यह है कि विभागीय अफसर कोर्ट/केंद्र/एलजी/सरकार के आदेश को तोड़-मरोड़ कर, चयनित तरीके से लागू करते हैं या सीधा ठंडे बस्ते में डाल देते हैं; जब तक कोई प्रभावित व्यक्ति अदालत, कैट, सतर्कता या संवैधानिक प्राधिकारी के पास नहीं जाता, तब तक वह मनमानी "डिफ़ॉल्ट रूल" बनकर चलती रहती है।
कार्रवाई न होना (चाहे सुप्रीम कोर्ट के पुराने आदेश की अवहेलना हो, MoRTH अधिसूचना का उल्लंघन, या सर्विस-RR के विपरीत नियुक्ति) असल में "सिस्टम-फेल्योर" है – राजनैतिक इच्छा-शक्ति, उच्च-स्तरीय निगरानी और न्यायिक फॉलो-अप में कमी – यह इस बात का प्रमाण नहीं है कि आयुक्त की शक्ति संविधान या सुप्रीम कोर्ट से ऊपर हो गई है।
कानूनी-जनहित स्तर पर आप क्या कर सकते हैं? संबंधित आदेशों/फाइल नोटिंग/कन्ट्रेरी-इंस्ट्रक्शन की कॉपी जुटाकर, स्पष्ट रूप से दिखाया जा सकता है कि विभागीय आदेश किस प्रकार सुप्रीम कोर्ट/हाई कोर्ट के आदेश, MoRTH अधिसूचना, सर्विस-RR या एलजी/दिल्ली सरकार के आदेश के विरुद्ध है; यह सामग्री रिट याचिका, अवमानना याचिका या प्रतिनिधित्व का आधार बन सकती है।

अनुच्छेद 226 के तहत दिल्ली उच्च न्यायालय में रिट (mandamus/certiorari) दायर करके माँग की जा सकती है कि:
* विभागीय आदेश को अवैध/शून्य घोषित किया जाए;
* सुप्रीम कोर्ट/MoRTH/एलजी/दिल्ली सरकार के संबंधित आदेशों के अनुपालन के लिए बाध्यकारी दिशा-निर्देश दिए जाएँ;
* जिम्मेदार अधिकारियों पर अवमानना या कम-से-कम कड़ी प्रतिकूल टिप्पणियाँ/कास्ट लगाई जाए।

गिलहरी प्रशंसा दिवस: प्रकृति के नन्हे माली और उनके संरक्षण का महत्व

सुनील कुमार महला

प्रत्येक वर्ष 21 जनवरी को विश्व स्तर पर 'स्क्विरल एप्रिसिएशन डे' (गिलहरी प्रशंसा दिवस) मनाया जाता है। उपलब्ध जानकारी के अनुसार इस दिवस की शुरुआत वर्ष 2001 में उत्तरी कैरोलिना की वन्यजीव पुनर्वासकर्ता क्रिस्टी हारग्रोव द्वारा की गई थी। इस दिन को मनाने का मुख्य उद्देश्य केवल इस चंचल जीव की सुंदरता की सराहना करना नहीं है, बल्कि जैव-विविधता में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका, उनके पर्यावरणीय महत्व और उनके संरक्षण के प्रति जन-जागरूकता फैलाना है। गिलहरियाँ न केवल हमारे पार्कों और आंगनों की शोभा बढ़ाती हैं, बल्कि वे पारिस्थितिकी तंत्र के संतुलन को बनाए रखने में एक 'मूक सैनिक' की तरह कार्य करती हैं।

सांस्कृतिक महत्व और पौराणिक संदर्भ:- भारतीय संस्कृति में गिलहरी को केवल एक जीव के रूप में नहीं, बल्कि भक्ति और समर्पण के एक महान प्रतीक के रूप में देखा जाता है। रामायण का वह प्रसंग अत्यंत प्रेरणादायक है जब भगवान श्रीराम की वानर सेना लंका जाने के लिए रामसेतु का निर्माण कर रही थी। जहां विशाल वानर बड़ी-बड़ी शिलाएं उठा रहे थे, वहीं एक नन्ही गिलहरी अपने सामर्थ्य अनुसार छोटे कंकड़, मिट्टी लाकर अपना योगदान दे रही थी। जब कुछ वानरों ने उसका उपहास किया, तब भगवान राम ने उसकी निष्काम सेवा और प्रयास को सराहा और प्रेमपूर्वक उसकी पीठ सहलाई। माना जाता है कि भगवान की उंगलियों के वे निशान आज भी गिलहरी की पीठ पर तीन धारियों के रूप में दिखाई देते हैं, जो यह सिखाते हैं कि कोई भी कार्य छोटा नहीं होता।

हमारी पारिस्थितिकी के 'नन्हे माली':- गिलहरियों को 'प्रकृति का माली' कहा जाता है, और इसके पीछे एक ठोस वैज्ञानिक कारण है। गिलहरियों की आदत होती है कि वे भविष्य के लिए बीज और मेवे (जैसे अखरोट या बादाम) जमीन में गाड़ कर छिपा देती हैं। अक्सर वे इन स्थानों को भूल जाती हैं, और यही 'भूल' प्रकृति के लिए वरदान साबित होती है। मिट्टी में दबे ये बीज अंकुरित होकर नए पौधों और पेड़ों का रूप ले लेते हैं, जिससे पुनर्वनीकरण (रि-फॉरेस्टेशन) में प्राकृतिक रूप से मदद मिलती है। इसके अलावा, गिलहरियां हानिकारक कीटों और लार्वा को खाकर फसलों और पेड़ों की रक्षा करती हैं और स्वयं भी खाद्य श्रृंखला (फूड चेन) का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं, जो कई बड़े पक्षियों और वन्यजीवों का आहार बनती हैं।

मलय (विशालकाय) गिलहरी: अस्तित्व पर संकट:- गिलहरियों की विभिन्न प्रजातियों में रतुफा बाइकलर (मलय विशालकाय गिलहरी) विशेष स्थान रखती है। यह विश्व की सबसे बड़ी गिलहरी प्रजातियों में से एक है और भारत के पूर्वोत्तर राज्यों (सिक्किम, असम, अरुणाचल, मेघालय आदि) में पाई जाती है। इसे 'वन स्वास्थ्य का संकेतक' माना जाता है, क्योंकि इसकी उपस्थिति एक समृद्ध पारिस्थितिक तंत्र का प्रमाण है। दुर्भाग्यवश, बढ़ते शहरीकरण, वनों की कटाई और पूर्वोत्तर भारत में प्रचलित 'झूम कृषि' (स्लैश एंड बर्न एग्रीकल्चर) के कारण इनका अस्तित्व खतरे में है। एक डरावना अनुमान यह है कि यदि आवास क्षति इसी तरह जारी रही, तो 2050 तक इनका अनुकूल क्षेत्र मात्र 2.94% ही शेष रह जाएगा। पिछले दो दशकों में इनकी आबादी में लगभग 30% की गिरावट दर्ज की गई है।

संरक्षण का आह्वान:- आज के समय में औद्योगिकीकरण और प्रदूषण ने इन नन्हे जीवों के प्राकृतिक आवासों को उजाड़ दिया है। 'स्क्विरल एप्रिसिएशन डे' हमें याद दिलाता है कि पर्यावरण की सुरक्षा केवल बड़े जानवरों या जंगलों तक सीमित नहीं है, बल्कि गिलहरी जैसे छोटे जीवों का संरक्षण भी उतना ही अनिवार्य है। हमें उनके प्रति संवेदनशील व्यवहार अपनाना चाहिए, उनके लिए भोजन और पानी की व्यवस्था करनी चाहिए और सबसे महत्वपूर्ण रूप से पेड़ों को कटने से बचाना चाहिए। गिलहरियों का संरक्षण वास्तव में हमारे वनों और हमारी भावी पीढ़ियों के पर्यावरण का संरक्षण है।

अंत में सार रूप में यही कहूंगा गिलहरी प्रशंसा दिवस हमें सिखाता है कि प्रकृति के चक्र में हर छोटा जीव जरूरी है। गिलहरियाँ न केवल पर्यावरण की सुंदरता बढ़ाती हैं, बल्कि अनजाने में बीज बोकर नए जंगल उगाने में 'नन्हे माली' की भूमिका निभाती हैं। आज बढ़ते प्रदूषण और जंगलों की कटाई के कारण उनका जीवन खतरे में है। यह दिन हमें याद दिलाता है कि हम इन बेजुबान जीवों के प्रति दयालु बनें और पेड़ लगाकर उनके घरों को सुरक्षित रखें। गिलहरियों को बचाना दरअसल अपनी प्रकृति और भविष्य को बचाना है।

जी राम जी देश के गरीब लोगों के लिए श्राप हैं

मनोरंजन शासमल, स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : राजीव गांधी पंचायती राज संगठन लोअर PMG में MGNREGA बचाओ सत्याग्रह किया। अध्यक्ष सुदर्सन दास ने कहा, पिछले संसदीय सत्र में भारत सरकार ने ऐतिहासिक कानून MGNREGA को तोड़-मरोड़कर पेश किया और राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का नाम हटा दिया, जो पूरे भारत देश के लिए निंदनीय घटना है। न केवल महात्मा गांधी का नाम हटाया गया है, बल्कि कानून के विभिन्न प्रावधानों को भी नष्ट किया गया है। महात्मा गांधी का मुख्य संदेश था, गांव मजबूत होगा तो देश मजबूत होगा। इसलिए, 2005 में तत्कालीन मनमोहन सरकार ने गांवों के लोगों को रोजगार देने और उनकी आय बढ़ाने के लिए यह MGNREGA कानून बनाया, जो धीरे-धीरे बढ़कर 12 करोड़ हो गया है। इससे परिवारों को रोज़गार मिला और उनकी खरीदने की ताकत बढ़ी और भारत के विकास में MGNREGA एक्ट का बड़ा रोल रहा। इस एक्ट में केंद्र सरकार राज्य को 90% आर्थिक मदद दे रही थी और राज्य 10% लगा रहा था, लेकिन जी राम जी एक्ट के मुताबिक केंद्र का 60% और राज्य का 40% हिस्सा होता, जो नामुमकिन बात है। बदकिस्मती से, MGNREGA को लोकल सेल्फ-गवर्नमेंट सिस्टम और पंचायती राज सिस्टम के ज़रिए लागू किया गया। यह एक्ट सबसे नीचे के गरीबों की मांग के हिसाब से काम दे पाता था, जिसे जी राम जी एक्ट ने खत्म कर दिया है। काम की जगह, समय और समय अब केंद्र सरकार की मर्ज़ी पर निर्भर करता है। जो इस देश के गरीबों के लिए एक श्राप है। आम आदमी के लिए गांव के पास काम मिलना एक बुरे सपने जैसा है। इसी सिलसिले में ANC अपने नेता राहुल गांधी की लीडरशिप में पूरे देश में MGNREGA को बचाने की लड़ाई जारी रखे हुए है। ओडिशा प्रदेश कांग्रेस कमेटी और राजीव गांधी पंचायती राज ने ग्राम राम जी एक्ट को तुरंत रद्द करने और MGNREGA एक्ट को फिर से लागू करने की मांग की है। संगठन कल लोअर PMG में एक दिन का राज्य स्तरीय सत्याग्रह कार्यक्रम हुआ और महामहिम राज्यपाल को एक साइन किया हुआ यादगार तोहफ़ा दिया गया। संगठन के राज्य अध्यक्ष श्री दास ने बताया कि कार्यक्रम में राजीव गांधी पंचायती राज संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. सुनील पंवार और उपाध्यक्ष कुणाल बनर्जी के साथ संगठन के हज़ारों कार्यकर्ता शामिल हुए।

माटी में छुपी ममता मां के प्रति श्रद्धा प्रकट करती है - पंडित राकेश व्यास

मां रेवा आरती समिति द्वारा

महेश्वर (नि.प्र) में नर्मदा पुराण की कथा चल रही है जिसमें बताया गया कि जीवन के समर में समय संघर्ष व साहस की जीवंत भूमिका होती है संगीत में सुर ताल व लय तथा कठिनाई में धैर्य विश्वास व हिम्मत अपना-आपा नहीं खोते हैं, उसी प्रकार सच्चे मन से नर्मदा मां के आराधक परिक्रमा करने से कठिन पथ पर कुंदन जैसी चमक लिए मां से श्रद्धा का जयकारा निश दिन करते हैं और परिक्रमा पथ पर मां एक परीक्षक की भांति पथिक की श्रद्धा का परीक्षण करती है यहां उक्त वचन पंडित राकेश व्यास ने मां नर्मदा महापुराण की कथा के तीसरे दिन व्यक्त किए। निमाड़ में नर्मदा नदी संस्कृति की अनोखी पहचान है परंपराओं से बंधी लोक जीवन से जुड़ी संस्कृति का समन्वय धर्म व आस्था से मजबूती से जुड़ा हुआ है। संस्कृति सद्भाव व समभाव को बढ़ावा देती है माटी में छुपी ममता मां के प्रति श्रद्धा

प्रकट करती है तथा धार्मिक मार्ग पर चलने की प्रेरणा देती है अहम व वहम को किसी के सर पर चढ़ने नहीं देती मां के जल का प्रभाव तनाव दूर कर मानो मस्तिष्क में दबाव कम कर भक्ति का अलख जगाता है। इस कार्यक्रम में महेश्वर नगर की प्रसिद्ध लोकगीत गायिका प्रमिला रंसोरे ने निमाड़ी लोकगीत थारो निर्मल पाणी तथा म्हारो प्यारो नेमाड की विशेषता बताने वाली सुरमई संगीत रचनाओं ने निमाड़ की संस्कृति को इस धार्मिक मंच पर नई ऊर्जा व जोश के साथ प्रकट किया। कथा के दौरान नन्ही बालिका वान्या अभिषेक शर्मा इंदौर को मां नर्मदा के प्रतीक स्वरूप के रूप में सजाया गया था तथा श्रद्धालु भक्तों ने देवी स्वरूपा कन्या का पूजन अर्चन किया। मां के जन्मोत्सव की बेला का साक्षात दर्शन भाव भजन भक्ति के साथ व शंख ध्वनि से किया गया। कथा के अन्त में मां नर्मदा के शुद्धिकरण व पर्यावरण का संदेश दिया इस मंहगाई व भागदौड़ के समय में नियमित संध्या आरती का संचालन 1₹ प्रतिदिन से हर रोज हो रहा है जो अपने रजत जयंती वर्ष में प्रवेश कर रही है। इस का उद्देश्य एक बनो नेक बनो की तर्ज धार्मिकता के गर्व व गौरव को पुष्ट करते हैं। नर्मदा पुराण की इस कथा में श्रद्धालु श्रोताओ की संख्या दिन पे दिन बढ़ रही है आरती तथा प्रसादी वितरण के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ। यहां जानकारी वरिष्ठ शिक्षाविद साहित्यकार व पंडित प्रदीप शर्मा ने प्रेस विज्ञप्ति में दी है।

रिपोर्टिंग - हरिहर सिंह चौहान

अशोक मस्ती आप के सोशल मीडिया कोऑर्डिनेटर और डिंपल अरोड़ा को वॉइस कोऑर्डिनेटर नियुक्त

लहरागागा, 19 जनवरी (जगसीर सिंह) - आम आदमी पार्टी ने पंजाब में अपने संगठन को मजबूत करने के लिए आज अशोक मस्ती को लहरा विधानसभा क्षेत्र से पार्टी का सोशल मीडिया कोऑर्डिनेटर और डिंपल अरोड़ा को वॉइस कोऑर्डिनेटर बनाया है। लहरा विधानसभा क्षेत्र के नए कोऑर्डिनेटर अशोक मस्ती ने पत्रकारों से बात करते हुए कहा कि आम आदमी पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष अमन अरोड़ा और प्रदेश प्रभारी मनीष सिसोदिया ने पंजाब में पार्टी की सोशल मीडिया टीमों की घोषणा की है, जिसमें मुझे लहरा विधानसभा क्षेत्र से पार्टी की सेवा करने का मौका दिया गया है। मैंने और मेरी टीम के सदस्यों ने पार्टी सुप्रीमो अरविंद केजरीवाल, भगवंत सिंह मान, मुख्यमंत्री पंजाब, अध्यक्ष अमन अरोड़ा, प्रदेश प्रभारी मनीष सिसोदिया और कैबिनेट मंत्री एडवोकेट बीरिंदर गोयल का आभार व्यक्त किया है कि उन्होंने आम आदमी पार्टी में मुझ जैसे मध्यम वर्गीय परिवार के सदस्य को उचित सम्मान दिया। पार्टी की पूरी लीडरशिप ने एक बार फिर साबित कर दिया है कि पार्टी मेहनती नेताओं को समय पर पार्टी में उचित सम्मान देने के लिए प्रतिबद्ध है। हलका कोऑर्डिनेटर अशोक मस्ती व वाइस कोऑर्डिनेटर डिंपल अरोड़ा ने आम आदमी पार्टी की पूरी लीडरशिप, नगर कौंसिल लहरागागा की प्रधान कांता गोयल, कैबिनेट मंत्री एडवोकेट बीरिंदर गोयल की पत्नी सीमा गोयल व उनके बेटे एडवोकेट गौरव गोयल, चेयरमैन डॉ. शीशपाल आनंद, प्रिंस गर्ग हलका इंचार्ज ट्रेड विंग लहरा, जीवन कुमार रब्बर वाइस प्रेसिडेंट आढ़तियां एसोसिएशन पंजाब, मनजीत मक्खन पीए एडवोकेट गौरव गोयल, बिंदर हरियाऊ, प्रधान राकेश गर्ग, राकेश कुमार गुप्ता विक्की पीए कैबिनेट मंत्री गोयल, लक्की गोयल, दीपू गोयल, सीनियर नेता

गुरलाल सिंह, मनजीत शर्मा जेई, प्रधान राज शर्मा, स्टेज संचालक कुलवंत उपली संगरूर, गुरमीत लहरा, बरिंदर बंटी गिल, गुरमेल सिंह गिल, फिल्म एक्टर टीटा वैली संगरूर, भूपेश मस्ती आदि का विशेष तौर पर धन्यवाद किया। प्रसिद्ध गायक लाभ हीरा, प्रसिद्ध गायक लवली निर्माण धुरी, गायक बापू गुरदयाल सिंह निर्माण धुरी, प्रसिद्ध गायक रणजीत मणि, प्रसिद्ध गायक गुरबख्श शौकी, लोक गायक कला मंच के राष्ट्रीय अध्यक्ष गायक हाकम बख्तरीवाला, गायक दलजीत कौर, गायक जोड़ी बलबीर चोटियां, गायक जैस्मीन चोटियां, गायक जोड़ी अर्शदीप चोटियां, गायक आर नूर, गायक निर्मल महला, गायक जस डस्का, गायक जगदीश डस्का, गायक मंगल मांगी यमला, गीतकार मस्तक लसारा, वीडियो निर्देशक गग्गी सिंह, गुरप्यार सिंह कलवंजारा, एससी विंग हल्का लेहरा के अध्यक्ष जस्सी चंगालीवाला और विभिन्न क्षेत्रों की कई अन्य हस्तियों ने अशोक मस्ती को बधाई दी। नवनियुक्त सोशल मीडिया सीओए अशोक मस्ती ने उन सभी को धन्यवाद दिया और पार्टी नेतृत्व को आश्वासन दिया कि वह और उनकी पूरी टीम आम आदमी पार्टी की लोक-हितैषी नीतियों को पंजाब के लोगों तक पहुंचाने के लिए कड़ी मेहनत करेगी।

आप सरकार की और से पंजाब केसरी समूह पर हमला निंदनीय कार्य - भाजपा नेता श्री विजय गोयल

संगरूर, 16 जनवरी (जगसीर लोगोंवाल) - पंजाब सरकार द्वारा विभिन्न तंत्रों के माध्यम से पंजाब केसरी समूह पर हमला निंदनीय कार्य है जिसको कभी भी बर्दाश्त नहीं किया जाएगा इन विचारों का प्रकटवा भारतीय जनता पार्टी जिला संगरूर -२ के उप अध्यक्ष श्री विजय गोयल ने प्रेस बयान के माध्यम से किया। श्री गोयल ने कहा कि पंजाब केसरी प्रदेश का प्रसिद्ध और निष्पक्ष अखबार है। पंजाब सरकार द्वारा अपने जनविरोधी फैसलों को छुपाने के प्रयास से पंजाब केसरी पर लक्षित हमला किया गया है, और पंजाब की भगवंत मान सरकार ने प्रदेश के प्रसिद्ध अखबार पंजाब केसरी को दिए जाने वाले सभी विज्ञापन रोक दिए जिससे यह सिद्ध होता है कि प्रदेश सरकार मीडिआ पर दबाव बनाने का प्रयास कर रही है। श्री गोयल ने कहा कि पंजाब केसरी समूह ने जब प्रदेश सरकार व इसके सम्बंधित विभागों की नाकामियों को उजागर करने का प्रयास किया तो पंजाब सरकार ने पंजाब केसरी समूह के कार्यों को बाधित करना शुरू कर दिया जो कि पंजाब सरकार द्वारा सरासर लोकतंत्र की हत्या है और संविधान के चौथे स्तम्भ मीडिआ पर असंवैधानिक हमला है।

CISF 28 जनवरी, 2026 को वंदे मातरम कोस्टल साइक्लोथॉन-2026 लॉन्च करेगा

मनोरंजन शासमल, स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : भूबनेश्वर हवाई अड्डे पर CISF DIG सुमंत सिंह, कमांडेंट राकेश चौधूरी और कमांडेंट ड पंकज मॉडली प्रेस वार्ता में कहा कोस्टल सिक्योरिटी और नेशनल इंटीग्रेशन की ओर एक कदम सेंट्रल इंडस्ट्रियल सिक्योरिटी फोर्स (CISF) CISF वंदे मातरम कोस्टल साइक्लोथॉन-२०२६ का दूसरा एडिशन लॉन्च करने वाला है। यह एक ऐतिहासिक नेशनल पहल है जिसका मकसद कोस्टल सिक्योरिटी अवेयरनेस, नेशनल इंटीग्रेशन और कम्युनिटी पार्टिसिपेशन को मजबूत करना है। भारत के बड़े कोस्टलाइन पर २५० से ज़्यादा पोर्ट हैं, जिनमें ७२ EXIM पोर्ट शामिल हैं जो देश के लगभग ९५% ट्रेड को हैंडल करते हैं। ये पोर्ट, कोस्ट पर मौजूद रिफाइनरी, शिपयार्ड और न्यूक्लियर पावर प्लांट के साथ, भारत की इकोनॉमिक ग्रोथ और एनर्जी सिक्योरिटी के लिए बहुत ज़रूरी हैं। हालांकि, उन्हें ड्रग्स, हथियार, एक्सप्लोसिव, घुसपैठ और दूसरी गैर-कानूनी एक्टिविटी जैसे लगातार खतरों का भी सामना करना पड़ता है। पांच दशकों से ज़्यादा समय से, CISF को कोस्ट पर १२ बड़े पोर्ट और दूसरे ज़रूरी इंफ्रास्ट्रक्चर की सुरक्षा की ज़िम्मेदारी सौंपी गई है। पहले CISF कोस्टल साइक्लोथॉन की सफलता को आगे बढ़ाते हुए, २०२६ एडिशन इस ऐतिहासिक मूवमेंट को एक नए विज़न और एक मज़बूत नेशनल कनेक्शन के साथ आगे ले जा रहा है। फ्लैग-ऑफ सेरेमनी में गृह राज्य मंत्री श्री नित्यानंद राय २८ जनवरी २०२६ को सीनियर अधिकारियों और गणमान्य लोगों की मौजूदगी में मेजर ध्यानचंद नेशनल स्टेडियम, नई दिल्ली से CISF वंदे मातरम कोस्टल साइक्लोथॉन-२०२६ को वर्चुअली फ्लैग ऑफ करेंगे।

कंटेंट और विज़न : साइक्लोथॉन का आयोजन "सुरक्षित तट, समृद्ध भारत" (सेफ कोस्ट, प्रॉस्परस इंडिया) थीम के साथ किया जा रहा है और यह वंदे मातरम के देशभक्ति के सार को दिखाता है, जो भारत की कोस्टल सिक्योरिटी के प्रति राष्ट्रीय गौरव, एकता और सामूहिक ज़िम्मेदारी का प्रतीक है। साइक्लोथॉन का स्कोप और रूट साइक्लोथॉन २५ दिन का, ६,५५३ km का साइकिलिंग एक्सपीडिशन है जो भारत के पूरे मेनलैंड कोस्ट को कवर करता है, जिससे यह देश में अब तक किए गए सबसे बड़े कोस्टल साइकिलिंग एक्सपीडिशन में से एक बन जाता है। दो CISF साइकिलिंग टीमें एक साथ शुरू होंगी।

पंजाब एवं हरियाणा बार काउंसिल चण्डीगढ चुनावी घोषणा-पत्र न्याय, सम्मान और प्रतिनिधित्व के लिए : रजत कल्सन, एडवोकेट

परिवहन विशेष न्यूज

वकालत केवल आजीविका नहीं, बल्कि संविधान, समानता और सामाजिक न्याय की रक्षा का माध्यम है। दुर्भाग्य से आज दलित अधिवक्ताओं को न्याय व्यवस्था के भीतर ही अपमान, अनदेखी और दमन का सामना करना पड़ रहा है। यह घोषणा-पत्र उसी अन्याय के खिलाफ संगठित संघर्ष और ठोस सुधारों का संकल्प है।

दलित अधिवक्ताओं पर दमन की सच्चाई

आज जब दलित अधिवक्ता समाज के हक में आवाज़ उठाते हैं, तो—
उन पर झूठे मुकदमे दर्ज किए जाते हैं
अपमानजनक तरीके से गिरफ्तार किया जाता है
पुलिस और प्रशासन द्वारा डराने की कोशिश होती है
अदालत परिसरों में भी उन्हें फर्श पर बैठाया जाता है, सम्मान से वंचित किया जाता है।

उदाहरण: रजत कल्सन, एडवोकेट

दलित अधिकारों के लिए कार्य करने के कारण रजत कल्सन, एडवोकेट को अपमान, झूठे मुकदमे और दमन का सामना करना पड़ा। यह केवल एक व्यक्ति का मामला नहीं, बल्कि पूरे दलित अधिवक्ता समुदाय को चुप कराने की कोशिश है।

एडवोकेट जनरल कार्यालय में भेदभाव

राज्य सरकार द्वारा एडवोकेट जनरल कार्यालय की नियुक्तियों में दलित अधिवक्ताओं को लगातार अनदेखा किया जाता है।
योग्य और अनुभवी दलित अधिवक्ताओं को अवसर नहीं दिया जाता।

हमारी मांग

AG कार्यालय की सभी नियुक्तियों में पारदर्शिता और दलित अधिवक्ताओं का प्रतिनिधित्व सुनिश्चित किया जाए।
उच्च न्यायालय में सीनियर एडवोकेट designation में अनदेखी उच्च न्यायालय में Senior Advocate के designation की प्रक्रिया अपारदर्शी और पक्षपातपूर्ण है। दलित अधिवक्ताओं को व्यवस्थित रूप से नजरअंदाज किया जाता है।

हमारी मांगें

स्पष्ट मानदंड, सामाजिक विविधता और दलित अधिवक्ताओं के लिए न्यायसंगत प्रतिनिधित्व।

जिला बार एसोसिएशन में आरक्षण की मांग

हम यह स्पष्ट और ठोस मांग रखते हैं कि— हर जिला बार एसोसिएशन में हर 5 वर्षों में कम से कम 1 वर्ष प्रधान (President) और सचिव (Secretary) का पद दलित अधिवक्ताओं के लिए आरक्षित किया जाए। यह कोई विशेषाधिकार नहीं, बल्कि संवैधानिक न्याय है।

हमारी मुख्य घोषणाएं / वायदे

सुरक्षा और संरक्षण

दलित अधिवक्ताओं के खिलाफ झूठे मुकदमों और गिरफ्तारियों पर बार काउंसिल स्तर पर लीगल प्रोटेक्शन सेल।

अपमान के खिलाफ जीरो टॉलरेंस

अदालत, थाना या कार्यालय में अपमानजनक व्यवहार को गंभीर अनुशासनात्मक अपराध घोषित किया जाए।

प्रतिनिधित्व

बार काउंसिल और उसकी सभी समितियों में दलित अधिवक्ताओं का अनुपातिक प्रतिनिधित्व।

शिकायत निवारण

दलित अधिवक्ताओं के लिए स्वतंत्र, फास्ट-ट्रैक और समयबद्ध शिकायत प्रणाली।

पेशेवर विकास

ट्रेनिंग, मेंटॉरशिप, प्रो-बोनो केस

नए दलित अधिवक्ताओं के लिए आर्थिक व संसाधन सहायता।

बॉक्स - हमारा संदेश

"जो अधिवक्ता संविधान के साथ खड़ा है, उसे अपराधी की तरह ट्रीट करना संविधान का अपमान है।"
दलित अधिवक्ताओं पर हमला = न्याय प्रणाली पर हमला
सामाजिक न्याय की वकालत अपराध नहीं है।

चुनावी अपील

यह चुनाव कुर्सी का नहीं, व्यवस्था बदलने का चुनाव है।
आइए, एक ऐसी बार काउंसिल बनाएं—
जो डर से नहीं, संविधान से चले
जो ताकतवर के नहीं, न्याय के साथ खड़ी हो।

दलित अधिकार कार्यकर्ता,
बार काउंसिल पंजाब एवं हरियाणा चुनाव प्रत्याशी

वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम 19-23 ज़नवरी दावोस 2026 और संवाद की भावना- वैश्विक अनिश्चितताओं के युग में सहयोग, भरोसा और नई वैश्विक रूपरेखा की तलाश-एक समग्र विश्लेषण

एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र

वैश्विक स्तरपर स्विट्ज़रलैंड के दावोस में 19 जनवरी २०२६ से शुरू हुई वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम(डब्ल्यूईएफ) की ५६वीं वार्षिक बैठक एक ऐसे समय में आयोजित हो रही है, जब वैश्विक व्यवस्था एक गहरे संक्रमण काल से गुजर रही है। २३ जनवरी तक चलने वाली यह बैठक केवल एक अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन नहीं है, बल्कि यह उस वैश्विक मंच का प्रतिनिधित्व करती है जहाँ दुनिया की आर्थिक, राजनीतिक और तकनीकी दिशा तय करने वाले निर्णयों की बुनियाद रखी जाती है। इस वर्ष की बैठक का केंद्रीय विषय, ए स्पिरिट ऑफ डायलॉग (संवाद की भावना) अपने आप में इस बात का संकेत है कि दुनियाँ आज टकराव, ध्रुवीकरण और अविश्वास के दौर से निकलकर संवाद, सहयोग और सहमति की नई राह तलाश रही है। दावोस की वार्षिक बैठक वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम का सबसे प्रमुख आयोजन है, जिसने पिछले पाँच दशकों से वैश्विक एजेंडा निर्धारण में एक अनूठी भूमिका निभाई है। यह मंच राजनीतिक नेतृत्व, वैश्विक कॉरपोरेट जगत, नागरिक समाज, शिक्षाविदों, अंतरराष्ट्रीय संगठनों और उभरते युवा नेतृत्व को एक साथ लाकर उन मुद्दों पर चर्चा करता है, मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र यह मानता हूं क़ि जो किसी एक देश या क्षेत्र तक सीमित नहीं, बल्कि पूरी मानवता के भविष्य से जुड़े होते हैं। वैश्विक आर्थिक अस्थिरता, जलवायु परिवर्तन, तकनीकी क्रांति, भू-राजनीतिक संघर्ष और सामाजिक असमानताएँये सभी विषय दावोस की चर्चाओं के केंद्र में रहते हैं। वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम का मुख्यालय जिनेवा, स्विट्ज़रलैंड में स्थित है और इसकी स्थापना का मूल उद्देश्य यही रहा है कि विश्व की जटिल समस्याओं का समाधान केवल सरकारों या बाज़ार के बल पर नहीं, बल्कि सामूहिक प्रयासों और बहु-हितधारक सहयोग के माध्यम से ही संभव है। आसान शब्दों में कहें तो डब्ल्यूईएफ दुनियाँ के शीर्ष नेताओं, व्यापारिक दिग्गजों और बौद्धिक नेतृत्व को एक मंच पर लाकर वैश्विक, क्षेत्रीय और औद्योगिक नीतियों को आकार देने का प्रयास करता है।

साथियों बात अगर हम दावोस २०२६, भागीदारी का अभूतपूर्व विस्तार इसको समझने की करें तो, दावोस २०२६ की बैठक अपने पैमाने और प्रतिनिधित्व केलिहाज़ से भी ऐतिहासिक मानी जा रही है। इस वर्ष 130 से अधिक देशों से लगभग ३,००० नेताओं के शामिल होने की उम्मीद है। इनमें लगभग 400 राजनीतिक नेता शामिल हैं, जिनमें करीब ६५ राष्ट्राध्यक्ष और सरकार प्रमुख तथा जी-7 के छह नेता भी भाग ले रहे हैं। यह आँकड़े इस बात को रेखांकित करते हैं कि दावोस अब केवल आर्थिक विमर्श का मंच नहीं रह गया है, बल्कि यह वैश्विकराजनीति कूटनीति और सुरक्षा से जुड़े मुद्दों पर भी प्रभावी संवाद का केंद्र बन चुका है। राजनीतिक नेतृत्व के साथ- साथ लगभग 850 शीर्ष वैश्विक मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ) और कॉरपोरेट अध्यक्ष इस मंच पर मौजूद हैं। इसके अतिरिक्त, लगभग 100 यूनिकॉर्न स्टार्टअप्स और अत्याधुनिक तकनीकी कंपनियों के अग्रणी भी इस बैठक में भाग ले रहे हैं। यह उपस्थिति इस बात का संकेत है कि वैश्विक अर्थव्यवस्था का भविष्य अब केवल पारंपरिक उद्योगों तक सीमित नहीं, बल्कि नवाचार, डिजिटल अर्थव्यवस्था और उभरती प्रौद्योगिकियों से गहराई से जुड़ा हुआ है। इस वर्ष दावोस में सबसे अधिक निगाहें अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप पर टिकी हुई हैं। उनके नेतृत्व में अमेरिका की विदेश नीति, व्यापार नीति और भू- राजनीतिक दृष्टिकोण को लेकर वैश्विक स्तरपर उत्सुकता और चिंता दोनों बनी हुई हैं। ट्रंप की मौजूदगी दावोस २०२६ को न केवल मीडिया की दृष्टि से बल्कि वैश्विक नीति विमर्श के लिहाज़ से भी अत्यंत महत्वपूर्ण बना देती है।

साथियों बात अगर हम संवाद का मंच:भरोसे की बहाली की कोशिश इसको समझने की करें तो, वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम स्वयं को संवाद, सहयोग और कार्रवाई के लिए एक निष्पक्ष मंच के रूप में प्रस्तुत करता है। यह मंच ऐसे समय में और अधिक प्रासंगिक हो जाता है, जब दुनियाँ भू- राजनीतिक तनाव, युद्धों, व्यापारिक टकरावों और सामाजिक विभाजन से जूझ रही है। डब्ल्यूईएफ का दावा है कि वह विभिन्न क्षेत्रों के नेताओं के बीच सार्थक संवाद को बढ़ावा देकर विश्वास की बहाली का कार्य करता है, एक ऐसा विश्वास, जो हाल के वर्षों में वैश्विक राजनीति और अर्थव्यवस्था में बुरी तरह डगमगाया है। दावोस केवल विचार-विमर्श का मंच नहीं है, बल्कि यह देशों के लिए अपनी आर्थिक और निवेश क्षमता को वैश्विक समुदाय के सामने प्रस्तुत करने का अवसर भी देता है। उदाहरण के तौर पर, २०२६ में भारत दावोस में अपनी मजबूत उपस्थिति दर्ज करा रहा है। भारत न केवल अपने राष्ट्रीय विकास एजेंडे को प्रस्तुत कर रहा है, बल्कि गिफ्ट सिटी जैसे अंतरराष्ट्रीय वित्तीय केंद्र और कर्नाटक, तेलंगाना जैसे राज्यों की निवेश संभावनाओं को भी वैश्विक निवेशकों के समक्ष प्रदर्शित कर रहा है। वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम की पहचान उसकी प्रतिष्ठित वैश्विक रिपोर्टों से भी जुड़ी हुई है। ग्लोबल जेंडर गैप रिपोर्ट, ग्लोबल रिस्क रिपोर्ट और ग्लोबल कॉम्पिटिटिवनेस रिपोर्ट जैसी रिपोर्टें न केवल नीति-निर्माताओं के लिए संदर्भ बिंदु बनती हैं, बल्कि वैश्विक मीडिया, शिक्षाविदों और निवेशकों के लिए भी दिशा-निर्देशक का काम करती हैं। ये रिपोर्टें वैश्विक असमानताओं जोखिमों और प्रतिस्पर्धात्मकता केरुझानों को उजागर कर सरकारों और

संस्थानों को आत्ममंथन के लिए प्रेरित करती हैं।

साथियों बात कर हम संवाद की भावना:२०२६ की थीम का गहन अर्थ को समझने की करें तो, दावोस २०२६ की बैठक का मुख्य विषय संवाद की भावना अपने आप में वर्तमान वैश्विक परिस्थिति का प्रतिबिंब है। यह थीम इस बात पर केंद्रित है कि भू-राजनीतिक जोखिम, आर्थिक अनिश्चितता और सुरक्षा, संप्रभुता तथा वैश्विक एकीकरण को लेकर बदलती धारणाओं के बीच अंतरराष्ट्रीय सहयोग को किस प्रकार नए सिरे से परिभाषित और मजबूत किया जा सकता है। आज दुनियाँ एक ऐसे मोड़ पर खड़ी है, जहाँ एक ओर वैश्वीकरण के लाभों पर सवाल उठ रहे हैं, तो दूसरी ओर राष्ट्रवाद और संरक्षणवाद का उभार देखने को मिल रहा है। ऐसे में संवाद केवल कूटनीतिक शब्द नहीं रह जाता, बल्कि यह वैश्विक स्थिरता और शांति की अनिवार्य शर्त बन जाता है। दावोस २०२६ में यहप्रयास किया जा रहा है कि मतभेदों के बावजूद साझा हितों की पहचान की जाए और सहयोग के नए मॉडल विकसित किए जाएँ। इस वर्ष की बैठक में वैश्विक नेता, वरिष्ठ राजनयिक, उद्योग विशेषज्ञ, थिंक टैंक और सामाजिक उद्यमी एक साथ मिलकर जलवायु परिवर्तन, आर्थिक असमानता, आपूर्ति श्रृंखला संकट, ऊर्जा सुरक्षा और तकनीकी परिवर्तन जैसे ज्वलंत मुद्दों पर विचार-विमर्श कर रहे हैं। इन चर्चाओं का उद्देश्य केवल समस्याओं की पहचान करना नहीं, बल्कि व्यावहारिक और क्रियान्वयन योग्य समाधानों की तलाश करना है। आधिकारिक वेबसाइट के अनुसार, दावोस २०२६ की चर्चाएँ लचीलेपन (रेज़िलिएंस), प्रतिस्पर्धात्मकता और समावेशी विकास को बढ़ावा देने वाले रास्तों पर केंद्रित हैं। इसके साथ ही, भू- राजनीतिक और आर्थिक अस्थिरता को प्रबंधित करने की रणनीतियों पर भी गंभीर विमर्श हो रहा है। विशेष रूप से जनरेटिव आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) जैसी परिवर्तनकारी तकनीकों के जिम्मेदार और नैतिक उपयोग पर जोर दिया जा रहा है, ताकि तकनीकी प्रगति मानव कल्याण के साथ तालमेल में सटीक रूप से आगे बढ़े।

साथियों बात अगर हम भारत की भूमिका:दावोस में उभरती शक्ति का प्रदर्शन इसको समझनें कि करें तो दावोस २०२६ में भारत की उपस्थिति विशेष रूप से उल्लेखनीय है। भारत न केवल दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में से एक है, बल्कि वह वैश्विक दक्षिण (ग्लोबल साउथ) की आवाज़ के रूप में भी उभर रहा है। इस वर्ष भारत से कई केंद्रीय मंत्री और राज्यों के मुख्यमंत्री दावोस पहुँचे हैं, जो देश की बहु-क्षेत्रीय विकास रणनीति को वैश्विक मंच पर प्रस्तुत कर रहे हैं। रेलवे, सूचना एवं प्रसारण, इलेक्ट्रॉनिक्स एवं आईटी, कृषि एवं किसान कल्याण, ग्रामीण विकास, नवीकरणीय ऊर्जा और नागरिक उड्डयन जैसे महत्वपूर्ण मंत्रालयों के प्रतिनिधियों की मौजूदगी इस बात कोदर्शाती है कि भारत दावोस को केवल निवेश आकर्षित करने का मंच नहीं, बल्कि नीति संवाद और वैश्विक साझेदारी के अवसर के रूप में देखता है। भारत का फोकस बुनियादी ढांचे, डिजिटल परिवर्तन, हरित ऊर्जा और समावेशी विकास पर है, जो वैश्विक निवेशकों के लिए भी आकर्षण का केंद्र है। भारत की रणनीति यह स्पष्ट संदेश देती है कि वह वैश्विक अर्थव्यवस्था में केवल एक बाज़ार या श्रम शक्ति के रूप में नहीं, बल्कि एक नवाचार-संचालित, नीति-सक्षम और जिम्मेदार वैश्विक साझेदार के रूप में अपनी भूमिका स्थापित करना चाहता है। गिफ्ट सिटी को अंतरराष्ट्रीय वित्तीय केंद्र के रूप में प्रस्तुत करना और राज्यों की निवेश नीतियों को सामने लाना इसी व्यापक दृष्टिकोण का हिस्सा है।

अत: अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे क़ि दावोस २०२६ की ५६वीं वार्षिक बैठक ऐसे समय में हो रही है, जब दुनियाँ बहु-आयामी संकटों से घिरी हुई है। आर्थिक अनिश्चितता जलवायु संकट, तकनीकी असंतुलन और भू-राजनीतिक तनाव ये सभी चुनौतियाँ किसी एक देश के प्रयासों से हल नहीं हो सकतीं। ऐसे में 'संवाद की भावना' केवल एक थीम नहीं, बल्कि एकवैश्विक आवश्यकता बन जाती है। वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम का दावोस मंच यह याद दिलाता है कि मतभेदों और प्रतिस्पर्धा के बावजूद सहयोग संभव है, बशर्ते संवाद के दरवाज़े खुले रहें। दावोस २०२६ की चर्चाएँ यदि वास्तविक नीतिगत बदलावों और ठोस अंतरराष्ट्रीय सहयोग में तब्दील होती हैं, तो यह बैठक वैश्विक इतिहास में एक महत्वपूर्ण मोड़ के रूप में याद की जाएगी। भारत सहित सभी प्रमुख देशों के लिए यह अवसर है कि वे न केवल अपने राष्ट्रीय हितों को आगे बढ़ाएँ, बल्कि एक अधिक स्थिर, समावेशी और टिकाऊ वैश्विक व्यवस्था के निर्माण में भी सक्रिय भूमिका निभाएँ।

कांग्रेस, अकाली दल और भाजपा ने पंजाब को लूटा- सीएम भगवंत सिंह मान

अजनाला (अमृतसर), (साहिल बेरी)

अंतरराष्ट्रीय सीमा से सटे क्षेत्र अजनाला में आज 15 करोड़ रुपये की लागत से बनने वाले सरकारी डिग्री कॉलेज का शिलान्यास करते हुए पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत सिंह मान ने कहा कि कांग्रेस, शिरोमणि अकाली दल और भाजपा ने दशकों तक आपसी मिलीभगत से पंजाब की अंधाधुंध लूट की, राज्य की संस्थाओं को खोखला किया और युवाओं को रोजगार की तलाश में विदेश जाने के लिए मजबूर किया।

मुख्यमंत्री ने कहा कि नया कॉलेज आम आदमी पार्टी की सरकार की शिक्षा को मजबूत करने, रोजगार के अवसर पैदा करने और जनभागीदारी के माध्यम से पंजाब को फिर से "रंगला पंजाब" बनाने की प्रतिबद्धता को दर्शाता है। उन्होंने घोषणा की कि इस कॉलेज का नाम सम्मानित शख्सियत बाबा गमचुक्क जी महाराज के नाम पर रखा जाएगा।

मुख्यमंत्री ने कहा कि जहां राज्य सरकार हर संभव सुविधा और संस्थागत सहयोग प्रदान करेगी, वहीं हर पंजाबी का भी यह कर्तव्य है कि वह अपनी क्षमता के अनुसार योगदान दे, ताकि पंजाब को फिर से "रंगला पंजाब" बनाया जा सके और हमारे बच्चों को बेहतर भविष्य की तलाश में देश छोड़ने के लिए मजबूर न होना पड़े।

इस अवसर पर जनसभा को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री भगवंत सिंह मान ने कहा कि इन पारंपरिक पार्टियों के भीतर आपसी कलह चरम पर है, क्योंकि इनके पास जनता के कल्याण के लिए कोई ठोस एजेंडा नहीं है। उन्होंने कहा,

"विपक्ष के पास पंजाब के लिए कोई एजेंडा नहीं है। वे केवल जनता और राज्य के संसाधनों को लूटने की अपनी बारी का इंतजार कर रहे हैं। उनके मंसूबे कभी पूरे नहीं होंगे, क्योंकि पंजाब के लोग समझदार और बहादुर हैं तथा ऐसे नेताओं के संदिग्ध चरित्र को भली-भांति पहचानते हैं।"

मुख्यमंत्री ने जनता से अवसरवादी और सत्ता-लोलुप नेताओं से सतर्क रहने की अपील करते हुए कहा कि पारंपरिक पार्टियों का एकमात्र उद्देश्य पंजाब और इसके लोगों को लूटना रहा है। उन्होंने कहा,

"समय की मांग है कि ऐसी पार्टियों को पूरी तरह नकारा जाए, ताकि रंगला पंजाब बनाने के लिए राज्य सरकार के प्रयासों के सकारात्मक परिणाम सामने आ सकें।"

मुख्यमंत्री ने कहा कि उनकी सरकार नए आम आदमी क्लीनिक, स्कूल और कॉलेज खोलने के साथ-साथ अन्य जनकल्याणकारी योजनाओं को लागू कर विकास को तेजी से आगे बढ़ा रही है।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने बताया कि अंतरराष्ट्रीय सीमा से सटे गांव बकरौर में सह-शिक्षा (को-एजुकेशनल) कॉलेज का शिलान्यास किया गया है। उन्होंने कहा,

"इस कॉलेज से सीमावर्ती क्षेत्र के युवा अपने घर के नज़दीक उच्च शिक्षा प्राप्त कर सकेंगे। 15 एकड़ क्षेत्र में बनने वाले इस संस्थान पर 15 करोड़ रुपये खर्च किए जाएंगे।"

उन्होंने इस परियोजना के लिए भूमि दान करने पर गांव बकरौर की पंचायत और निवासियों का धन्यवाद किया।

मुख्यमंत्री ने कहा कि इस कॉलेज से आसपास के 50 गांवों के युवाओं को लाभ मिलेगा और आने वाले वर्षों में यहां 2000 से अधिक विद्यार्थियों के दाखिले की उम्मीद है। उन्होंने कहा कि यहां कला, विज्ञान, वाणिज्य, कंप्यूटर विज्ञान, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और डिजिटल शिक्षा के पाठ्यक्रम संचालित किए जाएंगे, जिससे सीमावर्ती क्षेत्र के विद्यार्थियों को आधुनिक और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित होगी।

उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि यह कॉलेज क्षेत्र के युवाओं, विशेषकर लड़कियों के बेहतर भविष्य में अहम भूमिका निभाएगा।

मुख्यमंत्री ने कहा कि युवाओं की आकांक्षाएं और सपने ऊंचे हैं और राज्य सरकार निरंतर सहयोग के माध्यम से उन्हें साकार करने के लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने कहा,

"हमारा ध्यान वर्तमान और भावी पीढ़ियों के कल्याण पर केंद्रित है, ताकि पंजाब विकास और समृद्धि के मार्ग पर आगे बढ़ सके। समाज के हर वर्ग का कल्याण हमारा मुख्य उद्देश्य है।

मुख्यमंत्री ने घोषणा की कि कॉलेज के लिए भूमि दान करने वाले गांव के विद्यार्थियों को इस संस्थान में मुफ्त शिक्षा प्रदान की जाएगी। उन्होंने कहा कि कॉलेज का नाम बाबा गमचुक्क जी महाराज के नाम पर रखकर उन्हें श्रद्धांजलि दी जाएगी। उन्होने कहा कि माता पिता को अपने बच्चों के लिए गुणात्मक शिक्षा यकीनी बनानी चाहिए ताकि वह अवसरों की तलाशा में विदेश जाने के लिए मजबूर न हों।

प्रवासन के मुद्दे पर बोलते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि युवाओं में फैली निराशा को समाप्त करना आवश्यक है, ताकि रिवर्स माइग्रेशन को बढ़ावा मिल सके। उन्होंने कहा कि पिछली सरकारों ने इस गंभीर चुनौती को नजरअंदाज किया और व्यवस्था को बर्बाद कर दिया, जिससे युवाओं को देश छोड़ने के लिए मजबूर होना पड़ा।

पिंकी कुंडू

भारतीय जनता पार्टी

संगठन पर्व

डॉ. के. लक्ष्मण
राष्ट्रीय चुनाव अधिकारी, संगठन पर्व
का प्रेस वक्तव्य

19 जनवरी, 2026 (सोमवार)

- भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष के निर्वाचन की प्रक्रिया 36 प्रदेशों में से 30 प्रदेश अध्यक्षों के निर्वाचन सम्पन्न होने के उपरांत प्रारंभ की गई, जो कि न्यूनतम आवश्यक 50 प्रतिशत से अधिक है।
- 16 जनवरी 2026 को निर्वाचन कार्यक्रम की अधिसूचना जारी की गई तथा निर्वाचन सूची का प्रकाशन किया गया।
- निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार आज, 19 जनवरी 2026 (सोमवार) को अपराह्न 2:00 बजे से 4:00 बजे तक नामांकन प्रक्रिया सम्पन्न हुई।
- राष्ट्रीय अध्यक्ष पद हेतु **श्री नितिन नवीन** के पक्ष में कुल 37 सेट नामांकन पत्र प्राप्त हुए।
- नामांकन पत्रों की जांच के उपरांत सभी नामांकन पत्र निर्धारित प्रारूप के अनुसार तथा वैध पाए गए।
- नामांकन वापसी की अवधि पूर्ण होने के पश्चात, भारतीय जनता पार्टी के संगठन पर्व के राष्ट्रीय चुनाव अधिकारी के रूप में मैं यह घोषणा करता हूँ कि **भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष** पद हेतु केवल एक ही नाम, अर्थात् **श्री नितिन नवीन** का नाम प्रस्तावित हुआ है।

Central Office Tel: 23500000

झारखंड में अपहृत अंश अंशिका के बाद और बारह बच्चे बरामद

भीख मंगवाने, अंग बेचने, देहव्यापार में ढकेले जाते थे बच्चे, 10 सालों से गुलगुलिया गैंग सक्रिय रहा

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

रांची, झारखंड पुलिस ने रविवार को एक अंतरराज्यीय बाल तस्करी गिरोह का भंडाफोड़ करते हुए राज्य के विभिन्न जिलों से अगवा किए गए 12 बच्चों को ढूंढ निकाला। अधिकारियों ने यह जानकारी दी। अधिकारियों ने बताया कि पुलिस ने महिलाओं सहित गिरोह के 13 सदस्यों को गिरफ्तार किया और करीब दो दर्जन संदिग्धों से पूछताछ जारी है। रांची के वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक राकेश रंजन ने बताया, विशेष जांच दल (एसआईटी) ने अब तक 12 बच्चों को ढूंढ निकाला, जिन्हें राज्य के विभिन्न जिलों से एक सक्रिय अंतरराज्यीय बाल अपहरण गिरोह ने अगवा किया था। उन्होंने बताया कि बचाए गए बच्चों में 10 लड़कियां और दो लड़के शामिल हैं, जिनकी उम्र चार से 12 साल के बीच है।

रंजन ने संवाददाताओं को बताया कि गिरोह के 13 सदस्यों को बिहार, पश्चिम बंगाल, ओडिशा, झारखंड और उत्तर प्रदेश से गिरफ्तार किया गया है। उन्होंने बताया, "मामले की जांच जारी है। पुलिस के अनुसार, बचाए गए बच्चों का अपहरण रांची, बोकारो, धनबाद, चाईबासा और लातेहार जिलों से किया गया था। उसने बताया कि सभी बच्चों को धुर्वा थाने लाया गया और उनकी पहचान करने व उन्हें उनके परिवारों से मिलाने के लिए डीएनए परीक्षण की व्यवस्था की जा रही है।

पुलिस ने बताया कि जांच में पता चला है कि 'गुलगुलिया गिरोह' के नाम से जाना जाने वाला यह गिरोह पिछले 10 साल से बच्चों के अपहरण में शामिल था। यह गिरोह बिहार, झारखंड, ओडिशा, पश्चिम बंगाल और उत्तर प्रदेश में सक्रिय है। पुलिस के अनुसार, 'गुलगुलिया गिरोह' मुख्य रूप से गरीब परिवारों के बच्चों को निशाना बनाता था, क्योंकि उनके माता-पिता अक्सर कानूनी जानकारी से वंचित होते हैं और पुलिस से संपर्क करने में असमर्थ होते हैं।

पुलिस के मुताबिक, गिरोह दो बच्चों को बेचना चाहता था, लेकिन पुलिस की ओर से समय रहते की गई कार्रवाई के कारण उसकी साजिश नाकाम हो गई। रांची पुलिस के विशेष जांच दल (एसआईटी) को लापता भाई-बहन को बरामद करने के कुछ दिनों बाद यह सफलता मिली है। पुलिस के एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि दो जनवरी को लापता हुए बच्चों को 14 जनवरी को रामगढ़ जिले के चितरपुर से सुरक्षित ढूंढ निकाला गया।

सरायकेला के अन्तिम शासक राजा आदित्य प्रताप की पौत्री स्नेहलता का 63 वर्ष में निधन

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

सरायकेला, सरायकेला स्टेट के अन्तिम शासक राजा महाराज आदित्य प्रताप सिंहदेव के कनिष्ठ पौत्री(नतनी) जेमा स्नेहलता देवी ने 63 वर्ष की आयु में मौनी अमावस्या के दिन यह लीला समाप्त की। आप सरायकेला स्टेट की अद्वितीय अर्ध शास्त्रीय पारंपरिक मार्शल आर्ट कला के प्रथम पद्मश्री सुधेन्द्र नारायण सिंहदेव उर्फ सान लाल साहब की बेटी थी। वे कुछ समय से बीमार चल रही थीं एवं दिल्ली से सरायकेला लाने के क्रम में उनका देहान्त रांची के आस पास हो गया। जैसे ही उनका पार्थिव शरीर सरायकेला राजमहल पहुंचा समुचा शहर गमगीन हो गया।

प्राप्त जानकारी के अनुसार वह विगत एक माह से दिल्ली में बीमार अवस्था में विभिन्न अस्पतालों मे इलाज रत थी।एक माह पहले उन्हे राम मोहन लोहिया अस्पताल दिल्ली में मधुमेह तथा उच्च रक्तचाप का इलाज आई सी यू मे रख कर कराया गया था। उसके बाद सफदरगंज अस्पताल में भी भर्ती कराया गया था। बढ़ती उम्र जनित बीमारी के कारण डॉक्टरों ने उन्हें घर में रखकर ही इलाज करने का नसीहत दिया था। इसी कम में उन्हें एबुलेंस से डॉक्टर नर्स के मेडिकल टीम सहित सरायकेला लाया जा रहा था। झारखंड में पहुंचते उनकी तबियत अचानक बिगड़ जाने के कारण उन्हें आरएमसीएच, रांची मे दाखिला हेतु ले जाने के क्रम में शनिवार रात अस्पताल पहुंचने से पूर्व मौत हो गई। देर रात को उनके शव को सरायकेला अस्पताल में रखा गया। फिर दिन के 10:00 बजे राजमहल सरायकेला में लाया गया। जहां सरायकेला के राजा प्रताप आदित्य प्रताप सिंह देव, रानी अरुणिमा सिंह देव समेत सैकड़ों की संख्या में नगर वासियों ने अंतिम दर्शन किए तथा श्रद्धांजलि दी। गजपति क्षेत्र की परंपरा अनुरूप पार्थिव के मुख पर पुरी जगन्नाथ जी का महाप्रसाद तथा तुलसी अर्पित की गयी। सधवा महिलाओं ने उन्हें सिंदूर तुलसी आदी अर्पण की। सरायकेला की 16 कला युक्त वाद्यों में से ओहयडागरा जो देवी धुमाबती को प्रिय वाद्य है वादन हुई। फिर पैलेस के पाणीसाल दरवाजे तरफ से उनका अंतिम यात्रा आरंभ हुआ।

जेमा स्नेहलता के गूजर जाने की बात सुनकर बड़ी संख्या में लोग सरायकेला पैलेस की तरफ उमड़ पड़े। जो आज भी लोगों का लगाव अपने राज परिवार को दर्शाता है। आज का तिथि मौनी अमावस्या है अमावस्या पर किसी का अगर मृत्यु होती है तो उसे आध्यात्मिक मान्यता अनुसार पितरों की आत्मा की तृप्ति और पारिवारिक पितृ दोष दूर होने का कारण माना जाता है। संतान पक्ष, आर्थिक समृद्धि का कारक भी होते है इस पवित्र दिन देह त्याग करना। स्नेहलता का बाल्यकाल सरायकेला में गुजरा जहां वे शेष शासक राजा आदित्य प्रताप की लाडली नतनी थी। फिर पढ़ाई उत्तर प्रदेश एवं दिल्ली में हुई। जहां रहते हुए कुछ समय पूर्व उनको गंभीर सुगर हो गया जिसका इलाज चल रहा था। उनके देख देख में सरायकेला के दो लोग सुरज सिंहदेव एवं अभिषेक देवगम उनके साथ साथ दिल्ली के अस्पतालों में रहे।

मीडिया समिट के लिए ग्लोबल स्पीकर्स को हायर करने का कॉन्ट्रैक्ट 'इवेंट मैनेजमेंट' के तौर पर सर्विस टैक्स के दायरे में नहीं आता: सुप्रीम कोर्ट

मीडिया और इवेंट ऑर्गेनाइज़र्स के लिए बड़ी राहत में सुप्रीम कोर्ट ने शुक्रवार (16 जनवरी) को कहा कि इंटरनेशनल बुकिंग एजेंसियों के ज़रिए हाई-प्रोफाइल स्पीकर्स को दी जाने वाली फीस पर ₹इवेंट मैनेजमेंट सर्विसेज़₹ कैटेगरी के तहत सर्विस टैक्स नहीं लगेगा।

जस्टिस जेबी पारदीवाला और जस्टिस केवी विश्वनाथन की बेंच ने कस्टम्स, एक्साइज और सर्विस टैक्स अपीलेट ट्रिब्यूनल (CESTAT) का आदेश रद्द कर दिया, जिसमें हिंदुस्तान टाइम्स मीडिया लिमिटेड पर उसके सालाना लीडरशिप समिट के लिए 60 लाख से ज़्यादा के टैक्स की मांग को सही ठहराया गया था। इस समिट में कंपनी ने इंटरनेशनल बुकिंग एजेंसियों के ज़रिए पूर्व यूके पीएम टोनी ब्लेयर, पूर्व अमेरिकी उपराष्ट्रपति अल गोर और जाने-माने अंतरिक्ष यात्री जेरी लिनेंगर जैसे इंटरनेशनल स्पीकर्स को बुलाया था।

कोर्ट ने कहा कि एचटी मीडिया का इंटरनेशनल बुकिंग एजेंसियों के साथ कॉन्ट्रैक्ट सिर्फ़ उनके इवेंट के लिए स्पीकर्स को लाने के लिए था और यह 'इवेंट मैनेजमेंट' सेवाओं के तहत नहीं आता। चूंकि सर्विस टैक्स सिर्फ़ इवेंट मैनेजमेंट सेवाओं पर लगता है, इसलिए किसी एजेंट के ज़रिए स्पीकर को बुक करने पर सर्विस टैक्स नहीं लगेगा।

कोर्ट ने कहा,

"कॉन्ट्रैक्ट्स का मकसद और एजेंटों द्वारा दिया गया डिक्लेरेशन साफ़ तौर पर बताता है कि ऐसे एजेंटों द्वारा करदाता को दी गई सेवाएं करदाता द्वारा आयोजित किए जाने वाले इवेंट के लिए स्पीकर्स को बुक करने के नेचर की थीं। कॉन्ट्रैक्ट हर स्पीकर के लिए एजेंटों के साथ किए गए, जिसमें उनके आने-जाने के तरीके और उसके लिए पेमेंट की शर्तें तय की गईं। ऐसी सेवाओं को "इवेंट मैनेजमेंट सर्विस" के बराबर नहीं माना जा सकता, जिसे कानूनी तौर पर "किसी भी कला, मनोरंजन, व्यवसाय, खेल, शादी या किसी अन्य इवेंट की प्लानिंग, प्रमोशन, आयोजन या प्रस्तुति से संबंधित कोई भी सेवा और इसमें इस संबंध में दी गई कोई भी सलाह शामिल है" के रूप में परिभाषित किया गया है। बुकिंग एजेंटों के साथ करदाता का कॉन्ट्रैक्ट "किसी इवेंट के मैनेजमेंट" के लिए नहीं, बल्कि स्पीकर की बुकिंग के लिए था।"

यह मामला अक्टूबर, 2009 और मार्च, 2012 के बीच की अवधि के लिए सर्विस टैक्स की मांगों से संबंधित था। एचटी मीडिया ने अपना सालाना "हिंदुस्तान टाइम्स लीडरशिप समिट" आयोजित किया था, जिसमें पूर्व यूके प्रधानमंत्री टोनी ब्लेयर, पूर्व अमेरिकी उपराष्ट्रपति अल गोर और अंतरिक्ष यात्री जेरी लिनेंगर जैसी ग्लोबल हस्तियां शामिल थीं। कंपनी ने अपने इवेंट में इन स्पीकर्स को लाने के लिए वाशिंगटन स्पीकर्स ब्यूरो और हैरी वॉकर एजेंसी जैसी प्रोफेशनल लेक्चर बुकिंग एजेंसियों को हायर किया।

टैक्स डिपार्टमेंट ने तर्क दिया कि इन एजेंसियों को किया गया पेमेंट फाइनेंस एक्ट, 1994 की धारा 65(105)(zu) के तहत एक "टैक्सेबल सर्विस" थी, जिसमें "इवेंट मैनेजर" द्वारा दी जाने वाली सेवाएं शामिल हैं। डिपार्टमेंट ने तर्क दिया कि स्पीकर्स को लाना समिट की ₹प्लानिंग, प्रमोशन, आयोजन या प्रेजेंटेशन₹ का एक ज़रूरी हिस्सा था। इसलिए इसे इवेंट मैनेजर द्वारा दी जाने वाली सर्विस के रूप में कैटेगराइज़ किया जाना चाहिए।

सर्विस टैक्स की मांग को सही ठहराने वाले CESTAT के फैसले से नाराज़ होकर एचटी मीडिया सुप्रीम कोर्ट चला गया।

विवादित आदेश से असहमत होते हुए जस्टिस पारदीवाला द्वारा लिखे गए फैसले में कहा गया कि किसी इवेंट में स्पीकर्स की सिर्फ़ भागीदारी को इवेंट के मैनेजमेंट के बराबर नहीं माना जा सकता, क्योंकि न तो स्पीकर्स और न ही बुकिंग एजेंट इवेंट की प्लानिंग, प्रमोशन, आयोजन या संचालन में शामिल होते हैं।

कोर्ट ने कहा,

"स्पीकर इवेंट की प्लानिंग, प्रमोशन, आयोजन या प्रेजेंटेशन नहीं करता है। इस प्रकार, स्पीकर न तो ₹इवेंट मैनेजर₹ है और न ही वह ₹इवेंट मैनेजमेंट सर्विसेज़₹ देता है। इसी तरह बुकिंग एजेंट जो सिर्फ़ स्पीकर को बुक करता है, वह भी इवेंट में स्पीकर्स की मौजूदगी की शर्तों पर सहमत होने के लिए एक एजेंट या प्रतिनिधि के तौर पर काम करता है। इवेंट में भागीदारी को इवेंट का मैनेजमेंट नहीं माना जा सकता। राजस्व विभाग के साथ-साथ ट्रिब्यूनल ने भी यही मौलिक गलती की है, जब उन्होंने "इवेंट मैनेजमेंट सर्विस" की कैटेगरी के तहत संबंधित सर्विस पर सर्विस टैक्स लगाया है।"

कोर्ट ने आगे इस बात पर जोर देते हुए कहा,

"जिस चीज़ को कवर करने की कोशिश की जा रही है, वह इवेंट के मैनेजमेंट या आयोजन की सर्विस है, और राजस्व विभाग को ऐसे क्लॉज़ के दायरे से बाहर इसके एप्लीकेशन को बढ़ाने की अनुमति नहीं दी जा सकती। इवेंट में भाग लेने के लिए ज़रूरी व्यक्तियों की बुकिंग के लिए व्यक्तिगत कॉन्ट्रैक्ट को आमतौर पर "इवेंट मैनेजमेंट" कॉन्ट्रैक्ट के रूप में नहीं समझा जाता है।"

अपील स्वीकार कर ली गई और टैक्स की मांग रद्द कर दी गई।

Cause Title: HT MEDIA LIMITED VERSUS PRINCIPAL COMMISSIONER DELHI SOUTH GOODS AND SERVICE TAX

डॉ. अवतार सिंह ने मुफ्त जोड़ बदलने के उपराले की शुरुआत की

अमनदीप अस्पताल ने उजाला सिगनस की साथ साझेदारी में 26 गरीब और ज़रूरतमंद लोगों की जोड़ बदलने की घोषणा की

अमृतसर 19 जनवरी (साहिल बेरी)

अमनदीप अस्पताल ने उजाला सिगनस की साझेदारी के चलते पंजाब के आस पास के इलाकों के गरीब जरूरतमंद लोगों के लिए मुफ्त सर्जरी करने की घोषणा की है ।यह बताना जरूरी है कि यह यूनिट पंजाब के बहुत ही उत्तम और आधुनिक ऑर्थोपेडिक सेंटर के नाम से जाना जाता है ।डा अवतार सिंह ने इस बात की जानकारी देते हुए बताया के यह उपराले को जारी रखने का उद्देश्य इंसानियत के नाते समाज के गरीब तबके की मदद करना ,सेवा करना और उन्हें शारीरिक पीड़ाओं से मुक्ति दिलाना है ।

इस अभियान के दौरान पंजाब के 26 आर्थिक रूप से कमजोर और जरूरतमंद लोगों को चुन कर उनके जोड़ बदलने के ऑपरेशन किए जाएँगे ।यह अभियान डा अवतार सिंह के नेतृत्व में अमनदीप अस्पताल और उजाला सिगनस की सांझेदारी में आयोजित किया जाएगा ।डा अवतार सिंह चेयरमैन अमनदीप अस्पताल चीफ ऑर्थोपेडिक सर्जन हैं जो कि पंजाब के सबसे उत्तम जॉइंट सर्जरी के माहिर हैं ।

जोड़ बदलने की सर्जरी मुश्किल जीवन को बदल कर, आसान करने वाली सर्जरी है। यह सर्जरी काफ़ी आर्थिक रूप से कमज़ोर लोगों की पहुँच से बाहर है ।ख़ास तौर पर बुजुर्गों के लिए जो के ज़रूरतमंद है। इसीलिए जोड़ बदलने की सर्जरी उपराले के ज़रिए लोगों को संसार के सबसे उत्तम सर्जरी की देखभाल आधुनिक तकनीक के ज़रिए इंप्लांट करने की सुविधा प्रदान करना है ।इसके साथ साथ सर्जरी के बाद भी लोगों के स्वास्थ्य को बेहतर बनाने की कोशिश होगी ।ख़ुशी की बात है के ये सब मुफ्त में प्रदान किया जाएगा ।

इस तरह के मरीज़ों को एन जी ओ, गुरुद्वारों ,लोकल कम्युनिटी सेंटर और डिस्ट्रिक्ट मेडिकल एसोसिएशन की के माध्यम से पूरण रूप से पारदर्शी तरीक़े से चुनाव किया जाएगा ताकि असली में जिनको इस इलाज की ज़रूरत है उन्हें ही इस तरह की सुविधा मिल सके ।

डा अवतार सिंह का कहना है कि अपने टांगो से और अपने पैरों से चलना आदमी का मौलिक अधिकार है ना कि विशेष अधिकार। इस आयोजन के माध्यम से गरीबों में उम्मीद विश्वास और जीवन के प्रति आज़ादी को बढ़ावा देना है ।

इस मुहिम का मकसद अमनदीप अस्पताल की समाज के प्रति समर्पित भावना प्रेम और नैतिकता को बढ़ावा देना है ।हर सर्जरी की सही जानकारी इन लोगों की कहानियों में उपलब्ध होगी जिससे हमारे प्रति लोगों का विश्वास और बढ़ेगा।

बहुत वर्षों से अमनदीप अस्पताल बहुत अग्रिम पंक्ति में खड़ा जिसमें कटिंग एज तकनीक से इलाज कर रहा है और यह मुहिम समाज को लोगों को आश्वासन और किए हुए वादों को पूरा करने के लिए आने वाले समय में जारी की जाएगी।

यहाँ पर ये बात सराहनीय है कि अस्पताल एक छोटा सा जिसमें पाँच बिस्तरों वाला अस्पताल था उस बी बहुत ही ही उन्नति करते हुए सात सौ पचास बिस्तरों वाले असपताल जिसमें 170 माहिर डॉक्टर जो . दुनिया की सेवा कर रहे हैं ये अस्पताल छे स्थानों पर जिसमें से दो अमृतसर में एक पठानकोट एक फिरोजपुर श्रीनगर और तरनतरण में काम कर रहे है एक अनुमान के अनुसार इस ग्रुप ने तक़रीबन पाँच लाख मरीज़ों को नया जीवन देखकर उनके जीवन को खुशहाल बनाया है।

प्रणव धवन को मिली महत्वपूर्ण जिम्मेदारी, खत्री अरोरा भलाई बोर्ड के सदस्य नियुक्त; सामाजिक प्रगति के लिए काम करने का दिया भरोसा

अमृतसर, 19 जनवरी (साहिल बेरी)

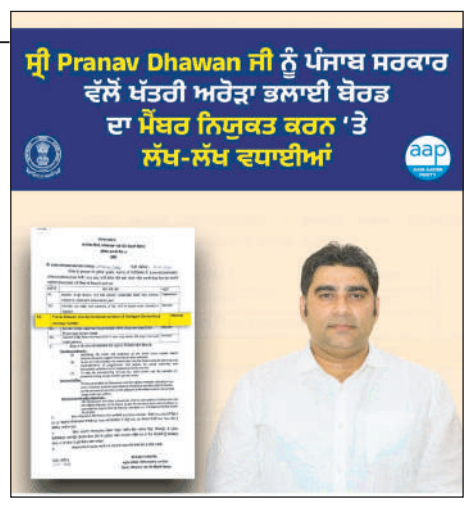

समुदाय की प्रतिनिधित्व को और मजबूत करने के उद्देश्य से एक बड़ा फैसला लेते हुए पंजाब सरकार और आम आदमी पार्टी ने सनातन सेवा समिति पंजाब के माझा जोन इंचार्ज और आम आदमी पार्टी के नेता प्रणव धवन को खत्री अरोरा भलाई बोर्ड का सदस्य नियुक्त किया है। उनकी यह नियुक्ति समाज सेवा के क्षेत्र में किए गए योगदान को ध्यान में रखते हुए की गई है।

इस नई जिम्मेदारी को संभालते हुए श्री प्रणव धवन ने आम आदमी पार्टी की सीनियर लीडरशिप, सनातन सेवा समिति के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री विजय शर्मा जी, सैर-स्पाटा और सभ्याचारिक विभाग के राजनैतिक सलाहकार एवं आम आदमी पार्टी पंजाब के जनरल सेक्रेटरी श्री दीपक बाली जी, अमृतसर उतरी के हल्का इंचार्ज स. करमजीत सिंह रिंटू और आम आदमी पार्टी के सीनियर स्पोक्सपर्सन श्री नील गर्ग जी का धन्यवाद किया। उन्होंने कहा कि उनका मुख्य उद्देश्य समुदाय की मुश्किलों को हल करना और ऐसी भलाई योजनाओं को लागू करना होगा जो सामाजिक और आर्थिक प्रगति में सहायक हों।

प्रणव धवन ने कहा, "मैं इस महत्वपूर्ण भूमिका के लिए मिले सम्मान पर बहुत खुश हूं। मेरा मिशन खत्री और अरोरा समुदाय की भलाई के लिए तनदेही से काम करना है ताकि हर व्यक्ति को बेहतर भविष्य के लिए आवश्यक सुविधाएं और सहायता मिल सके।"

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023